हिंदी पुस्तक-7

(प्रथम भाषा)

(सातवीं कक्षा के लिए)

V3I6W5

ਸਮੱਗਰ ਸਿੱਖਿਆ ਅਭਿਆਨ

ਪੜ੍ਹੋ ਸਾਰੇ ਵਧੋ ਸਾਰੇ

ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਭਲਾਈ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਸਾਂਝਾ ਉਪਰਾਲਾ

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर

© पंजाब सरकार

संस्करण 2022-23
संस्करण 2025-26 .... 3,078 प्रतियां

All rights, including those of translation, reproduction
and annotation etc., are reserved by the
Punjab Government.

संपादक	:	शशि प्रभा जैन
		डॉ॰ सुनील बहल
चित्रकार	:	गुरदीप सिंह दीप

चेतावनी

1. कोई भी एजेंसी-होल्डर अधिक पैसे लेने के उद्देश्य से पाठ्य-पुस्तकों पर जिल्दबंदी नहीं कर सकता। (एजेंसी-होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं. 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों के जाली और नकली प्रकाशन (पाठ्य-पुस्तकों) की छपाई, प्रकाशन, स्टॉक करना, जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अंतर्गत गैरकानूनी जुर्म है।

   (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य-पुस्तकें बोर्ड के 'वॉटर मार्क' वाले कागज़ के ऊपर ही मुद्रित की जाती हैं।)

ਸਮੱਗਰ ਸਿੱਖਿਆ ਅਭਿਆਨ

ਪੜ੍ਹੋ ਸਾਰੇ ਵਧੋ ਸਾਰੇ

ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਭਲਾਈ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਸਾਂਝਾ ਉਪਰਾਲਾ

ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਵਿਕਰੀ ਲਈ ਨਹੀਂ ਹੈ।

सचिव, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन फेज़-8, साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर 160062 द्वारा प्रकाशित तथा मैस: **जैम प्रिंटर्ज़, जालन्धर** द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

गत कुछ वर्षों से राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के ढाँचे में मूलभूत परिवर्तन लाने के विभिन्न प्रयास हो रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के अनुसार बाल-केंद्रित शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। इसी प्रयत्न को आगे बढ़ाते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूल के जीवन को सामाजिक जीवन से जोड़ा जाये। इसके लिए ज़रूरी है कि हम सीखने की प्रक्रिया में बच्चे को भागीदार बनायें, उसकी कल्पनाशीलता को विकसित करें तथा वह सीखे हुए ज्ञान को जीवन से जोड़कर अनुभव करे।

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड ने अपने इस उत्तरदायित्व को समझते हुए आधुनिक शैक्षिक आवश्यकताओं के आधार पर हिंदी की कक्षा पहली से आठवीं तक की नई पाठ्-पुस्तकें लागू की हैं।

हस्तीय पाठ्-पुस्तक हमारा सप्तम् प्रयास है। पाठों का चयन बच्चों के बौद्धिक और मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर किया गया है। प्रत्येक पाठ किसी न किसी मानवीय मूल्य को विकसित करता है। पाठों के विस्तृत अभ्यास बच्चों की कल्पना-शीलता और सोचने-समझने की शक्ति को विकसित करने में सहायक हैं। भाषा का संपूर्ण ज्ञान व्याकरण के बिना अधूरा है। इस पुस्तक में व्याकरण के मूल नियमों को अत्यंत सरल एवं सहज उदाहरणों के द्वारा समझाने का प्रयास किया गया है।

पाठ्-पुस्तक को आकर्षक रूप देने में चित्रकार गुरदीप सिंह दीप ने अपनी कलात्मक सूझ-बूझ का परिचय देते हुए खूबसूरत चित्र तैयार किये हैं जो बच्चों में पुस्तक के प्रति रोचकता बढ़ाने में सहायक होंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

हमें पूर्ण आशा है कि यह पुस्तक भाषा शिक्षा के मापदंडों पर खरी उतरेगी और विद्यार्थियों में मातृभाषा का ज्ञान बढ़ाने में सहायक होगी। फिर भी, पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए क्षेत्र से आए सभी सुझाव बोर्ड द्वारा सादर स्वीकार किये जायेंगे।

चेयरमैन

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

विषय- सूची

पाठ संख्या	पाठ	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	कामना	संकलित	1–3
2.	धूल का फूल	शिव शंकर	4–10
3.	मास्टर ब्लास्टर : सचिन तेंदुलकर	सुधा जैन 'सुदीप'	11–15
4.	कार्निवल का चक्कर	शिव शंकर	16–21
5.	हिमालय	संकलित	22–25
6.	पर्यावरण संरक्षण	डॉ॰ मीनाक्षी वर्मा	26–31
7.	चन्दन के पेड़	'कुछ और कहानियाँ' में से	32–39
8.	मैट्रो रेल का सुहाना सफर	महेश कुमार शर्मा	40–46
9.	पुष्प की अभिलाषा	माखन लाल चतुर्वेदी	47–48
10.	परोपकार	डॉ॰ जुगल किशोर त्रिपाठी	49–53
11.	मातृ-दिवस	डॉ॰ नवरत्न कपूर	54–60
12.	चन्द्रशेखर आज़ाद	डॉ॰ सुनील बहल	61–65
13.	नमन देश के जवानों को	डॉ॰ मीनाक्षी वर्मा	66–69
14.	बुद्धि बल	श्री धर्मपाल शास्त्री	70–74
15.	माँ का लाल	'बच्चों के सौ नाटक' में से	75–83
16.	हुसैनी वाला बार्डर	विनोद शर्मा	84–88
17.	राखी की चुनौती	सुभद्रा कुमारी चौहान	89–92
18.	हिम्मती सुमेरा	मन्नू भण्डारी	93–98
19.	एण्ड्रोक्लीज़ और शेर	संकलित	99–103
20.	श्री गुरु अर्जुन देव जी	डॉ॰ नवरत्न कपूर	104–109
21.	ज़िन्दगी – एक रिक्शा	डॉ॰ राकेश कुमार बब्बर	110–112
22.	हार की जीत	सुदर्शन	113–119
23.	बहू की विदा	विनोद रस्तोगी	120–131
24.	माँ तुलसी मेरे आँगन की	डॉ॰ पुष्पपाल सिंह	132–137
25.	हम पंछी उन्मुक्त गगन के	शिव मंगल सिंह 'सुमन'	138–140
26.	महाराज अग्रसेन–समाज प्रवर्तक	संकलित (मनीष कुमार अग्रवाल)	141–144

पाठ 1

कामना

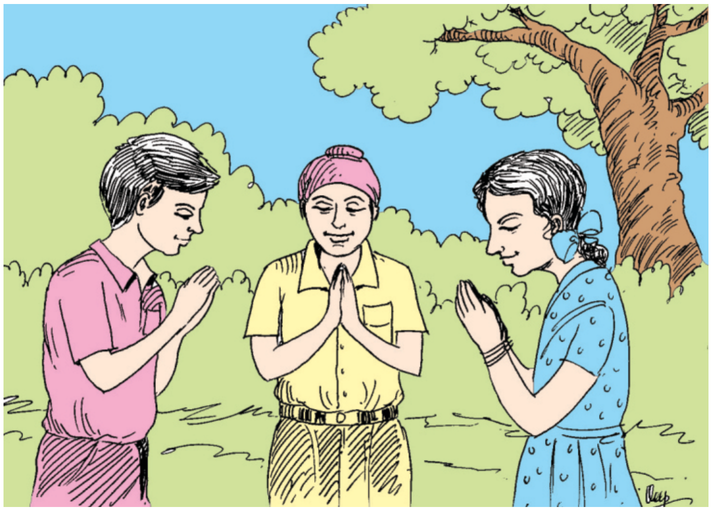

हे करुणामय! करुणा भर दो,
दुखियों का आधार बनूँ।
डूब रही हो जिनकी नौका,
मैं उनकी पतवार बनूँ॥

हे ज्योतिर्मय! ज्ञान ज्योति दो,
गुणी और विद्‌वान बनूँ।
मानवता की सेवा करके,
मैं सच्चा इंसान बनूँ॥

शक्तिमान! दो अमित शक्ति,
मैं दुष्टों का संहार करूँ।
दीन-दु:खी का बनूँ आसरा,
भारत माँ का भार हरूँ॥

गुणागार! सब सद्‌गुण भर दो,
जग में सुखद सुगंध भरूँ।
चिन्ता में घुलते मानव को,
मुक्त और निर्द्‌वंद्‌व करूँ॥

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

1. शब्दार्थ

कामना	=	इच्छा	करुणामय	=	(करुणा+मय) दयालु
आधार	=	सहारा	पतवार	=	चप्पू
ज्योतिर्मय	=	प्रकाशमान	संहार	=	नाश
अमित	=	अत्यधिक	सुखद	=	सुख देने वाली
भार	=	बोझ (कष्ट)	गुणागार	=	(गुण+आगार) सब गुणों वाला
मुक्त	=	आज़ाद	निर्द्वंद्व	=	(द्वंद्व रहित) समरस शांत स्थिति

2. विपरीतार्थक शब्द लिखें:-

आधार = **निराधार**

दु:खी = ____________

गुणी = ____________

मानवता = ____________

सद्गुण = ____________

सुखद = ____________

सुगंध = ____________

मुक्त = ____________

द्वंद्व = ____________

3. पर्यायवाची शब्द लिखें:-

कामना = ____________, ____________

दु:ख = ____________, ____________

नौका = ____________, ____________

ज्योति = ____________, ____________

इंसान = ____________, ____________

माँ = ____________, ____________

4. नये शब्द बनायें :-

करुणा+मय = **करुणामय**

प्रकाश+मय = ____________

ज्योति:+मय = ____________

अंधकार+मय = ____________

दु:ख+मय = ____________

सुख+मय = ____________

पाप+मय = ____________

5. **शुद्ध रूप लिखें :-**

करूणा = ___________

विदवान = ___________

निरदवन्द = ___________

6. **मानव जातिवाचक संज्ञा शब्द है। इसके अन्त में 'ता' लगाने से मानवता भाववाचक संज्ञा शब्द बना।**

इन शब्दो की भाववाचक संज्ञा बनायें :-

वीर	= ___________	दीन	= ___________
सुंदर	= ___________	मित्र	= ___________
दास	= ___________	एक	= ___________
अमर	= ___________	दानव	= ___________

(ख) विचार-बोध

1. **रिक्त स्थानों में समुचित शब्द भरें :-**

(i) दुखियों का ___________ बनूँ । (नेता, बंधु, आधार)

(ii) मैं ___________ इंसान बनूँ । (मज़बूत, सच्चा, ईमानदार)

(iii) जग में ___________ सुगंध भरूँ । (सुखद, भारी, मीठी)

(iv) शक्तिमान ! दो ___________ शक्ति। (बहुल, भारी, अमित)

2. **इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-**

(i) कवि करुणा का वरदान किसलिए माँगता है?

(ii) कवि सच्चा इंसान क्यों बनना चाहता है?

(iii) कवि शक्तिमान बनकर कौन-से तीन काम करना चाहता है?

(iv) कवि सद्गुणों की कामना क्यों करता है?

3. **इन काव्य-पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या करें :-**

(i) हे ज्योतिर्मय ! ज्ञान ज्योति दो,
गुणी और विद्वान बनूँ ।
मानवता की सेवा करके,
मैं सच्चा इंसान बनूँ।

(ii) कवि की कामनाओं को अपने शब्दों में व्यक्त करें ।

(iii) भगवान एक है । कवि ने उसे किन-किन नामों से पुकारा है ?

(ग) आत्म-बोध

(i) नित्य प्रार्थना करें। भगवान से जो भी माँगें, प्राप्त होने पर उस परम सत्ता का धन्यवाद अवश्य करें।

(ii) आप भगवान से क्या माँगेंगे? अपनी कल्पना से लिखें।

पाठ-2

धूल का फूल

सरपट दौड़ती गाड़ी खेत-खलिहानों, हरे-भरे पेड़ों को पीछे छोड़ती हुई आगे बढ़ रही थी। सड़क पर गाड़ी के हिचकोलों से परेशान शरण सोच रहा था कि साहब को क्या हुआ? ऐसे ऊबड़-खाबड़ में कौन-सा ज़रूरी दौरा आन पड़ा था? रास्ता है कि कटने का नाम नहीं लेता। मौन तोड़ते हुए उसने पूछा अभी कितनी दूर है साहब? सड़क का हाल देखो, गाड़ी के अंजर-पंजर ढीले हो जायेंगे। अरे शरण, शुक्र करो अब सड़क तो है, चलते रहो। गुरशरण को कुछ समझ न आया एक्सीलेटर पर दबाव बढ़ा दिया।

आज मन बल्लियों उछल रहा था, उछले भी क्यों न? बरसों बाद आज अपने गाँव, अपनी मिट्टी की ओर जा रहा था जो शहर की चकाचौंध में खो-सा गया था। बीस-पच्चीस साल पहले के दृश्य आँखों के सामने घूम गए। पंच जी का खेत, दीनू ग्वाले की गाय-भैंसें, सब्बू कुम्हार का चाक एक-एक कर सब याद करके मन भाव-विभोर हो रहा था। ज़मींदार जी का खेत जहाँ से कभी गन्ने तोड़ भाग जाया करते थे। वो दूर कोल्हू वाला स्थान, आज सुनसान-सा था। याद आया खेल-खेल में कितने गन्ने कोल्हू में लगा देते, भरपेट गन्ने का रस पीते और गर्म-गर्म गुड़ खाते और कुछ घर ले जाते। कितना ऊधम मचाते थे हम सब। कभी ककड़ियाँ, कभी खरबूज़े, कभी चने वाह क्या दिन थे! रहट का निर्मल पानी वाह!

पिता जी खेतों में काम करते थे। अपनी ज़मीन तो थी नहीं सो दूसरों के खेतों में मज़दूरी करते थे। माँ के साथ जब खेतों में खाना लेकर जाता तो आम की चटनी व प्याज का स्वाद आज भी भुलाए नहीं भूलता। माँ के प्यार भरे हाथों से सजधज कर पाठशाला पहुँचता। पाठशाला में बैठने के लिए टाट तक के लिए छीना झपटी होती पर मास्टर आदित्य की ज्ञान वर्षा से धन्य हो जाता। यहाँ आकर सारी विपन्नता से बेख़बर हो जाता।

विपन्नता, हाँ सच! पिताजी ज़मींदारों की चाकरी करते तो माँ पड़ोस के घरों का चौका-बर्तन। भला हो न साहब का जो एक बार गाँव न जाने किस काम आए और पिताजी को चपरासी की नौकरी दिलवाने को कह शहर ले आए। दादा-दादी ने कितना मना किया था पर पिताजी तंग आ गए थे मज़दूरी करते करते, सो शहर आ गए। कुछ दिनों बाद हमारा पूरा परिवार गाँव से शहर आ गया। साहब ने रहने के लिए एक कमरा दिया था, वही हमारी रसोई, ड्राइंगरूम, डायनिंग, बैड व स्टडी रूम था। पिता जी की आँखों में एक ही सपना था जो हर माँ-बाप का होता है कि उनकी संतान पढ़-लिखकर कुछ बन जाए।

गाड़ी में बैठे अफसरों को देख हमारे मन में भी ख्याल आते एक दिन ज़रूर कुछ बनूँगा। क्यों बनूँगा? कैसे बनूँगा? कौन पढ़ाएगा? आदि सवालों से अनजान। सोचता जब लाल बहादुर शास्त्री, लिंकन, एडीसन जैसे बड़े बन सकते हैं तो मैं क्यों नहीं? पुस्तक में झूठ थोड़े ही लिखा है।

सरकारी स्कूल भी उन दिनों कितनी दूर-दूर थे। प्राइमरी के बाद मैट्रिक के लिए मीलों-मील चलना पड़ता था। अब आमदनी तो इतनी थी नहीं कि साइकिल ही ले लेते। परिवार का गुज़ारा मुश्किल से होता था, तभी तो मैं भी छुट्टियों में छोटा-मोटा आमदनी वाला काम कर लिया करता था। शाम को चटाइयों पर बैठ कर इकट्ठा खाना खाते। पिता जी हम सब को देख खुश होते और कहते,"बेटा! खूब पढ़ो, खूब बढ़ो, हम तो अंगूठा छाप रह गए।" मैं तपाक से कह उठता देखना पिताजी मैं और कृष्णा दीदी खूब पढ़ेंगे और अफसर बनेंगे।

तब सोचता ये डॉक्टर, इंजीनियर,जज, कमीश्नर कैसे बन जाते हैं? सब अफसर कहलाते हैं। इतना विश्वास ज़रूर था कि इन सबकी कुँजी विद्या ही है, विद्या धन मेहनत बिना नहीं मिलता और मेहनत कभी व्यर्थ नहीं जाती। कर्म ही तो पूजा है।

शरण गाड़ी धीरे चलाओ, बरसों बाद गाँव की ओर आया हूँ, अपना गाँव। 'अरे, साहब, गाँव तो हमारा भी है, आप तो जानते ही हो, बच्चे, बूढ़ी माँ और पिताजी के साथ रहते हैं।' 'अच्छा बच्चे तो पढ़ते होंगे।' 'हाँ साहब लड़का जाता है पढ़ने और लड़की? मैंने हैरानी से पूछा। उसका क्या, उसने घर का .... खबरदार मैंने टोकते हुए कहा 'अरे लड़कियाँ ही तो घर का श्रृंगार हैं, परिवार का आधार हैं, अरे विवाह पर चाहे जितना धन दे दो यदि उसकी झोली में विद्या धन नहीं तो सब व्यर्थ। आज लड़कियाँ हर क्षेत्र में अपने आपको बेहतर साबित कर रही हैं। अरे जिस परिवार, देश, समाज में लड़कियों का सम्मान नहीं, वह कैसा समाज!'

शरण ने क्षमा माँगी और गाड़ी चलाता रहा। मैंने सोचा आदमी चाँद पर घूम आया है पर कुछ की सोच अभी भी बाबा आदम के जमाने की है। शरण चुप न रहा, बोल उठा, ''साहब, गरीब पढ़ा-लिख कर बच्चों को बेरोज़गारी की धूल ही फंकवाएगा।'' ''नहीं शरण, अनपढ़ रहकर युवक भटकता है, बुरी संगत में पड़ता है, अंधेरे में खो जाता है और समाज के लिए सिरदर्द बनता है।'' मैंने उसे समझाया।

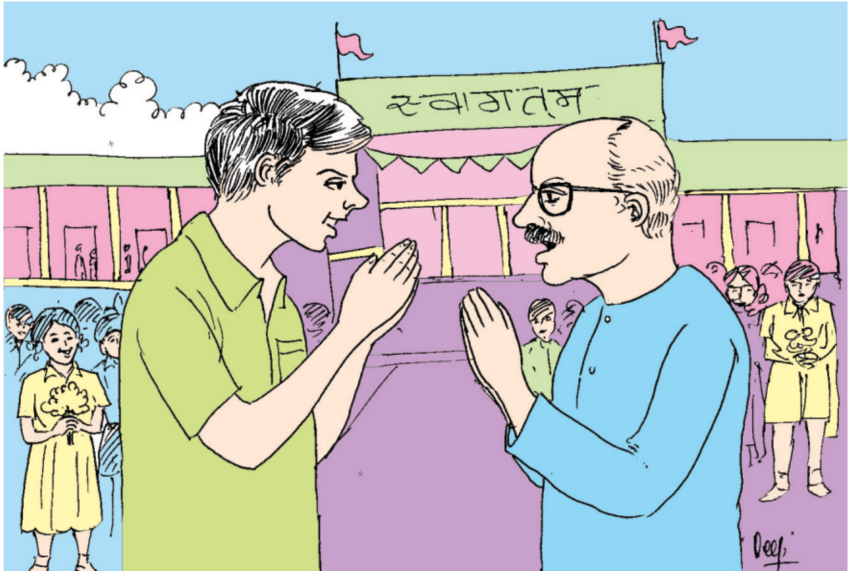

अचानक खिड़की के बाहर ध्यान गया मुटियारों का दल सिर पर बोझ लिए कुछ गुनगुना रहा था। दूर खेतों में कम्बाइन चल रही थी। कुछ स्त्रियाँ व बच्चे हाथ में झोला लिए अनाज की बालियाँ चुन रहे थे। मैं हैरान था, आज़ादी के इतने सालों बाद भी गरीब को अनाज की बालियाँ चुननी पड़ रही हैं जैसे कभी-कभी मैं भी माँ के साथ कटाई के बाद चुनता था। आँखों की कोर से अचानक पानी निकल आया सोचा सरकार की कितनी योजनाएँ हैं उत्थान के लिए, कौन डकार जाता है सब कुछ? मैं भी तो सरकार का एक अंग ही हूँ। सोच ही रहा था कि अचानक सामने एक बूढ़े को हाथ में लाठी लिए देख मैंने पहचानने की कोशिश की। शायद चाचा चरणसिंह थे जो बचपन में हमें बरगद की छाँव में कहानियाँ सुनाया करते थे, राजा-रानी की, जन्नत और परियों की, भूत-प्रेत व डाकुओं की। मैंने शरण को गाड़ी रोकने को कहा। गाड़ी रुक गई। मैं चरणसिंह के सम्मुख खड़ा था। अपनी बूढ़ी आँखों से निहारते चाचा ने पूछा, "बेटा, कहाँ जाना है?" मैंने उनके पैरों को स्पर्श करते हुए कहा, चाचा पहचाना नहीं मैं तुम्हारा प्रशांत। प्रशांत! अच्छा-अच्छा नसीब का पुत्र, अब तो अफसर लगता है, कैसा है नसीब, आज यहाँ कैसे? सब ठीक है चाचाजी, आज गाँव की पाठशाला का दर्ज़ा बढ़ाने का आदेश लेकर आया हूँ। इसी बहाने अपने स्कूल व अपने अध्यापक जी से भी मिलूँगा, गाँव की सैर भी हो गई।

चाचा की आँखों में खुशी के आँसू छलक आए। खुश रहो बेटा, खूब यश प्राप्त करो। तुमने इतना ऊँचा पद प्राप्त कर हमारा, हमारे गाँव का नाम रोशन कर दिया।

विदा ले मैं गाड़ी में बैठा, गाड़ी पाठशाला के द्वार के निकट रुक गई। द्वार पर रंगोली सजी थी, दीपक जल रहे थे। रंग-बिरंगी झंडियों से प्रांगण सजा था। पुष्प-गुच्छ लिए नन्हे-नन्हे हाथ मेरी ओर बढ़ गए। अध्यापक आदित्य प्रकाश, जिनका मैं प्रिय शिष्य था, के पैरों को स्पर्श करने को झुका कि उन्होंने बाँहों में भरकर गले लगा लिया। आज वे फूले नहीं समा रहे थे, समाए भी कैसे! उनका गरीब प्रशांत कलक्टर प्रशांत बन गया था और सरकार की ओर से पाठशाला का दर्ज़ा बढ़ाने की घोषणा करने आया था। स्वागत गीत व बैंड की मधुर ध्वनि से वातावरण गुँजायमान हो रहा था।

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

1. शब्दार्थ

खलिहान	=	कटी हुई फसल को रखने का स्थान
विपन्नता	=	ग़रीबी
अँगूठा छाप	=	अनपढ़, हस्ताक्षर के स्थान पर अँगूठा लगाने वाला
मुटियार	=	नवयुवती
पुष्प गुच्छ	=	फूलों का गुलदस्ता

2. इन मुहावरों के अर्थ लिखते हुए वाक्य प्रयोग करें :-

खुशी के आँसू छलकना __________ ____

मन बल्लियों उछलना	_________	______________________________________
नाम रोशन करना	_________	______________________________________
गले लगाना	_________	______________________________________
फूले न समाना	_________	______________________________________

3. विपरीत शब्द लिखें :-

मौन = __________

ऊबड़-खाबड़ = __________

ज़रूरी = __________

शहर = __________

सुनसान = __________

मज़दूर = __________

आमदन = __________

उत्थान = __________

4. दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखें :-

तरक्की = __________, __________

शिक्षा = __________, __________

अध्यापक = __________, __________

मेहनत = __________, __________

शिष्य = __________, __________

प्रयोगात्मक व्याकरण

5. गुरु की शरण - गुरुशरण

माँ और बाप - माँ-बाप

उपर्युक्त पदों में गुरु की शरण को 'गुरुशरण' तथा माँ और बाप को 'माँ-बाप' रूप में संक्षेप में लिख सकते हैं। इस प्रकार शब्दों के मेल से नए शब्द बन जाते हैं।

अतः परस्पर सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से जब कोई नया सार्थक शब्द बनता है तो उस मेल को समास कहते हैं।

समास करने के बाद जो शब्द बनता है उसे समस्त पद कहते हैं तथा समस्त पद को इसके शब्द खण्डों में अलग अलग करने की विधि को विग्रह कहते हैं। जैसे:-

गुरुशरण (समस्त पद) = गुरु की शरण (विग्रह)

विशेष : समस्त पद के दो पद होते हैं-पूर्व पद और उत्तर पद। पहले पद को पूर्व पद तथा बाद वाले पद को उत्तर पद कहते हैं। जैसे-गुरु (पूर्व पद), शरण (उत्तर पद)

पदों की प्रधानता के आधार पर समास के चार भेद होते हैं:-

(1)	**अव्ययीभाव समास**	**(2)**	**तत्पुरुष समास**
(3)	**द्‌वंद्‌व समास**	**(4)**	**बहुब्रीहि समास**

(क)	**समस्त पद**	**विग्रह**	**जिस अर्थ में अव्यय यहाँ प्रयुक्त हुआ**
(1)	बेरोज़गार	रोज़गार के बिना	'बे' का प्रयोग 'के बिना' अर्थ में हुआ है।
(2)	आजीवन	जीवन तक	'आ' का प्रयोग 'तक' के अर्थ में हुआ है।
(3)	यथानियम	नियम के अनुसार	'यथा' का प्रयोग 'अनुसार' के अर्थ में हुआ है।

यहाँ समस्त पद में 'बे', 'आ' तथा 'यथा' अव्यय हैं तथा इसके मेल से पूर्ण पद ही अव्यय बन गया है।

अतएव जिस समस्त पद में पूर्वपद प्रधान हो और अव्यय हो और समास होने पर पूर्ण पद ही अव्यय बन जाए, वह अव्ययी भाव समास कहलाता है।

अन्य उदाहरण- आमरण-मरने तक, निडर-डर के बिना, भरपेट-पेट भर कर, आजन्म-जन्म भर, प्रति पल- हर पल, बेख़बर-बिना ख़बर के, अनजान-जाने बिना आदि

तत्पुरुष समास को समझने के लिए कारक का ज्ञान अपेक्षित है। अतः पहले कारकों को समझते हैं।

हमें साहब ने रहने के लिए घर दिया।

यदि इस वाक्य को इस ढंग से लिखें-हमें साहब रहने घर दिया तो वाक्य में आए शब्दों का एक दूसरे से संबंध नहीं प्रकट होता और न ही अर्थ स्पष्ट होता है।

इसलिए वाक्य में आए 'ने' 'के' 'लिए' चिह्न वाक्य के अन्य शब्दों का परस्पर सम्बन्ध जोड़ते हैं।

अतएव संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उनका सम्बन्ध क्रिया तथा वाक्य के दूसरे शब्दों में जाना जाए, उसे कारक कहते हैं।

विशेष :- वाक्य में प्रयुक्त के, ने, से, के लिए आदि कारक चिह्नों को परसर्ग भी कहते हैं।

(1) शरण ने क्षमा माँगी।

इस वाक्य में क्षमा माँगने का काम शरण ने किया अर्थात् कर्ता शरण है। अतः 'शरण ने' में कर्ता कारक है।

(2) प्रशांत उच्च पद को प्राप्त हुआ।

इस वाक्य में प्राप्त हुआ क्रिया है, प्रशांत कर्ता है तथा क्रिया का फल पद पर पड़ रहा है। अतः 'पद को' में कर्म कारक है।

अतएव वाक्य में जिस संज्ञा या सर्वनाम पर क्रिया का फल पड़ता है। उसे कर्म कारक कहते हैं।

(3) प्रशांत गाड़ी से गाँव गया।

इस वाक्य में 'गया' क्रिया का साधन गाड़ी है अत: 'गाड़ी से' में करण कारक है

अतएव कर्ता जिस साधन की मदद से क्रिया सम्पन्न करता है, उसे करण कारक कहते हैं।

(4) हम पढ़ने के लिए विद्यालय जाते थे।

इस वाक्य में 'जाना' क्रिया का कार्य पढ़ने के लिए है अत: यहाँ संप्रदान कारक है।

अतएव जिस संज्ञा या सर्वनाम के लिए कुछ किया जाए उसे संप्रदान कारक कहते हैं।

(5) हमारा पूरा परिवार गाँव से शहर आ गया।

इस वाक्य में 'गाँव से' पद से अलग होने का अर्थ स्पष्ट हो रहा है, इसलिए यहाँ अपादान कारक है।

अत: जिस संज्ञा से पृथक्ता अर्थात् अलग होने का भाव प्रकट हो, उसे अपादान कारक कहते हैं।

इसके अतिरिक्त किसी से सीखने, लजाने, डरने, बचाने, तुलना करने, माँगने, निकलने तथा दूरी आदि का भाव दर्शाने में भी अपादान कारक होता है।

(6) नसीब का लड़का कलक्टर बन गया।

इस वाक्य में 'नसीब' का 'लड़का' से पिता-पुत्र का संबंध प्रकट हो रहा है अत: यहाँ संबंध कारक है।

अतएव जहाँ दो संज्ञाओं या सर्वनामों का आपस में संबंध प्रकट हो, वहाँ संबंध कारक होता है।

(7) प्रशांत पहले गाँव में रहता था।

इस वाक्य में 'गाँव में' पद में रहना क्रिया के आधार का पता चलता है, यहाँ अधिकरण कारक है।

अतएव जहाँ संज्ञा या सर्वनाम शब्द के आधार का पता चले उसे अधिकरण कारक कहते हैं।

(8) अरे शरण! गाड़ी जल्दी चलाओ।

इस वाक्य में 'अरे शरण' में संबोधन किया गया है, इसलिए यहाँ संबोधन कारक है।

अतएव संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी को पुकारने, बुलाने, सुनाने या सावधान करने का भाव प्रकट हो, वहाँ संबोधन कारक होता है।

आइए, अब तत्पुरुष समास को समझते हैं।

(ख)	समस्त पद	विग्रह
	पद प्राप्त	पद को प्राप्त

उपर्युक्त समास में समस्त पद बनाते समय पूर्वपद (पद) के साथ आए परसर्ग (को) का लोप हो गया है। इसमें उत्तरपद (प्राप्त) प्रधान है।

अतएव जिस समास में उत्तर पद प्रधान हो उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। इसमें विग्रह से समस्त पद बनाते समय पूर्वपद के साथ आने वाले परसर्ग का लोप हो जाता है।

अन्य उदाहरण

समस्त पद	विग्रह
यशप्राप्त	यश को प्राप्त
भाव विह्वल	भाव से विह्वल
पाठशाला	पढ़ने के लिए शाला
धनहीन	धन से हीन
विद्याभ्यास	विद्या का अभ्यास
सिर दर्द	सिर में दर्द

(ख) विचार-बोध

1. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें:-

(i) प्रशांत का मन बल्लियों क्यों उछल रहा था?

(ii) गाँव की ओर जाते हुए उसे किन-किन लोगों की याद आने लगी?

(iii) उसके अध्यापक का क्या नाम था?

(iv) हर माँ-बाप का क्या सपना होता है?

(v) प्रशांत का क्या सपना था? यह सपना उसने कैसे पूरा किया?

(vi) लड़कियों की शिक्षा के संबंध में उसके क्या विचार थे?

(vii) प्रशांत गाँव में क्यों आया था?

2. इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखें:-

(i) गरीबी में रहते हुए भी प्रशांत ने अपने लक्ष्य को कैसे प्राप्त किया?

(ii) आपका क्या लक्ष्य है? अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आप क्या करेंगे?

3. इस कहानी में कई बिंदुओं को छुआ गया है जैसे:-

. गाँवों से शहर की ओर पलायन

.. ग्रामीण लोगों की दशा/गरीबी/यथास्थिति

... लक्ष्य प्राप्त करना

.... लड़कियों की शिक्षा के प्रति सोच

..... गाँव के प्रति प्यार

...... संबंधों की आत्मीयता

.... अध्यापकों का सम्मान

इन बिंदुओं पर विचार-विमर्श करें।

पाठ-3

मास्टर ब्लास्टर : सचिन तेंदुलकर

'होनहार बिरवान के होत चीकने पात'

यह लोकोक्ति मास्टर ब्लास्टर सचिन तेंदुलकर पर पूरी तरह चरितार्थ होती है क्योंकि अढ़ाई वर्ष का नन्हा सचिन अपनी नानी व बड़े भाई अजित के साथ मुगरी का बल्ला बनाकर प्लास्टिक की गेंद से खेला करता। इसी लगाव को देखकर ही तो उनकी नानी लक्ष्मीबाई गिजे ने उन्हें तीसरे जन्मदिन पर उपहार में गेंद-बल्ला दिया था। तब से तो रोज़ क्रिकेट खेलना उनकी दिनचर्या का अंग बन गया। बचपन से ही ये लक्षण उभरकर सामने आने लगे थे कि बड़े होकर सचिन निश्चित ही महान क्रिकेटर बनेंगे।

सचिन का पूरा नाम सचिन रमेश तेंदुलकर है। माता रजनी तेंदुलकर एवं पिता रमेश तेंदुलकर के घर इनका जन्म 24 अप्रैल 1973 ई0 को राजापुर (मुम्बई) में हुआ। बचपन के ग्यारह वर्षों तक सचिन, उनके भाई अजीत, नितिन व बहन सविता का लालन-पालन उनकी नानी ने किया, क्योंकि उनके माता-पिता दोनों ही कार्यरत हैं। सन् 1995 में इनका विवाह अंजली तेंदुलकर से सम्पंन हुआ। इनकी पुत्री सारा व पुत्र अर्जुन हैं।

क्रिकेट से लगाव, जीवन में बड़ों के प्रति सम्मान, छोटे-बड़ों से अच्छे गुण ग्रहण, मित्रों के प्रति आत्मीयता के संस्कार इन्हें अपनी नानी से ही मिले। इसीलिए सचिन अपनी नानी को क्रिकेट और जीवन गुरु मानते हैं।

शारदाश्रम विद्या मन्दिर (हाई स्कूल) में शिक्षा ग्रहण करने के साथ ही सचिन ने अपने क्रिकेट जीवन का श्री गणेश किया। यह अपने कोच रमाकांत अचरेकर के सान्निध्य में घंटों अभ्यास किया करते। इनकी कार्यकुशलता से वे काफी आश्वस्त थे। तभी तो उनकी बल्लेबाजी पर गर्व करते हुए (अभ्यास के समय) कोच स्टम्प्स पर सिक्का रख दिया करते थे। गेंदबाजों को चुनौती देते हुए कहते, जो सचिन को आऊट करेगा, उसे यह सिक्का मिलेगा और आऊट न होने पर सिक्का सचिन अपने पास रखेगा। इस तरह खेल में बढ़िया प्रदर्शन करके जीते हुए तेरह सिक्के आज भी सचिन को बहुत प्रिय हैं।

सचिन ने अपना पहला प्रथम श्रेणी क्रिकेट मैच मुम्बई के लिए मात्र चौदह वर्ष की आयु में खेला। सन् 1988 में स्कूल स्तर के एक मैच में अपने प्रिय मित्र एवं सह-खिलाड़ी विनोद कांबली के साथ मिलकर ऐतिहासिक 664 दौड़ों की अविजित पारी खेली। इस खेल साँझेदारी के सामने विरोधी टीम ने घुटने टेक दिए और आगे खेलने से इंकार कर दिया।

अपने अन्तर्राष्ट्रीय खेल जीवन का आरंभ 1989 ई0 में पाकिस्तान के खिलाफ कराची में किया। आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक दिवसीय और टैस्ट मैचों में सर्वाधिक दौड़ें एवं सर्वाधिक

शतक बनाने के साथ-साथ अनेक कीर्तिमान अपने नाम कर चुके हैं। मैदान कोई भी हो, मैच कोई भी हो, नए कीर्तिमान बनाना-पुराने कीर्तिमान तोड़ना सचिन की फितरत बन गई है। दिन-प्रतिदिन इन कीर्तिमानों की संख्या बढ़ती जा रही है। सचिन बायें हाथ से लिखने और दायें हाथ से धुआँधार बल्लेबाजी करते हैं। वह बल्लेबाजी में अपनी अनूठी पंच शैली के लिये मशहूर हैं। मैदान में उतरते ही खेल में अनोखा रोमांच पैदा कर देते हैं। चौकों-छक्कों की तो मानो बरसात होने लगती है। इसीलिए इनके प्रशंसकों ने इन्हें मास्टर ब्लास्टर की संज्ञा दी है।

इतना ही नहीं नियमित गेंदबाज न होने के बावजूद भी कई बार विरोधी टीम की देर से टिकी जोड़ी को तोड़ने के लिए गेंद सचिन को थमा दी जाती है। वे 'ऑफ़् स्पिन' और 'लेग स्पिन' के साथ यदा-कदा गुगली का सही सम्मिश्रण कर बल्लेबाजों को पवेलियन लौटाने में सफल हुए हैं। ऐसी कई विकट परिस्थितियों में उन्होंने भारत के लिए अनेक बार विजय-द्वार खोले हैं।

सचिन के क्रिकेट में आने से पहले उम्र को तंदरुस्ती का सबसे महत्वपूर्ण अंग माना जाता था किन्तु 38 वर्षीय सचिन ने बल्ले से उम्र को मात दी है। वह अपना आदर्श अपने देश के सैनिकों को मानते हैं। उनके शब्दों में, 'मैंने अपने सैनिक भाइयों से अपनी ज़िम्मेदारी समझना और अंत तक संघर्ष करना सीखा है।''

साहस, सूझबूझ, धैर्य एवं विवेक का पालन करने वाले सचिन खेल में कुशलता के साथ-साथ अपने इन गुणों के कारण सबको अपना कायल बना लेते हैं। अहंकार तो इन्हें कभी छू तक नहीं पाया। जब कभी भी आलोचकों को ऐसा लगा कि सचिन मात्र कीर्तिमानों के लिए खेलते हैं तो सचिन ने धैर्य एवं विवेक से काम लिया। इसका जवाब मौन रहकर खेल में संयमपूर्वक अच्छा प्रदर्शन करके दिया। जिससे सभी आलोचकों के मुँह स्वयं ही बन्द हो गए। यह सचिन के व्यक्तित्व का सर्वोत्तम गुण रहा है। क्रिकेट के अलावा सचिन प्रतिवर्ष एक गैरसरकारी संगठन 'अपनालय' के 200 बच्चों के पालन-पोषण की ज़िम्मेदारी भी निभा रहे हैं। वह एक सफल रेस्टोरेंट के मालिक भी हैं।

विश्व में भारत का नाम रोशन करने वाले क्रिकेट के आदर्श खिलाड़ी सचिन हम सबके लिए प्रेरणास्रोत हैं क्योंकि उन्होंने क्रिकेट विश्वकप-2011 जीतने का लक्ष्य निश्चित किया। अपने साथियों को भी इसके विषय में बताया। सबने मिलकर तन-मन एवं समर्पण भाव से इसके लिए परिश्रम एवं प्रयास किया। सचिन 2 अप्रैल, 2011 में अपना लक्ष्य विश्वकप-2011 प्राप्त करने में सफल हो गए।

इन्हें अपने इक्कीस वर्ष के सराहनीय खेल प्रदर्शनों के लिए कई बार सम्मानित किया गया। 1994 में इन्हें 'अर्जुन पुरस्कार', क्रिकेट जगत से मात्र इन्हें ही 'राजीव गाँधी खेल रत्न पुरस्कार'

दिया गया। सन् 1999 ई0 में 'पद्म श्री' और सन् 2008 में इन्हें 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया गया।

अभ्यास

(क) भाषा बोध

1. शब्दार्थ

दिनचर्या	=	दैनिक कार्य
सम्मानित	=	सम्मान को प्राप्त
चुनौती	=	ललकार
कायल	=	निरुत्तर कर देना
मुगरी	=	थापी (लकड़ी की बनी बल्लानुमा)
लक्ष्य	=	उद्देश्य
अढ़ाई	=	दो वर्ष छः माह
सम्पंन	=	भली-भाँति, युक्त
सर्वोत्तम	=	सबसे उत्तम
आश्वस्त	=	विश्वासशील, सांत्वित
खिलाफ	=	विरोध
लक्षण	=	आसार
कार्यरत	=	काम में लीन
फितरत	=	स्वभाव

2. लोकोक्ति एवं मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य बनायें :-

होनहार बिरवान के होत
चीकने पात ________ ____________________________________

श्री गणेश करना ________ ____________________________________

घुटने टेकना ________ ____________________________________

मुँह बंद होना ________ ____________________________________

3. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त हुए अंकों के स्थान पर शब्द लिखें :

(i) सचिन का जन्म 24 अप्रैल 1973 ई॰ (चौबीस अप्रैल उन्नीस सौ तिहतर ईस्वी॰) को राजापुर (मुम्बई) में हुआ।

(ii) बचपन के 11 ---------(शब्दों में) वर्षों तक सचिन, उनके भाई अजीत, नितिन व बहन सविता का लालन-पालन उनकी नानी ने किया।

(iii) सन् 1988 ---------(शब्दों में) स्कूल स्तर के मैच में सचिन ने विनोद काम्बली के साथ मिलकर 664 ---------(शब्दों में) दौड़ें बनायीं।

(iv) सन् 1995 ---------(शब्दों में) में इनका विवाह अंजली से हुआ।

(v) 38 ---------(शब्दों में) वर्षीय सचिन ने अपने बल्ले से उम्र को मात दी है।

(vi) सन् 1994 ---------(शब्दों में) में इन्हें अर्जुन पुरस्कार, सन् 1999 ---------। (शब्दों में) पद्मश्री तथा सन् 2008 ---------(शब्दों में) इन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया।

(ख) विचार-बोध

1. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(i) सचिन तेंदुलकर की नानी का क्या नाम था?

(ii) सचिन तेंदुलकर के माता-पिता का क्या नाम है?

(iii) कितने वर्ष की आयु में इन्होंने क्रिकेट जीवन का आरंभ किया?

(iv) अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट जीवन की शुरूआत कब और कहाँ से की?

(v) सचिन की शादी कब और किससे हुई?

(vi) सचिन किस हाथ से लिखते और किस हाथ से खेलते हैं?

(vii) सचिन के व्यक्तित्व पर कौन-सी उक्ति पूरी तरह सार्थक होती है?

(viii) सचिन अपना आदर्श किसे मानते हैं?

(ix) अपना जीवन लक्ष्य तय करने के बाद हमें क्या करना चाहिए?

2. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(i) सचिन अपना जीवन गुरु किसे मानते हैं और क्यों?

(ii) सचिन तेंदुलकर के कोच का क्या नाम है और वे क्या चुनौती दिया करते थे?

(iii) सचिन को जीवन में आज भी क्या बहुत प्रिय है?

(iv) सचिन का सर्वोत्तम गुण कौन-सा है, विस्तार से बतायें?

(v) सचिन के जीवन से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

(vi) सचिन ने सैनिक के जीवन से क्या शिक्षा ली है?

(vii) सचिन को कौन-कौन से पुरस्कार मिले और कब?

(viii) क्रिकेट के अलावा सचिन और क्या-क्या कार्य करते हैं?

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो:-

(i) सचिन का पूरा नाम .... है।

(ii) इनका जन्म................. को .... में हुआ।

(iii) इनकी पुत्री.................व पुत्र..................है।

(iv) सचिन ने...................... से उम्र को मात दी है।

(v) .... तो इन्हें कभी दूर तक नहीं पाया।

(vi) सचिन ....में अपना लक्ष्य................ प्राप्त करने में सफल हो गए।

(vii) सन् 1999 में ....और सन् 2008 में इन्हें.........से सम्मानित किया गया।

(ग) कुछ करो

(i) महान क्रिकेट खिलाड़ियों के चित्र एकत्रित कर अपनी कॉपी पर चिपकाएँ।

(ii) अपनी कक्षा को दो टीमों में बाँट कर खेलों की घंटी में क्रिकेट मैच खेलें।

(iii) स्कूल के पी०टी०आई० या डी०पी०ई० अध्यापकों से क्रिकेट की तकनीकी जानकारी प्राप्त करें।

(iv) क्रिकेट की गेंद व बल्ला कॉपी/चार्ट पर बनाकर मनपसंद रंग भरें फिर कक्षा में टाँगें।

(v) आप जीवन में क्या बनना चाहते हैं, अपना लक्ष्य अपने अभिभावकों एवं अध्यापकों की मदद से निर्धारित करें और अभी से उसमें लग जाएँ।

(घ) रचना-बोध

'मेरे जीवन का लक्ष्य' पर दस वाक्य लिखें।

पाठ-4

कार्निवल का चक्कर

हमने अभी नाश्ते से निपट कर अखबार से आँख मिलाई ही थी कि अचानक सर पर किसी के कोमल हाथों के कूल-कूल आक्रमण से हम चौंके। पत्नी श्री बोली, ''ऐ जी चौंकते काहे को हो जी, यह नवरत्न स्पर्श है।'' हमने कहा,''नवरत्न हो या नवग्रह, हमें क्या हम चंगे भले हैं।'' ''ऐ जी बिगड़ते क्यों हो, कल आपका आखिरी अवकाश है, बच्चे घर बैठे-बैठे उकता गए हैं, चलो, कार्निवल घूम आयें।'' हम चौंके आखिरी...... तो क्या परसों हम न रहेंगे, न भी रहें तो तुम्हें कौन-सा किसी के आगे हाथ पसारना है। हमने बहुत बीमा योजनाएँ करा रखी हैं, रातों रात में करोड़ पत्नी बनोगी।'' ''ए जी, लानत भेजो ऐसे ख्याल पर, बच्चे कार्निवल जाने की जिद्द कर रहे हैं, घुमा लाओ न।'' इस स्नेह बाण का कोई तोड़ हमारे पास न था, सो बातों में आ गए। अरे, आजकल के ज़माने में दाल रोटी चलाना मुश्किल हो रहा है, ये घूमेंगे कार्निवल ! पर पता नहीं हमारी अकल कहाँ घास चरने चली गई, आव देखा न ताव झट से 'हाँ' कह गए। कहें भी क्यों न ? पगार मिले अभी दो-चार दिन ही हुए थे, दूधवाला आया नहीं, तरकारी वाला गाँव गया था, नौकरानी रिश्तेदारी में, धोबी दस तक आता था और चौकीदार पंद्रह के बाद, सो अभी हम खासे अमीर थे। अब जेब गर्म थी दिमाग नर्म था सोचा, चलो घूम ही आते हैं, वैसे शादी के बाद कार्निवल घूमना टेढ़ी खीर हो गया था। खैर पुरानी यादों को पुनर्जीवित करते हुए हमने स्कूटर को हिलाया, पेट्रोल छलका, हमारी तो बाँछें खिल गईं। पेट्रोल न हो कोई खज़ाना हो। खैर, हमने गद्दी पर हाथ मारना ही चाहा कि चुन्नू-मुन्नू कपड़ा लेकर चहक पड़े, हमने बड़ी हैरानी से देखा। अरे इस्कूल जाने के समय तो हम गला फाड़-फाड़ कर चिल्लाते हैं, किसी के कान में जूँ नहीं रेंगती, आज!

चुन्नू ने चहकते हुए कहा, बाबूजी, हम आइसक्रीम खायेंगे, मुन्नू बोला गोलगप्पे, श्रीमती जी क्यों पीछे रहती, ऐ जी हम तो टिक्की........। फरमाइशों की झड़ी को विराम देते हुए हमने कहा, अरे चलो तो सही, क्या याद करोगे किस रईस से पाला......

हमने चेतक (स्कूटर) को एड़ी (किक) लगाई पर क्या मजाल कुंभकर्णी नींद से जागे, कई महीनों से सर्विस जो नहीं करवाई थी। पड़ोसी मिश्रा जी के छाती पर साँप लोटे बिना न रह सका बोले, मास्टर जी कभी सर्विस-वर्विस करवा लिया करो। हमने जैसे आँख तरेरी बेचारे दुम दबा कर घर में घुस गए। अब हम कैसे चुप रहते, जानते हो इस कंपनी का जहाज़ भी टेढ़ा किये बिना नहीं चलता। फिर यह तो स्कूटर है। खैर हमने मुन्नू से कहा बेटा जरा धक्का लगाओ, मुन्नू ने धक्का लगाया हम बैठ गए अपने चेतक पर, महाराणा प्रताप की तरह। स्कूटर घिघियाया सबके चेहरों पर चमक आ गई । हमने दो को आगे, एक को श्रीमती की बगल में बैठने का आदेश देते हुए कहा, जल्दी से बैठ जाओ वरना यहीं छोड़ जायेंगे, 70 रुपए लीटर है पैट्रोल। बीवी हाँफते-हाँफते आई और अपनी काया को स्कूटर के हवाले कर दिया, हमने बजरंगबली का नाम लिया और हवा से बातें करने लगे।

पवन वेग उड़ता स्कूटर अचानक मरुस्थल का जहाज़ बन गया। हमारे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। कलयुग में यह चमत्कार हम सोच ही रहे थे कि अचानक सड़क पर बदरंग खाईनुमा पैबंद देख कर हमारे हाथ-पाँव फूल गए पर अपना चेतक पलक झपकते हल्दी घाटी पार कर गया। हम बाल-बाल बचे।

हम कार्निवल पहुँचे। हम स्कूटर को स्टैंड पर लगाकर द्वार की ओर बढ़ना ही चाह रहे थे कि पीछे से आवाज़ आई- ''साहब पर्ची?'' हमने कहा, ''काहे की!'' बोला, ''स्कूटर की खिदमतगारी की।'' हमने कहा, ''यह क्या घोड़ा है जो लीद करेगा और तुम साफ करोगे!'' अजी, साहब क्या सुबह-सुबह...दस रुपए निकालिए। झख मारकर हमने दस रुपए का बलिदान कर दिया कि अचानक हमें गर्मी छूटने लगी, पसीने से तरबतर देख श्रीमती जी बोलीं ''क्या हुआ?'' कुछ नहीं हमने कहा। दरअसल हमारे नयन प्रवेश शुल्क पर अटक गए थे जिस पर लिखा हुआ था 20 रुपए प्रति व्यक्ति। अब सौ रुपए का खून होते देख हमने खून का घूँट पिया।

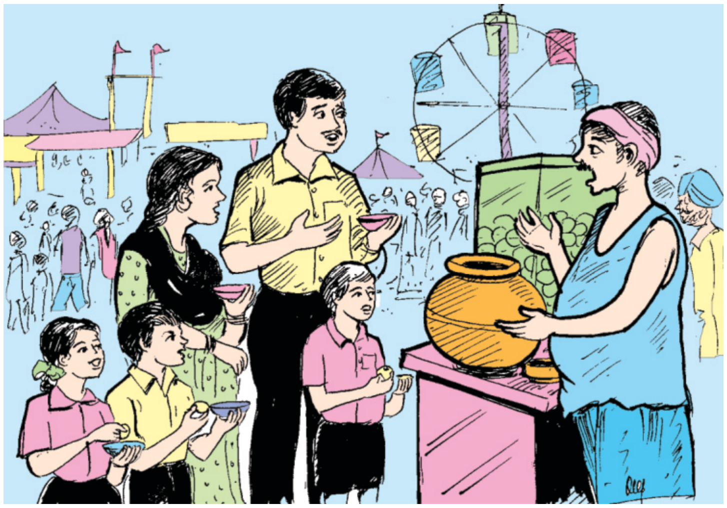

भीतर घुसते ही मुन्नू चहका ''बाबू जी! बर्गर-गोलगप्पा।' हमने फटकार कर कहा "अबे चुप्प!'' "ए जी! बिगड़ते काहे हो?'' श्रीमती जी ने कंधे पर हाथ रखते हुए कहा। अब हम चित्त थे। सड़ी-सी बनियान पहने गोलगप्पे वाला तोंदूमल तोंद की मिट्टी मल रहा था। विराम दिलाते हुए हमने कहा, ''ए भाई, ज़रा गोलगप्पे खिला दे बच्चों को।'' गंदे से कपड़े से हाथ पोंछते उसके हाथ गोताखोर की तरह खट्टे-मिट्ठे पानी में डाइव करने लगे। तल से गोलगप्पों में पानी भर-भर हमारी प्लेटों पर पटकने लगा। अभी तीन-तीन ही खाए थे कि अचानक मुँह से निकला, ''कै कै पैसे के हैं गोलगप्पे?'' साहब पाँच रुपए की एक...आ..आत्छी, अचानक मधुर जल उदर की बजाय श्वास नली की ओर सरक गया। आधा मुँह में, आधा हलक में, मुँह से निकली अचानक सतरंगी स्वाद की पिचकारी नुमा फुहार से सामने के लाला-ललाइन बाल-बाल बचे। हमने आग बबूला होते हुए कहा, ''क्यों बे, क्या मिला रखा है इसमें, रहने दे रहने दे अरे स्वाद के लिए जान थोड़े ही देनी है।'' कितने पैसे हुए?'' ''साहब पिचहत्तर'' वह बोला। ''पिचहत्तर.... अभी सैंपल भरवाता हूँ.... चक्की पिसवाता हूँ'' कहते हुए हमने पचास का नोट उसकी ओर फैंका और आगे बढ़ गए। श्रीमती

जी बोलीं, अजी क्या हुआ स्वादिष्ट तो थे! ''स्वादिष्ट हाँ, अभी विधवा हो जाती तो स्वाद लगाकर रोती रहती।'' हमारी डाँट से वह चुप हो गई। पर चुन्नू चहक उठा, 'डैड्डी जी झूला।' झूला देखते ही हम अतीत में खो गए। श्रीमती जी ने बोलीं, ''याद आया। जब हम नए नए आए थे, झूला झूलने!'' हाँ..हाँ.. कहते हुए हम अकड़ते हुए झूले वाले के पास गए और रौब से बोले, पाँच टिकट दे दे। झूले वाले ने हमें गौर से देखा और बोला, ''लगते तो पढ़े लिखे हो... लाओ चार सौ रुपए!'' च.चा..र..सौ, चार सौ..हम धम्म से नीचे गिरे, हमारे चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं, सर चक्कर गिन्नी काटने लगा। कुछ सज्जन लोग जुट गए। कोई कहता दौरा पड़ा है, कोई कहता मिर्गी लगती है, चप्पल-जूता सुँघाओ... कोई कहे हृदयाघात लगता है। हम कुछ न बोले बस काँपते हाथों से एक ओर इशारा किया। समझदार लगते थे, बच्चों के पास पटककर कन्नी काट गए।

श्रीमती जी बोलीं, ''अजी क्या हुआ?'' हम हल्के से बोले, ''भीड़ में दम घुटता है, हवा में चलो।'' सब अपना-सा मुँह लेकर रह गए। हम मन ही मन खुश थे, सबका उड़न खटोला दिल में ही क्रैश (दुर्घटनाग्रस्त) हो गया।

कुछ संभले तो बिटिया बोली, ''पापा कोल्ड ड्रिंक पीते हैं, सचिन वाला...।'' हम आग बबूला हो उठे बोले, ''अरे क्या तुम्हें नहीं पता कोल्ड ड्रिंक खतरनाक है, पर हो न सब चिकने घड़े, कान पर जूँ नहीं रेंगती। तनिक स्वाद के लिए परिवार की जान का जोखिम..., न बाबा...न। सब अपना-सा मुँह लेकर रह गए। हम बोले घर जाकर नींबू-पानी पियेंगे, वह बोला, पापा नींबू पानी।

हम विस्फारित नेत्रों से लोगों को धन बलि चढ़ाते देख रहे थे कि श्रीमती जी बोलीं, ''ऐ जी, टिक्की खाते हैं। नयी-नयी शादी पर आए थे, कचौड़ीमल की टिक्कियाँ खायी थीं।'' चोट निशाने पर लगा, हम यूनिवर्सिटी के स्टूडेंट सेंटर में फिसल गए कुछ यादें हरी हो उठी थीं। तपाक से कह गए पाँच प्लेट टिक्कियाँ लगा दे भाई।'' चम्मच प्लेट के साथ पुरानी गुदगुदाहट लहलहा उठी। बच्चे मैदान साफ कर चुके थे, हमने चम्मच में लगी चटनी चाटते-चाटते पूछा कै पैसे भाई?'' केवल दो सौ पचास।'' चम्मच फिसल गया, बच्चे का पैर घायल होते-होते बचा। 'केवल दो सौ पचास'... यह केवल शब्द ज़रूरी है दो सौ पचास नहीं कह सकते। बच्चे हैरान थे यह हमें क्या हो जाता है? पर हम, हम थे, आसमान से गिरे खजूर में अटके।

डेड्डीपी, डेड्डी पी.. हमारी पतलून खींचते मुन्नू बोला चुप्प....चुप्प घर चलो, बादाम नींबू का शीतल पेय पीयेंगे। कहते हमने जान छुड़ाई।

सिर पर पैर धर, हम स्कूटर की ओर भागे, पीछे-पीछे श्रीमती जी बच्चों को घसीटते हुए। हमने पाँच-सात ताबड़तोड़ किक्कें चेतक पर जमाईं, स्कूटर चिंघाड़ा। जल्दी-जल्दी सबको बैठाते हुए, हम दुम दबा कर भागे, जैसे कार्निवल कहीं नियम तोड़ने पर ट्रैफिक पुलिस की तरह हूटर बजाता पीछा न कर ले।

धूल उड़ाती बदरंग सड़क पर बच्चे कैमल राइडिंग का मज़ा ले रहे थे। हम नई ऊहापोह में फँस गए, नींबू दो सौ रुपए किलो..., बादाम पाँच सौ रुपए बच्चों से वादा भी नाहक कर लिया। इसी उधेड़बुन में हमारा चेतक कब घर के आगे ठहर गया, हमें पता ही न लगा।

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

1. शब्दार्थ

विष बेल	=	ज़हरीली बेल
कार्निवल	=	मेला
माल	=	बड़े-बड़े शोरूम जहाँ पर कई दुकानें होती हैं
नामाकूल	=	बेवकूफ
नवरत्न	=	नौ रत्नों के मिश्रण से बनी धातु
नौ ग्रह	=	सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, शुक्र, बृहस्पति, शनि, राहू, केतु
तोड़	=	इलाज, बचाव
पगार	=	वेतन
तरकारी	=	सब्ज़ी
पुनर्जीवित	=	दोबारा जीवित करना
एड़ी लगाना	=	घोड़े को चलाने की क्रिया
हृदयाघात	=	खून का दौरा बन्द होना
मरुस्थल का जहाज	=	ऊँट
हल्दी घाटी	=	महाराणा प्रताप का प्रसिद्ध युद्ध स्थल
शुल्क	=	फीस, कर
गोताखोर	=	पानी में डुबकी लगाने वाला
डाइव करना	=	पानी के भीतर कूदना
सैम्पल भरवाना	=	नमूना भरवाना
उड़न खटोला	=	हवाई जहाज जैसा यान
क्रैश	=	दुर्घटनाग्रस्त
पेय	=	पीने योग्य
हूटर	=	चेतावनी सूचक ध्वनि यंत्र
कैमल राइडिंग	=	ऊँट की सवारी
ऊहापोह	=	दुविधा
उधेड़बुन में पड़ना	=	सोच में पड़ना

2. लिंग बदलो

लाला = **ललाइन**

बाबू = __________ नाई = __________

पंडित = __________ चौधरी = __________

गुरु = ______ माली = ______

धोबी = ______ सुनार = ______

ग्वाला = ______ नौकर = ______

3. इन शब्दों के विपरीत अर्थ वाले शब्द लिखें :-

विदेशी = ______ विद्वान = ______

महंगा = ______ स्वाद = ______

प्रवेश = ______ नई = ______

4. इन शब्दों के शुद्ध रूप लिखें:-

इस्कूटर = ______ सन्नाटा = ______

पटरोल = ______ कारनीवल = ______

विसफारित = ______ जूनिवरसिटी = ______

कमकपी = ______ टिककीयाँ = ______

बुद्दी = ______

5. इन शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखें:-

पगार = ______, ______

आसमान = ______, ______

आग = ______, ______

पवन = ______, ______

घोड़ा = ______, ______

6. निम्नलिखित मुहावरों/लोकोक्तियों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग करें :-

उकता जाना ______ ______________________

हाथ पसारना ______ ______________________

अक्ल घास चरने जाना ______ ______________________

टेढ़ी खीर होना ______ ______________________

कान पर जूँ न रेंगना ______ ______________________

आँखें तरेरना ______ ______________________

दुम दुबा कर भागना ______ ______________________

हवा से बातें करना ______ ______________________

चेहरे पर चमक आना ______ ______________________

(ख) विचार-बोध

1. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें:-

(i) लेखक बच्चों को कहाँ घुमाने ले गए?

(ii) लेखक ने अपने आप को अमीर क्यों समझा?

(iii) कार्निवल घूमना टेढ़ी खीर क्यों था?

(iv) बच्चों ने अपने पिता के आगे क्या-क्या फरमाइशें रखीं?

(v) गोलगप्पे खाते हुए लेखक का श्वास क्या सुनकर अटक गया?

(vi) टिक्की खाते हुए लेखक को कहाँ की याद आ गई?

2. इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखें :-

(i) झूले वाली घटना को अपने शब्दों में लिखें।

(ii) इस पाठ में लेखक ने महंगाई पर व्यंग्य के बाण छोड़े हैं। कोई एक उदाहरण लिखें।

(iii) क्या आप कहीं घूमने गए हैं? यदि हाँ, तो अपने शब्दों में लिखें कि वहाँ आपने क्या-क्या देखा? क्या खाया? क्या आनंद लिया?

(ग) रचना-बोध

(i) नगरपालिका/नगर निगम/पंचायत के प्रधान को अपने गाँव/शहर की सड़कों की स्थिति बताते हुए उनकी मुरम्मत करवाने के लिए पत्र लिखें।

(ii) 'बढ़ती हुई महंगाई' विषय पर अपने विचार लिखें।

पाठ-5

हिमालय

खड़ा हिमालय बता रहा है,
डरो न आँधी पानी से,
खड़े रहो तुम अविचल होकर,
सब संकट तूफानों में।

डिगो न अपने प्रण से, तो तुम,
सब कुछ पा सकते हो प्यारे।
तुम भी ऊँचे उठ सकते हो,
छू सकते हो नभ के तारे।

अचल रहा जो अपने पथ पर,
लाख मुसीबत आने में,
मिली सफलता जग में उसको,
जीने में मर जाने में।

अभ्यास

(क) भाषा बोध

1. **शब्दार्थ**

अविचल	=	जो विचलित न हो, दृढ, स्थिर	संकट	=	मुसीबत
प्रण	=	प्रतिज्ञा, वचन	अचल	=	अडिग, स्थिर
पथ	=	रास्ता, मार्ग	जग	=	संसार

2. **हिमालय शब्द हिम+आलय शब्दों से मिलकर बना है इसी प्रकार अन्य शब्द बनायें:-**

हिम+आलय = हिमालय

पुस्तक+आलय = ________

चिकित्सा+आलय = ________

भोजन+आलय = ________

देव+आलय = ________

3. 'अचल' शब्द 'चल' शब्द से पूर्व 'अ' जुड़ने से बना है इसी प्रकार 'अ' लगाकर नए विपरीत शब्द बनायें :-

अ+चल = **अचल**

अ+सफलता = ________

अ+शुद्ध = ________

अ+________ = ________

4. इन शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखें:-

पानी = **सलिल, वारि**

नभ = ________, ________

प्रण = ________, ________

पथ = ________, ________

जग = ________, ________

मुसीबत = ________, ________

5. प्रयोगात्मक व्याकरण

हिम+आलय = हिमालय

अ+ आ=आ

उपर्युक्त उदाहरण में 'हिम' 'के' 'म' 'में' 'अ' 'तथा' 'आलय' के शुरू में 'आ' स्वर है। इस प्रकार अ+आ के मेल से एक नई ध्वनि 'आ' बनने से शब्द बना-हिमालय। **वर्णों के ऐसे मेल को संधि कहते हैं।**

संधि विच्छेद

संधि	**संधि विच्छेद**
योगाभ्यास	योग+अभ्यास

अतः विच्छेद का अर्थ है अलग करना। संधि के नियमों द्वारा मिले हुए वर्णों को पुनः पूर्व अवस्था में ले जाने को संधि विच्छेद कहते हैं।

संधि के भेद

(1) विद्या+आलय - विद्यालय

आ + आ - आ

उपर्युक्त उदाहरण में 'विद्या' में अंत में 'आ' स्वर है तथा पर अर्थात बाद के शब्द 'आलय' के शुरू में 'आ' स्वर है। इन दोनों स्वरों (आ+आ) के मेल से 'आ' होने पर शब्द बना-विद्यालय।

अतः स्वर के बाद स्वर के मेल से जो परिवर्तन आता है, उसे स्वर संधि कहते हैं।

(2)	**संधिविच्छेद**	**-**	**संधि**	**विशेष**
	जगत्+नाथ	-	जगन्नाथ	त् को न्
	जगत्+ईश	-	जगदीश	त् को द् (द् + ई = दी)

पहले उदाहरण में व्यंजन 'त्' के बाद 'न' होने से 'त्' को 'न' हो गया तथा दूसरे उदाहरण में 'त्' के बाद स्वर में ई होने से त् को 'द्' हो गया (और बाद में द्+ई–दी) है। **अतः व्यंजन वर्ण के बाद किसी स्वर या व्यंजन के आ जाने पर उसमें जो परिवर्तन आता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं।**

(3)	**संधिविच्छेद**	**-**	**संधि**	**विशेष**
	नमः+ते	-	नमस्ते	विसर्ग के बाद त होने से विसर्ग को स् हो गया।
	निः+आधार	-	निराधार	विसर्ग से पूर्व इ स्वर होने तथा परे आ से विसर्ग को र् हो गया तथा बाद वाला स्वर (आ) र् में मिलकर 'रा' बन गया।

अतः विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन होने पर जो विकार सहित मेल होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

	संधिविच्छेद	**-**	**संधि**	**विशेष**
(क)	देव + आलय	-	देवालय	अ+आ=आ
	सती + ईश	-	सतीश	ई+ई=ई
	गुरु + उपदेश	-	गुरूपदेश	उ+उ=ऊ

अतः जब ह्रस्व या दीर्घ 'अ', 'इ' और 'उ' के बाद ह्रस्व या दीर्घ अ, इ,उ आएँ तो दोनों के मेल से क्रमशः इनका दीर्घ रूप 'आ', 'ई', और 'ऊ' हो जाता है। इसे दीर्घ संधि कहते हैं।

इसी प्रकार नीचे लिखे पदों की संधि करें–

अति+इव – ________

परि+ईक्षा – ________

नारी+इच्छा – ________

दया+आनन्द – ________

विद्या+अर्थी – ________

सिंधु+ऊर्मि – ________

वधू+उत्सव – ________

(ख) विचार बोध

1. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(i) हिमालय पर्वत भारत की किस दिशा में स्थित है?

(ii) संकटों के समय हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए?

(iii) हम सब कुछ कैसे पा सकते हैं?

(iv) संसार में सफलता कैसे लोगों को मिलती है?

2. **इन काव्य-पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या करें :-**

(i) तुम भी ऊँचे उठ सकते हो,

छू सकते हो नभ के तारे।

(ii) हिमालय से हम कौन-कौन से गुण सीख सकते हैं?

(iii) हिमालय पर्वत से हमारे देश को कौन-कौन से लाभ हैं?

(ग) कुछ करो

(i) अपने भूगोल वाले अध्यापक की सहायता से भारत में स्थित अन्य पर्वतों तथा उनकी स्थिति के बारे में पता करें।

(ii) भारत में हिमालय पर्वत की सबसे ऊँची चोटी का नाम पता करें।

(iii) हिमालय पर्वत से निकलने वाली नदियों के नाम पता करें।

पाठ-6

पर्यावरण संरक्षण

अध्यापिका : बच्चो, क्या मनुष्य हवा चला सकता है?

सभी विद्यार्थी : नहीं मैडम.....

अध्यापिका : क्या मनुष्य नदियाँ, पहाड़ व नीला आकाश बना सकता है?

सभी विद्यार्थी : नहीं मैडम.....

अध्यापिका : क्या मनुष्य किसी पशु-पक्षी का सृजन कर सकता है?

सभी विद्यार्थी : नहीं मैडम.....

अध्यापिका : नहीं न... तो फिर उसे इनके विनाश का हक किसने दिया? प्रकृति हमें जीवन देती है लेकिन हम प्रकृति को क्या देते हैं? कम से कम हम पर्यावरण का संरक्षण तो कर ही सकते हैं। जैसा कि पर्यावरण का सीधा संबंध प्रकृति से है। परिवेश में पाए जाने वाले जीव-जंतु, पेड़-पौधे, भूमि, जल तथा वायु-सभी पर्यावरण की रचना करते हैं किन्तु मानव प्रकृति पर विजय पाने की दौड़ में पर्यावरण को अत्यधिक नष्ट व प्रदूषित कर रहा है।

विदुषी : मैडम, मनुष्य पर्यावरण को किस प्रकार नष्ट कर रहा है?

अध्यापिका : बच्चो, महात्मा गाँधी जी ने कहा है, "पृथ्वी के पास मानव की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए काफी कुछ है लेकिन लोभ को पूरा करने के लिए नहीं।" मनुष्य अपने लालच के लिए नगर बसाने, कारखाने लगाने तथा ईंधन के लिए हरे-भरे पेड़ों को, वनों को तेजी से काट रहा है। अपने लिए शुद्ध वायु तथा ऑक्सीजन कम कर रहा है।

मीताली : मैडम, मैंने कहीं पढ़ा था कि एक पत्ता ही अपने जीवन-काल में इतनी ऑक्सीजन उत्पादित करता है कि उससे एक आदमी चार दिन तक साँस ले सकता है।

अध्यापिका : लेकिन... मीताली, साधारण मनुष्य इसे कहाँ समझता है? वह तो वृक्षों को काटने और वनों को उजाड़ने के दुष्परिणामों के बारे में भी नहीं सोचता........ कि इससे अन्य प्रकार की आपदाएँ भी हमारे सामने आती रहती हैं जैसे:- उचित समय पर वर्षा का न होना, रेगिस्तान के प्रभाव का बढ़ना, प्रलयकारी बाढ़ का आना।

तन्मय : मैडम, इन सबका पेड़ों के काटने से क्या संबंध है?

अध्यापिका : बच्चो, आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि ऊँचे-ऊँचे वृक्षों की शाखाओं

और हरी-भरी पत्तियों में बादलों को खींचने की अद्भुत शक्ति होती है। जिन स्थानों पर ऊँचे-ऊँचे पेड़ों का अभाव होता है वहाँ पानी कम बरसता है या बिल्कुल नहीं बरसता। दूसरी ओर वृक्ष अपनी जड़ों से भूमि को दृढ़ता के साथ जकड़े रहते हैं। इस जकड़ाव के कारण ही भूमि का कटाव नहीं हो पाता। वृक्षों के अभाव से भूमि का कटाव सरलता से हो जाता है।

ज्योत्सना : मैडम, वनों के काटने से वन्य जीव-जंतुओं तथा पक्षियों पर भी तो प्रभाव पड़ता होगा?

अध्यापिका : हाँ, बिल्कुल पड़ता है। वनों की कटाई से वनों में रहने वाले तरह-तरह के जीव-जंतु तथा पक्षी विलुप्त हो रहे हैं।

शाश्वत : मैडम, क्या भूमि, जल तथा वायु का प्रदूषित होना भी पर्यावरण प्रदूषण है?

अध्यापिका : देखो शाश्वत, वातावरण में उत्पन्न होने वाली गंदगी ही पर्यावरण प्रदूषण है, चाहे वह भूमि की हो या जल या वायु की हो।

मीताली : मैडम, टी.वी. में कल एक कार्यक्रम दिखाया जा रहा था कि मनुष्य अधिक अन्न उत्पादन के लिए फसलों में रासायनिक खादों और कीटनाशकों का असंतुलित प्रयोग करके भूमि की सतह को प्रदूषित कर रहा है। इसके दुष्परिणाम-भूमि पर उत्पन्न होने वाले अन्न, फल तथा सब्ज़ियों द्वारा विषैले रसायन हमारे शरीर में पहुँच कर अनेक प्रकार की बीमारियाँ पैदा कर रहे हैं।

अध्यापिका : हाँ-हाँ मीताली, मैंने भी कल यह कार्यक्रम देखा था। बहुत ही अच्छा था। इसी प्रकार दूषित जल के उपयोग से भी लोगों में मलेरिया, पेचिश, पीलिया आदि गंभीर बीमारियाँ पैदा हो रही हैं। कारखानों में उपयोग के बाद बाहर आने वाला दूषित पानी नदियों के स्वच्छ पानी को विषाक्त बना रहा है। घर का

कूड़ा-कर्कट, नदियों, झीलों तथा तालाबों में मिलकर पानी को प्रदूषित करता है। दूसरी ओर गंदी वायु द्वारा मनुष्य अनेक प्रकार की साँस की बीमारियों का शिकार हो रहा है। कारखानों, मोटरों-बसों का धुआँ वायुमंडल को विषैला बनाकर, पर्यावरण को प्रदूषित कर रहा है।

विदुषी : मैडम, क्या पॉलीथीन तथा प्लास्टिक भी पर्यावरण प्रदूषण का कारण है?

अध्यापिका : हाँ, बिल्कुल... कागज़ जैसे पदार्थ पानी, हवा और सूर्य प्रकाश से भुरभुरा कर मिट्टी में घुल-मिल जाते हैं किन्तु पॉलीथीन तथा प्लास्टिक ऐसे रासायनिक पदार्थ हैं कि जो सड़-गल कर नष्ट नहीं होते और जलाने पर ज़हरीली गैस छोड़ते हैं जो पर्यावरण को दूषित करती है। इसी तरह बच्चो, पर्यावरण को बिगाड़ने में मनुष्य ही पूर्णतः जिम्मेदार है, पर पर्यावरण के संरक्षण में हम सब अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। हरी-भरी धरा, भरपूर पानी तथा शुद्ध हवा पा सकते हैं। इसके लिए आपको कुछ बातों का पालन करने का मुझे वचन देना होगा।

सभी विद्यार्थी : हम आपको वचन देते हैं कि....

अध्यापिका : तो ठीक है....

- सबसे पहले आप अपने घर, स्कूल या पार्क में एक पौधा रोपें और उसे पेड़ बनने तक पल्लवित करें क्योंकि पेड़-पौधे ही तो प्रकृति के फेफड़े होते हैं।
- घर का कूड़ा-कर्कट आँगन या नाली में न फेंक कर कूड़ेदान में डालें।
- बगीचे में रासायनिक खाद या कीटनाशकों का उपयोग न करें।
- पॉलीथीन का उपयोग न कर; पेपर, जूट या कपड़े के थैले का उपयोग करें।
- पानी की बूँद-बूँद बचायें। ब्रश करते समय नल खुला न छोड़ें।
- कमरे में टी.वी., पंखा, ट्यूब बंद करके बाहर जाएँ, बिजली बचायें। शायद आप नहीं जानते कि विद्युत-उत्पादन में कितना पर्यावरण प्रदूषण होता है।
- कम दूरी के लिए वाहन का उपयोग न करें। इससे ईंधन की बचत और प्रदूषण कम होता है।
- पुरानी कॉपी के बचे साफ़ पन्ने उपयोग में लायें क्योंकि पन्नों को बनाने में बहुत पेड़ काटे जाते हैं।
- वन महोत्सव मनायें और दूसरों को इसका लाभ बताकर पेड़ लगाने के लिए उत्साहित करें।

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

1. शब्दार्थ

आपदा	=	मुसीबत
प्रदूषण	=	दोष युक्त बनाना
विलुप्त	=	नष्ट
विषाक्त	=	विष मिश्रित
पल्लवित	=	विकसित, लहलहाता हुआ
कीटनाशक	=	कीटाणुओं को नष्ट करने वाली दवा

2. अर्थ समझते हुए वाक्य बनायें :-

पर्यावरण ________ ____________________________________
प्रदूषण ________ ____________________________________
संरक्षण ________ ____________________________________
रासायनिक ________ ____________________________________
उत्साहित ________ ____________________________________

3. 'अ' और 'अन्' लगाकर विपरीतार्थक शब्द बनायें:-

अ+संतुलित = ____________
अ+शुद्ध = ____________
अ+सुरक्षा = ____________
अ+साधारण = ____________
अ+भाव = ____________
अन्+उचित = ____________
अन्+आदर = ____________
अन्+उपयोग = ____________
अन्+आदि = ____________
अन्+आवश्यक = ____________

4. पर्यायवाची शब्द लिखें:-

नदी = ____________, ____________
हवा = ____________, ____________
जल = ____________, ____________
पहाड़ = ____________, ____________
पृथ्वी = ____________, ____________
मनुष्य = ____________, ____________

प्रयोगात्मक व्याकरण

5. (क)

अति + अधिक	=	अत्यधिक
इ + अ	=	य (इ को य्+अ–य)
परि + आवरण	=	पर्यावरण
इ + आ	=	या (अ को य्+आ – या)
प्रति + एक	=	प्रत्येक
इ + ए	=	ये (इ को य्+ए – ये)
सु + अच्छ	=	स्वच्छ
उ + अ	=	व (उ को व्+अ – व)

अत: इ, ई, उ, ऊ के बाद यदि कोई स्वर आ जाए तो इ, ई को य , उ, ऊ को व हो जाता है। यह यण् संधि स्वर संधि का तीसरा भेद है।

नीचे लिखे शब्दों की संधि करें:-

अति+आचार = ____________

सु+आगत = ____________

यदि+अपि = ____________

इति+आदि = ____________

(ख) दु:परिणाम = दुष्परिणाम

उपर्युक्त उदाहरण में विसर्ग से परे 'प' होने से विसर्ग को 'ष' हो गया। यह विसर्ग संधि का उदाहरण है।

अन्य उदाहरण

नि:+कपट	=	निष्कपट
दु:+फल	=	दुष्फल
नि:+फल	=	निष्फल
धनु+टंकार	=	धनुष्टंकार

अर्थात् विसर्ग से पहले इ या उ स्वर हो और बाद में क, ख, ट, प, फ हों तो विसर्ग को ष हो जाता है।

(ख) विचार-बोध

1. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :

(i) प्रकृति ने हमें क्या-क्या प्रदान किया है?

(ii) पर्यावरण से आप क्या समझते हैं?

(iii) वनों की कटाई किसलिए की जा रही है?

(iv) एक पत्ता पूरे जीवन में कितनी ऑक्सीजन उत्पन्न करता है?

(v) वृक्षों की जड़ें भूमि का कटाव रोकने में किस प्रकार सहायक हैं?

(vi) किसानों के द्वारा रासायनिक खादों और कीटनाशकों का क्या दुष्प्रभाव होता है?

(vii) वायु प्रदूषण कैसे हो रहा है?

(viii) जल कैसे प्रदूषित हो रहा है?

2. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें:-

(i) पर्यावरण को दूषित होने से बचाने के लिए आप क्या सहयोग दे सकते हैं?

(ii) प्लास्टिक का प्रयोग किस प्रकार हानिकारक सिद्ध हो रहा है?

(ग) रचना बोध

* आपके स्कूल में वन-महोत्सव कैसे मनाते हैं?

5 जून को 'विश्व पर्यावरण दिवस' मनाया जाता है।

पाठ-7

चन्दन के पेड़

मेरे माता-पिता और मैं पूर्वी घाट में करीमुनाई गाँव के निकट रहते थे। पिता पहाड़ी की ढलान पर सीढ़ीनुमा ज़मीन पर खेती करते और माँ बकरियों की देखभाल करती। मैं उन दोनों की मदद करती और गाँव के स्कूल में पढ़ने भी जाती। गुगु कुत्ता मेरा साथी था। हम दोनों को पहाड़ी की ढलान पर ऊपर-नीचे दौड़ना बहुत अच्छा लगता था।

जिस दिन मैं तेरह वर्ष की हुई उसी दिन एक बड़ी दुर्घटना हो गई। सूरज निकल चुका था। मेरे माता-पिता और मैंने एक धीमी गड़गड़ाहट सुनी। बकरियाँ और गुगु परेशान दिख रहे थे। मिनटों में ही एक जोर का धमाका हुआ और मेरे सिर पर एक पत्थर आ लगा।

मैं मुड़ी, मेरे सिर में बहुत दर्द हो रहा था।

''अम्मा, तुम कहाँ हो?'', मैंने पुकारा। लेकिन पहाड़ी से फिसलते, लुढ़कते पत्थरों के शोर में मेरी आवाज़ दब गई। मुझे ऐसा लगा कि मेरी माँ ने मेरा नाम लेकर पुकारा, सुन--न्--दा। मैंने भागना चाहा लेकिन हिल भी न सकी। मैं उस डरावने भूस्खलन को देखती ही रह गई। अचानक कोई नुकीली चीज़ मेरी आँखों पर आ लगी। डगमगा कर मैं वहीं गिर पड़ी। उसके बाद क्या हुआ मुझे कुछ पता नहीं। जब मुझे रावगुरु के घर में होश आया और आँखें खोलीं तो चारों ओर अंधकार ही लगा। मैं अपनी आँखें खो बैठी थी। सिसकियों से मेरी देह काँप उठी। गुगु उस समय भी मेरे हाथ को चाटता हुआ पास ही खड़ा था।

रावगुरु गाँव के स्कूल के प्रधानाचार्य थे। वह मुझे अपने घर ले आए थे। मेरे माता-पिता और बकरियाँ उस भयानक भूस्खलन का ग्रास बन गए थे, लेकिन गुगु और मैं चमत्कारिक ढंग से बच गए थे। ये सब रावगुरु ने हमें बताया था।

उन्होंने और उनकी पत्नी ने, जिसे मैं मामी कहती थी, मेरे साथ बड़ा अच्छा व्यवहार किया। लेकिन मुझे अपने माता-पिता और घर की बहुत याद आती। लेकिन सबसे अधिक भयानक था मेरे चारों ओर का अंधकार। मुझे ऐसे लगता था मैं बहुत अंधेरे और गहरे गड्ढे में गिर रही हूँ, गिरती जा रही हूँ।

मैं बड़ी कोशिश करके अपनी सिसकियाँ दबाती। गुगु जैसे मुझे हर समय सांत्वना देता। वह अक्सर मेरे साथ सट कर बैठा रहता। मैं उसे थपथपाती, प्यार करती और उससे सारी बातें करती।

रावगुरु मुझे स्कूल वापस भेजना चाहते थे, लेकिन मैंने जाने से इंकार कर दिया। मैं दूसरी लड़कियों से इतनी निम्न हो गई हूँ, कि सब मेरा मज़ाक उड़ायेंगे और मैं रोने लगी। रावगुरु बहुत अनिच्छा-पूर्वक इस बात पर सहमत हो गए कि मैं घर पर ही रहूँ।

अब तक मैं अपनी अंधेरी दुनिया की आदी होती जा रही थी। मैं बहुत-सा समय मामी के साथ बिताती। उनका मेरे प्रति व्यवहार बहुत स्नेहमय था। मैंने देवी-देवताओं के लिए फूलों की

माला पिरोना सीखा। जब मामी पूजा के लिए अन्य चीज़ें तैयार करती तो मैं माला पिरो देती। शाम का समय रावगुरु मेरे साथ बिताते। हम घंटों बैठे अनेक विषयों पर बातें करते।

भूस्खलन की घटना बार-बार मन में उमड़ती-घुमड़ती रहती। एक दिन मैंने उनसे पूछ ही लिया,''मामा, ये भूस्खलन की घटनाएँ क्यों होती हैं?''

उन्होंने समझाया,''आदमी बिना सोचे समझे ही प्रकृति का अतिक्रमण करता जा रहा है।वह पेड़ों को काटता ही जा रहा है। पेड़ पहाड़ की मिट्टी को बाँध कर रखने का कार्य करते हैं। उनके बिना धरती के भीतर की हलचल से चट्टानें और मिट्टी नीचे फिसलने लगती है-इसी को भूस्खलन कहते हैं।''

''यह पेड़ों को पहाड़ों से काटते ही जाना.... ''

''हाँ ! कई कामों के लिए पेड़ काटे जाते हैं। कारखाने लगाने के लिए भी काटे जाते हैं। यह कानूनी है लेकिन पेड़ अवैध तरीके से भी काटे जाते हैं।''

''तो अंधाधुंध पेड़ काटने ने ही मुझे मेरी अम्मा से अलग कर दिया।''

धीरे-धीरे जैसे-जैसे दिन गुजरते गए। मेरा आत्मविश्वास लौटता गया। अब मैं स्पर्श द्वारा बहुत कुछ महसूस कर सकती थी। मैं नाक द्वारा गंध लेकर बहुत सारी बातें समझने लगी थी। मेरी श्रवण शक्ति बहुत तेज़ हो गई थी। अब मैं दोपहर के समय गुगु के साथ घूमने के लिए निकल जाती।

आसपास की पहाड़ियों से मैं अच्छी तरह से परिचित थी। छायादार पेड़ों का एक झुरमुट मुझे बहुत पसंद था। वहाँ मैं एक पेड़ के तने का सहारा लेकर बैठ जाती और गुगु भी मेरे निकट बैठ जाता। पेड़ पर बैठी एक कोयल मेरा स्वागत करती। उसकी साफ आवाज़ आ...कू का मैं उत्तर देती तो वह और ऊँचे स्वर में पुकारती।

एक दिन जब मैं अपने बैठने के स्थान पर पहुँची तो हवा का एक झोंका जिसकी गंध से मैं परिचित थी मुझे छू गया। आज मेरा पक्षी मित्र भी चुप था। उसने अपनी आवाज़ कू....कू से मेरा स्वागत नहीं किया। मैंने कू...कू पुकारा तो उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

मेरा कुतूहल जाग उठा और मैं बैठकर सोचने लगी। जब मैंने पेड़ के सहारे टिकना चाहा तो पता चला कि वहाँ से पेड़ ही गायब है। पेड़ के स्थान पर एक ठूँठ खड़ा था। मैंने झुक कर ठूँठ को सूँघा। मैं सोचने लगी यह तो चंदन की लकड़ी है। अब एक पत्थर उठा कर मैंने ठूँठ के भीतरी भाग को रगड़ा। उसमें से भी चंदन की सुगंध आने लगी। मैंने इधर-उधर चलकर तीन अन्य ठूँठों का पता लगाया। मैं सोचने लगी, इन चंदन के पेड़ों को किसने काटा और क्यों?

पेड़ काटे जाते हैं, मुझे रावगुरु के कहे शब्द याद आ गए और मैंने उसे स्वयं ही दोहराया।

भौं....भौ...भौं।

''आओ गुगु, घर चलें,'' मैंने उससे कहा और हम जल्दी-जल्दी घर की ओर चल पड़े। घर

में प्रवेश करते ही मैंने रावगुरु से कहा, ''मामा किसी ने उस तरफ कुछ चंदन के पेड़ काट लिए हैं। आपके ख्याल में किसने काटे होंगे?''

''सुनंदा, इस बारे में मुझे कुछ पता नहीं। मैं मुदालियर से पता लगाता हूँ,'' रावगुरु ने चलते-चलते कहा।

मुदालियर गाँव की पुलिस चौकी का हैड-कांस्टेबल था।

अगले दिन गुगु के साथ घूमने-फिरने के पश्चात मैंने रावगुरु को उस दिन की ताज़ा ख़बर दी। चंदन के कुछ और पेड़ काट लिए गए हैं।

लेकिन रावगुरु ने जोर देकर कहा, ''सुनंदा, मैंने मुदालियर से पूछा था। वह कहता है कि इस क्षेत्र के चंदन के पेड़ बिल्कुल सुरक्षित हैं। यहाँ तो कोई उनकी टहनी भी नहीं तोड़ सकता।''

मगर मामी ने मेरा पक्ष लेते हुए कहा, ''लेकिन यह सब सुनंदा की कल्पना तो नहीं हो सकती।''

वास्तव में, रावगुरु कहते रहे, यह सुन कर मुदालियर काफी परेशान हुआ और मुझसे कहा सुनंदा से कहो कि वह ऐसी अफवाएँ न फैलाये।

''तेरह वर्ष की एक अंधी लड़की की बात भला कौन मानेगा,'' मैंने धीरे से कहा।

''आओ सुनंदा, परेशान मत हो,'' मामी ने मेरे कंधे पर अपने हाथ टिका दिए और सांत्वना दी।

लेकिन मुझे पूरा विश्वास था कि कीमती चंदन की लकड़ी चोरी की जा रही थी।

अगले दिन सुबह सवेरे ही मैं और गुगु चंदन क्षेत्र की ओर चल पड़े। गुगु को मैंने आज नेतृत्व सौंप दिया और वह मुझे आगे-आगे घसीटने लगा। चंदन क्षेत्र में पहुँच कर हमें खोजने पर एक झाड़ी के पीछे अच्छी तरह से छिप कर बैठने का स्थान मिल गया। हम बहुत देर तक अधीरता से न जाने किसका इंतज़ार कर रहे थे। मुझे तो झपकी भी आने लगी थी तभी गुगु गुर्रा उठा। मैं तुरंत सतर्क हो गई। अगले क्षण गुगु कूद कर आगे बढ़ गया और भौंकने लगा। मैं झाड़ियों के पीछे साँस रोके प्रतीक्षा कर रही थी। पैरों की आहट अब निकट आ रही थी। जैसे ही कोई नज़दीक आया, गुगु ने भौंकना बंद कर दिया।

किसी ने गुगु से पूछा, ''अरे! तुम यहाँ क्या कर रहे हो? मेरी तरह क्या तुम भी गश्त कर रहे हो?''

मैंने मुदालियर की आवाज़ पहचान ली। मैंने अनुमान लगाया कि उसने मुझे नहीं देखा था। जब उसके कदम इतनी दूर चले गए कि उनकी आहट आनी बन्द हो गई तो मैंने चैन की साँस ली। बाकी सारा दिन कुछ नहीं हुआ और मैं घर लौट आई।

अगली रात मैं घड़ी में ग्यारह बजने का इंतज़ार कर रही थी। रावगुरु और उनकी पत्नी ने खर्राटे भरने शुरू कर दिए तो मैं गुगु को साथ ले दबे पाँव घर से निकल पड़ी।

चंदन के पेड़ों के पास पहुँचने से पहले ही मैंने धीमी किर्र-किर्र की आवाज़ सुनी। गुगु परेशान होकर गुर्राने लगा। ''श..श। अरे शोर मत करो,'' मैंने धीमी आवाज़ में गुगु से कहा और कस कर उसे पकड़ लिया।

हम आगे बढ़ते रहे और आवाज़ें तेज़ होती गईं। मुझे ख्याल आया, यदि यहाँ गड़बड़ घोटाला हुआ तो इस स्थान पर खूब प्रकाश होना चाहिए। आदमी अंधेरे में तो काम कर नहीं सकते। तब तो वे मुझे ज़रूर देख लेंगे। मैंने गुगु को रास्ते की तरफ धकेल दिया, फिर उसका पट्टा पकड़ कर झुकती हुई बढ़ने लगी। मेरे कान एकाग्र होकर सब तरह की आवाज़ों को सुन रहे थे।

किर्र-किर्र का स्वर बराबर आ रहा था और अब वाहनों के इधर-उधर आने की आवाज़ भी यदाकदा सुनाई दे रही थी। काफी देर तक इसी तरह चलता रहा, फिर किर्र-किर्र की आवाज़ें थम गईं। अब मैं आदमियों का स्वर सुन सकती थी।

''रमेश, आज के लिए इतना ही काफी है। रात के दो बज रहे हैं और हाँ, इस चंदन की लकड़ी को बेचकर जितना कमाओगे उसका दस प्रतिशत मेरा होगा। यदि मेरा हिस्सा नहीं दोगे तो उच्च पदाधिकारियों को सतर्क कर दिया जाएगा और तुम जीवनभर के लिए जेल के सींखचों के पीछे सड़ते रहोगे।''

एक क्षण के लिए मैं धक्-सी रह गई। जो आवाज़ मैं सुन रही थी वह तो मुदालियर की थी। मैं साँस रोके और गुगु का पट्टा पकड़े खड़ी रही।

ज़रूर दूँगा, जनाब, एक अन्य स्वर ने कहा। फिर सब कुछ शांत हो गया। मेरा हृदय इंजन की तरह धक-धक कर रहा था मैं गुगु को पट्टे से खींचती हुई सीधे घर की ओर लपकी। बिस्तर में घुस तो गई लेकिन नींद जरा भी नहीं आई। मुदालियर का स्वर बार-बार मेरे कानों में गूँजने लगा।

सुबह रावगुरु के जागने पर मैंने उन्हें सब कुछ बता दिया।

''सुनंदा, क्या तुम ठीक कह रही हो?'' रावगुरु ने मुझसे पूछा।'' एकदम मामा।

''तब तो मुझे उटकमंड में पुलिस मुख्यालय में बात करनी होगी,'' रावगुरु ने निश्चित स्वर में कहा।

मामी ने मेरा सिर थपथपाकर कहा, ''बड़ी बहादुर लड़की है।''

कुछ दिनों बाद रावगुरु के साथ मुझे भी पुलिस मुख्यालय में बुलाया गया। वहाँ मुझसे कई प्रश्न पूछे गए और जो कुछ मैंने रावगुरु को बताया था उसकी पुष्टि कर ली गई। घर जाते हुए मैंने रावगुरु से पूछा कि ''अब मुदालियर का क्या होगा?''

यदि उसके विरुद्ध काफी प्रमाण मिल गए तो उसे गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

एक महीने पश्चात एक सुबह रावगुरु ने मेरे हाथ को अपने हाथ में लेकर प्यार से कहा "सुनंदा, चंदन की लकड़ी की चोरी का भंडाफोड़ करने के लिए पुलिस विभाग ने तुम्हें इनाम दिया है।"

मैंने उनका हाथ पकड़ कर चूम लिया।

"यह तो बड़ी अच्छी बात है," मामी ने कहा, "आज तो मैं देवी लक्ष्मी को खीर का भोग लगाऊँगी।"

"आगे सुनो, मैंने सुनंदा को राष्ट्रीय अंध विद्यालय में भरती करवाने का निश्चय किया है। सुनंदा, वहाँ तुम कुछ अपने फायदे के काम सीख सकोगी। मैं तुम्हारे इनाम का रुपया बैंक में डाल दूँगा। इस तरह से तुम अपना जीवन फिर से आरंभ कर सकोगी।" मैं रावगुरु का धन्यवाद करना चाहती थी। मगर मुँह से शब्द ही नहीं निकल रहे थे।

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

1. शब्दार्थ

भूस्खलन	–	मिट्टी और पत्थर के बड़े-बड़े ढेरों का खिसककर नीचे गिरना
अतिक्रमण	–	मर्यादा का उल्लंघन
देह	–	शरीर
सांत्वना	–	तसल्ली, ढाढ़स बँधाना
प्रमाण	–	सबूत
गिरफ्तार	–	कैद करना
प्रधानाचार्य	–	प्रिंसिपल, स्कूल का मुखिया

2. इन शब्दों और मुहावरों के अर्थ लिखते हुए वाक्य बनायें :-

अतिक्रमण __________ ____

गिरफ्तार __________ ____

अवैध __________ ____

चैन की साँस लेना__________ ____

भंडाफोड़ करना __________ ____

प्रधानाचार्य __________ ____

(ख) विचार-बोध

1. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें:-

(क) सुनंदा कहाँ रहती थी?

(ख) सुनंदा का साथी कौन था?

(ग) सुनंदा के माता-पिता किस प्राकृतिक आपदा का ग्रास बन गए थे?

(घ) रावगुरु कौन थे?

(ङ) भू-स्खलन किसे कहते हैं?

(च) मुदालियर कौन था?

(छ) मुदालियर ने रमेश को क्या कहा?

(ज) सुनंदा को इनाम क्यों दिया गया?

(झ) रावगुरु ने सुनंदा को राष्ट्रीय अंध विद्यालय में भरती करवाने का निश्चय क्यों किया ?

2. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें:-

(क) पेड़ों की अवैध कटाई से आप क्या समझते हैं?

(ख) सुनंदा को कैसे पता चला कि ये पेड़ चंदन के हैं?

(ग सुनंदा ने चंदन की लकड़ी के तस्करो को कैसे पकड़वाया?

(घ) यदि आपको किसी ऐसी अवैध घटना का पता चले तो आप क्या करोगे?

3. बहुवचन रूप लिखें :-

बकरी = ____________

सिसकी = ____________

पहाड़ी = ____________

लड़की = ____________

लकड़ी = ____________

झपकी = ____________

4. विलोम शब्द लिखें :-

अनिच्छा = ____________

निम्न = ____________

पहाड़ी = ____________

अंधकार = ____________

5. 'ता' लगाकर भाववाचक संज्ञा बनायें :-

अधीर + ता = ____________

सतर्क + ता = ____________

एकाग्र + ता = ____________

6. (i) **संधि** | **संधिविच्छेद**

संधि	संधिविच्छेद
दुर्घटना	दु:+घटना

उपर्युक्त उदाहरण में 'उ' के बाद विसर्ग है तथा बाद में कवर्ग का चौथा वर्ग है, इसलिए विसर्ग को 'र्' हो गया।

अन्य उदाहरण

नि: + मल	=	निर्मल	नि: + धन	=	निर्धन
दु: + जन	=	दुर्जन	आशी:+ वाद	=	आशीर्वाद

अतएव विसर्ग से पूर्व अ, आ को छोड़कर यदि कोई दूसरा स्वर हो तो परे वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण हो या य, र, ल, व, ह में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग को र् हो जाता है।

(ii)

समस्त पद	विग्रह
माता–पिता	माता और पिता

उपर्युक्त समस्त पद बनाते समय 'और' योजक का लोप हो गया है तथा उसकी जगह योजक चिह्न (–) लग गया है, इसमें दोनों पद प्रधान होते हैं।

अतएव जिस समास में दोनों पद प्रधान हों, उसे द्वंद्व समास कहते हैं।

अन्य उदाहरण

समस्त पद	विग्रह
देवी–देवता	देवी और देवता
मामा–मामी	मामा और मामी
अंधेरा–उजाला	अंधेरा और उजाला
ऊपर–नीचे	ऊपर और नीचे

निम्नलिखित शब्दों में संधि करें:-

(1) प्रधान+आचार्य – __________

(2) वि+अवहार – __________

(3) प्रति+ईक्षा – __________

(4) पद+अधिकारी – __________

(5) मुख्य+आलय – __________

(6) सु+आगत – __________

(iii)

शब्दांश	+	मूल शब्द	(अर्थ)	= नवीन शब्द (अर्थ)
अ	+	वैध	(विधि के अनुकूल)	= अवैध (विधि के प्रतिकूल)
अनु	+	मान	(परिमाण)	= अनुमान (अंदाजा)

उपर्युक्त मूल शब्द वैध में 'अ' शब्दांश लगाने से 'अवैध' तथा मान में 'अनु' शब्दांश लगाने से

'अनुमान' नवीन शब्द बने हैं तथा उनके अर्थ में भी परिवर्तन आ गया है । ये 'अ' तथा 'अनु' उपसर्ग हैं।

अतएव जो शब्दांश किसी शब्द के शुरू में जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं ।

(iv)

मूल शब्द (अर्थ)	+	शब्दांश	=	नवीन शब्द (अर्थ)
पहाड़ (पर्वत)	+	ई	=	पहाड़ी (पहाड़ सम्बन्धी, पहाड़ पर मिलने वाला)
छाया (वातारवण जहाँ प्रकाश की किरण आवरण के कारण न पहुँच सके)	+	दार	=	छायादार (जो छाया करने वाला हो)

उपर्युक्त मूल शब्द 'पहाड़' में 'ई' लगाने से 'पहाड़ी' तथा 'छाया' शब्द में 'दार' लगाने से छायादार नवीन शब्द बने हैं तथा उनके अर्थ में भी परिवर्तन आ गया है। ये 'ई' तथा 'दार' प्रत्यय हैं।

अतएव जो शब्दांश किसी शब्द के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं।

पाठ-8

मैट्रो-रेल का सुहाना सफर

राष्ट्रीय खेलों में भाग लेने के लिए पंजाब प्रदेश की योग की टीम अपने गुरु सुरेन्द्र मोहन के साथ दिल्ली के झलकारी बाई राजकीय उच्चतर विद्यालय, अशोक विहार में ठहरी हुई है। आज सभी बच्चे बहुत प्रसंन हैं क्योंकि गुरु जी ने उन्हें वचन दिया था कि यदि उनकी टीम प्रथम आती है तो उनकी तरफ से सभी बच्चों को मैट्रो-रेल के सुहावने सफर का उपहार दिया जाएगा। गुरुजी भी बहुत हर्षित हैं क्योंकि उनकी टीम ने पूरे देश में प्रथम स्थान लेकर उनके और पंजाब प्रदेश के नाम को चार चाँद लगा दिए हैं। बच्चों के दिल भी बल्लियों उछलने लगे जब गुरुजी ने कहा, बच्चो आज हम सभी मैट्रो-रेल के द्वारा लाल किला देखने जायेंगे।

खिलाड़ियों वाले नीले रंग के ट्रैक-सूट पहने सभी बच्चे गुरुजी की आज्ञा पाकर निकट के मैट्रो-रेल स्टेशन कन्हैया नगर की ओर पंक्तियाँ बनाकर बड़े उत्साह से चलने लगे। अनुशासन में आगे बढ़ते बच्चों के ट्रैक सूटों पर छपा 'पंजाब' सभी की शोभा बढ़ा रहा था। जैसे ही सभी कन्हैया नगर स्टेशन पर पहुँचे तो राजीव ने कहा गुरुजी रेलगाड़ी तो ज़मीन पर चलती है, पर यहाँ तो लगता है कि स्टेशन इस सड़क के ऊपर बने पुल के ऊपर है। गुरु जी ने बड़े प्यार से समझाया-

''बेटा राजीव, मैट्रो रेलगाड़ी की यही तो विशेषता है कि परिस्थिति और सुविधा अनुसार इसकी पटरी ज़मीन पर या सड़क पर पुल बनाकर या फिर ज़मीन के नीचे सुरंग खोदकर बिछाई गई है ताकि कम समय में अधिक फासला आसानी से तय किया जा सके।'' यह सुनकर प्रतिभा बोली-

''गुरुजी हमारी गाड़ी कौन-से रास्ते से जाएगी?''

''गाड़ी में बैठकर खिड़की के शीशे से आराम से देखना, तुम्हें पता चल जाएगा और आनंद भी आएगा।'' गुरुजी ने उत्तर दिया। प्रतिभा खुशी से उछल पड़ी और अपने साथियों से कहने लगी, ''मैं तो खिड़की वाली सीट पर बैठूँगी। गुरुजी ने हँसते हुए कहा-''अच्छा! सभी खिड़की वाली सीट पर बैठ जाना। अब तुम सब पंक्ति में ध्यानपूर्वक सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर स्टेशन पर आओ।''

भास्कर ने बड़ी उत्सुक्ता से पूछा-

''गुरुजी यहाँ तो लिफ्ट भी लगी हुई है। फिर हम सीढ़ियों से क्यों जा रहे हैं?''

गुरुजी ने सभी को समझाते हुए कहा, ''बच्चो! लिफ्ट की सुविधा का प्रयोग वृद्धों और बीमारों के लिए तथा अपाहिजों को पहिया-कुर्सी सहित लाने और ले जाने के लिए किया जाता है। हम सब तो स्वस्थ हैं, सीढ़ियाँ चढ़ सकते हैं।'' लिफ्ट के पास खड़े कर्मचारी ने बीच में बोलते हुए कहा, ''बच्चो! आपके गुरुजी ठीक कह रहे हैं और यह देखो इसीलिए ही लिफ्ट खोलने का बटन भी कम ऊँचाई पर लगाया गया है।''

जैसे ही सभी बच्चे स्टेशन पर पहुँचे, वे स्टेशन की साफ-सफ़ाई और सजावट देखकर दंग

रह गए। चमकता संगमरमर का फ़र्श, अत्याधुनिक बिजली उपकरणों और सामान्य सुविधाओं से सजे स्टेशन को देखकर बच्चे खुशी से झूम उठे। स्टेशन पर स्थान-स्थान पर यात्रियों की सुविधा और सुरक्षा के लिए बड़ी ही सुंदर वर्दी में सुरक्षा-कर्मी तैनात थे। गुरुजी ने सभी का समूह पास बनवाकर बच्चों की जाँच के लिए बने एक यंत्र में से निकलने के लिए पंक्ति में आने को कहा। राजीव ने अनायास ही पूछा:-

''गुरुजी, हम जालंधर रेलवे स्टेशन पर भी ऐसे ही यंत्र से निकलकर आए थे, आखिर यह यंत्र होता क्या है?''

गुरुजी ने बताया,''बेटा! यह यंत्र किसी भी विस्फोटक सामग्री के पास आते ही स्वत: ही एक विशेष ध्वनि निकालने लगता है। इसी कारण यात्रियों की सुरक्षा के लिए यह यंत्र हर रेलवे स्टेशन पर लगाया जाता है। इसके पश्चात् सुरक्षा कर्मी ने सभी की जाँच की और सभी प्रवेश-द्वार पार करके प्लेटफार्म की तरफ बढ़ने लगे। स्टेशन पर ही यात्रियों की सुविधा के लिए रेस्तराँ, कॉफी की दुकानें, किताबों की दुकानें और नकदी निकालने के लिए ए0टी0एम0 जैसी सुविधाएँ भी उपलब्ध थीं।

मनीश ने पूछा, ''गुरुजी सभी लोग तो उस मशीन वाले रास्ते से जा रहे हैं, हम उधर से क्यों नहीं गए?'' गुरुजी ने कहा :-

''आओ, इस कर्मचारी से पूछते हैं।''

कर्मचारी से पूछने पर उसने सभी बच्चों को मशीन की एक तरफ खड़ा करके बताना शुरू किया कि, ''यह स्वचालित प्रवेश द्वार है। एक यात्रा के लिए एक टोकन प्रति यात्री (टोकन दिखाते हुए) दिया जाता है जिसे इस मशीन के निकट लाने से प्रवेश द्वार खुल जाता है और यात्री इसमें से निकल जाता है। इसी तरह रोजाना यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए (स्मार्ट कार्ड दिखाते हुए) स्मार्ट कार्ड की सुविधा उपलब्ध है। इस कार्ड को मशीन के पास लाने से एक तो यात्रा के अनुसार उसमें से स्वत: ही किराया कट जाता है और दूसरे जो समय टोकन खरीदने में लगता है वह भी बच जाता है। इसके इलावा मैट्रो-रेल यात्रा के लिए पर्यटक कार्ड भी उपलब्ध करवाता है। आपका समूह बड़ा होने के कारण आपका समूह पास बनाया गया है इसीलिए आपको इस स्वचालित द्वार की अपेक्षा विशेष प्रवेश द्वारा प्रवेश करवाया गया। उसने कहा, चलो आपकी गाड़ी का समय होने वाला है, मैं आपको गाड़ी में बिठाकर आता हूँ।''

प्लेटफार्म पर पहुँचकर बच्चों ने महसूस किया कि वहाँ पर इतनी साफ-सफ़ाई है जैसे, यहाँ कभी किसी ने पैर भी न रखा हो। तभी भास्कर रेलगाड़ी देखने के लिए प्लेटफ़ार्म के किनारे पर जा पहुँचा। गुरुजी ने और उस कर्मचारी ने उसी समय भास्कर को दौड़कर पकड़ा और बाकी बच्चों के पास लाकर प्यार से समझाया कि गाड़ी की प्रतीक्षा करते समय कभी भी प्लेटफ़ार्म पर बनी पीली-पट्टी को पार नहीं करना चाहिए। गुरुजी ने कर्मचारी से अनुरोध किया कि जब तक गाड़ी नहीं आती तब तक बच्चों को वे मैट्रो-रेल के विषय में और जानकारी दें। कर्मचारी ने बताना प्रारम्भ किया कि कभी भी रेल की पटरी पर नहीं जाना चाहिए। प्लेटफ़ार्म पर थूकना, गंदगी फैलाना या

कोई वस्तु खाना-पीना दंडनीय अपराध है। यदि कोई वस्तु पटरी पर गिर भी जाए तो उसे उठाने का प्रयास न करें। इस स्थिति में मैट्रो-रेल के अधिकारियों से ही संपर्क करना चाहिए। गाड़ी की प्रतीक्षा करते समय जिस दिशा में यात्रा करनी हो उसी दिशा में मुँह करके खड़े होना चाहिए। तभी गुरुजी ने सूचना पट्ट पर देखते हुए कहा, गाड़ी के पहुँचने का समय हो गया है, हमें तैयार रहना चाहिए। इससे पहले कि वह कर्मचारी कुछ कहता गाड़ी के पहुँचने की उद्घोषणा होने लगी कि रिठाला से इन्द्रलोक और कश्मीरी गेट होते हुए दिलशाद गार्डन जाने वाली मैट्रो कुछ समय में प्लेटफार्म पर पहुँच रही है।

उद्घोषणा के बाद किरन ने हैरानी से पूछा, ''गुरुजी हमने तो लाल किला जाना है, लेकिन इस स्टेशन का नाम इस उद्घोषणा में क्यों नही लिया गया?'' गुरुजी ने बताया-

''बेटी, हम कश्मीरी गेट पहुँचकर वहाँ से चाँदनी चौक जाने वाली मैट्रो में बैठेंगे और वहाँ से लाल किला के लिए हम पैदल चलकर जा सकते हैं।'' गुरुजी की बात समाप्त होते ही गाड़ी प्लेटफार्म पर आ पहुँची थी। कर्मचारी ने गुरुजी से कहा, ''आप आराम से बच्चों को गाड़ी में चढ़ायें, मैं तब तक चालक को गाड़ी रोके रखने के लिए बोलकर आता हूँ।'' सभी बच्चे खुशी-खुशी गाड़ी में चढ़कर सीटों पर ऐसे बैठ गए जैसे कोई किला फतेह कर लिया हो।

गाड़ी में स्वचालित द्वार अपने आप ही बंद हो गए और गाड़ी ने अपनी गति पकड़नी शुरू कर दी। सभी बच्चों के चेहरे खुशी और उत्साह से चमक रहे थे। राजीव से रहा ना गया, वह बोला, ''गुरुजी, मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे हम सभी किसी विमान में उड़ रहे हैं।'' सभी बच्चे एक साथ बोले, ''हमें भी।'' गुरुजी ने कहा-बहुत बढ़िया बच्चो, लेकिन शोर नहीं मचाना। प्रतिभा एकटक खिड़की के शीशे से बाहर का नज़ारा देख रही थी। उसने बड़ी हैरानी से कहा, ''यह खिड़की तो खुलती नहीं।'' गुरुजी ने बताया-

''बेटा! यह पूरी गाड़ी वातानुकूलित है, इसलिए इसके शीशे स्थाई तौर पर बन्द होते हैं।''

भास्कर एकाएक बोल उठा, ''तभी मैं कहूँ, बाहर तो इतनी गर्मी थी और अंदर मुझे ठंड लग रही है।''

गाड़ी के अंदर दोनों तरफ बैठने के लिए एक दरवाज़े से दूसरे दरवाज़े तक लंबी सीटों पर बैठे बच्चे बाहर का नज़ारा देखकर बहुत प्रसंन हो रहे थे और आपस में चुहलबाजी करके अपना मन बहला रहे थे। जैसे ही अगला स्टेशन आने वाला होता गाड़ी के अंदर लगे स्पीकर के माध्यम

से उद्घोषणा होती कि कुछ ही समय में अगला स्टेशन (नाम बोलकर) आने वाला है और दरवाज़े किस ओर के खुलेंगे यह भी बताया जाता। जैसे ही गाड़ी स्टेशन पर रुकती स्वचालित द्वार अपने आप खुल जाते और यात्रियों के उतरने और चढ़ने के पश्चात् स्वयं ही बंद हो जाते। पूरी गाड़ी में खिड़कियों के ऊपर स्थान-स्थान पर इलैक्ट्रॉनिक सूचना पट्ट लगे हुए थे जिन पर लगातार आने वाले स्टेशनों की जानकारी हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में दी जा रही थी। गाड़ी कन्हैया नगर से चलकर पहले इंद्रलोक स्टेशन, फिर शास्त्री नगर, प्रताप नगर और तीस हज़ारी स्टेशनों पर रुकती हुई कश्मीरी गेट पहुँचने ही वाली थी कि गुरुजी कहने लगे, बच्चो अगले स्टेशन पर उतरने के लिए तैयार हो जाओ। कश्मीरी गेट स्टेशन आते ही जैसे ही गाड़ी रुकी, द्वार खुलते ही मैट्रो रेल का एक कर्मचारी हमारी सहायता के लिए खड़ा था। उन्हें कन्हैया नगर स्टेशन से अधिकारियों ने हमारे आने की सूचना पहले ही दे दी थी। ट्रैक सूट पर पंजाब छपा देखकर उसे बच्चों को पहचाने में देर न लगी। गाड़ी से उतरने के पश्चात् वह सभी को स्वचालित सीढ़ियों के द्वारा भूमिगत प्लेटफ़ार्म पर ले गया। उसने बताया कि इसी प्लेटफ़ार्म पर आपको चाँदनी चौंक स्टेशन के लिए मैट्रो मिलेगी। सिमरन ने डरते हुए पूछा, ''गुरुजी, यह तो कोई सुरंग-सी लगती है। मुझे तो बहुत डर लग रहा है।'' गुरुजी ने कहा-

डरने की कोई बात नहीं है, अगला स्टेशन चाँदनी चौंक ही है। इस बार बच्चे बड़े आराम से निश्चिंत होकर मैट्रो में चढ़े और खुशी-खुशी चाँदनी चौंक स्टेशन पर उतरे। सभी यात्री अपना-अपना टोकन, स्मार्ट-कार्ड या पर्यटक-कार्ड निकास द्वार की मशीन के पास लाते और स्वचालित द्वार खुलने पर बाहर निकल जाते। सभी बच्चों ने यह नज़ारा विशेष निकास द्वार से निकलते हुए देखा। चाँदनी चौंक से लाल किले की तरफ बढ़ते बच्चे बस मैट्रो-रेलगाड़ी की ही बातें कर रहे थे जैसे उन्होंने कोई अजूबा देख लिया हो।

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

1. शब्दार्थ

उपहार	=	भेंट
लिफ्ट	=	बड़ी इमारतों में ऊपर ले जाने वाला यानस्वरूप यंत्र
अपाहिज	=	अपंग
विस्फोटक सामग्री	=	विस्फोट करने वाला पदार्थ
दण्डनीय अपराध	=	दंडित किए जाने योग्य अपराध
उद्घोषणा	=	ऊँची आवाज़ में कहना, सरकारी घोषणा
वातानुकूलित	=	हवा के तापमान के अनुकूल बनाया गया
भूमिगत प्लेटफ़ार्म	=	भूमि के अन्दर बना प्लेटफ़ार्म

2. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ स्पष्ट करते हुए उन्हें वाक्यों में प्रयोग करें :-

दिल बल्लियों उछलना __________ ____

दंग रह जाना __________ ____

खुशी से झूम उठना __________ ____

मन बहलाना __________ ____

3. नीचे लिखे शब्दों में अक्षरों को उचित क्रम में रखकर सार्थक शब्द बनायें :-

गालरेड़ी	=	________	नुशाअसन	=	________
लासफा	=	________	पहाउर	=	________
ममसंस्रम	=	________	प्लेफ़ाटर्म	=	________
लीजबि	=	________	टवसजा	=	________
अरोधनु	=	________	पअराध	=	________
किललाला	=	________	वानुकूतलिता	=	________
जापंब	=	________	लतारगा	=	________
भूतगमि	=	________	कानिस	=	________
रीजाकान	=	________	अबाजू	=	________

4. संज्ञा शब्दों पर गोला लगायें तथा सर्वनाम शब्दों को रेखांकित करें :-

(i) बच्चो ! आज हम सभी मैट्रो रेल द्वारा लाल किला देखने जायेंगे।

(ii) हम सीढ़ियों से क्यों जा रहे हैं?

(iii) यह स्वचालित प्रवेश द्वार है।

(iv) मैं आपको गाड़ी में बिठाकर आता हूँ

(v) हम सभी विमान में उड़ रहे हैं।

(vi) यह तो कोई सुरंग-सी लगती है।

5. **बहुवचन रूप लिखें :-**

खेल = ____________

वृद्ध = ____________

स्टेशन = ____________

पंक्ति = ____________

सीढ़ी = ____________

खिड़की = ____________

6. **अति+आधुनिक = अत्याधुनिक, स्व+चालित = स्वचालित इसी प्रकार अन्य शब्द बनायें।**

अति + ____________ = अत्यावश्यक

अति + ____________ = ____________

स्व + ____________ = स्वदेश

स्व + रक्षा = ____________

7. **असीमित शब्दों में 'अ' लगाकर विपरीत शब्द बना है। इसी प्रकार अन्य विपरीत शब्द बनायें:-**

अ + सुविधा = ____________ अ + सहयोग = ____________

अ + _____ = असुर अ + _____ = अभिन्न

8. **निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों में कारक बतायें :-**

(i) भास्कर रेलगाड़ी देखने के लिए प्लेटफ़ार्म के किनारे पर जा पहुँचा। ____________

(ii) आज हम सभी मैट्रो रेल के द्वारा जायेंगे। ____________

(iii) प्रतिभा खिड़की वाली सीट पर बैठ गयी। ____________

(iv) सभी स्वचालित सीढ़ियों के द्वारा भूमिगत प्लेटफ़ार्म पर पहुँच गए। ____________

(v) गुरुजी ने बच्चों को बड़े प्यार से समझाया। ____________

(vi) हमने राष्ट्रीय खेलों में भाग लिया। ____________

(ख) विचार-बोध

1. **इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-**

(i) गुरुजी ने बच्चों को क्या वचन दिया था?

(ii) कैसे पता चला कि ये बच्चे पंजाब से आए हैं?

(iii) मैट्रो रेल की पटरी कहाँ-कहाँ बिछाई जाती है?

(iv) लिफ्ट का प्रयोग किन लोगों के लिए किया जाता है?

(v) स्टेशन पहुँचने पर बच्चे क्या देखकर हैरान हो गए?

(vi) स्टेशन पर यात्रियों की सुरक्षा-जाँच कैसे की जाती है?

(vii) स्वचालित प्रवेश द्वार किस प्रकार कार्य करता है?
(viii) स्मार्ट-कार्ड का क्या उपयोग है?
(ix) पर्यटक-कार्ड द्वारा कितने दिन तक यात्रा कर सकते हैं?
(x) गाड़ी की प्रतीक्षा करते समय कौन से रंग की पट्टी से आगे नहीं जाना चाहिए?
(xi) प्लेटफ़ार्म पर हमें क्या-क्या नहीं करना चाहिए?
(xii) मैट्रो गाड़ी की खिड़कियाँ क्यों नहीं खुलतीं?
(xiii) इलैक्ट्रॉनिक सूचना पट्ट पर क्या सूचनाएँ दी जाती हैं?

2. **इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-**

(i) मैट्रो स्टेशन आम स्टेशन से किस प्रकार भिन्न है?
(ii) टोकन, स्मार्ट-कार्ड और पर्यटक-कार्ड में क्या अन्तर है?
(iii) मैट्रो गाड़ी के स्वचालित द्वार द्वारा जाने और निकलने में किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
(iv) भूमिगत प्लेटफ़ार्म से आप क्या समझते हैं?
(v) मैट्रो रेल यात्रा का अनुभव डायरी में लिखें।

(ग) रचना-बोध

1. **अपनी सहेली/मित्र को पत्र लिखो जिसमें मैट्रो यात्रा का वर्णन किया गया हो।**
2. **जिन शहरों में मैट्रो रेल की सुविधा हो वहाँ इस रेल की यात्रा का आनंद ज़रूर लें और अपने अनुभव सहपाठियों को बतायें।**

पाठ–9

पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं, मैं सुरबाला के,
गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं, प्रेमी माला में,
बिंध प्यारी को ललचाऊँ।।

चाह नहीं, सम्राटों के शव पर,
हे हरि, डाला जाऊँ।
चाह नहीं, देवों के सर पर
चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ।।

मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ पर तुम देना फेंक।
मातृभूति पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जावें वीर अनेक।।

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

1. शब्दार्थ

चाह	=	इच्छा	सुरबाला	=	देवता की लड़की, देवांगना
शव	=	मृत शरीर	वनमाली	=	माली
शीश	=	सिर	पथ	=	मार्ग

2. दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखें:-

अभिलाषा = __________ , __________
बाला = __________ , __________
पुष्प = __________ , __________
सुर = __________ , __________
सम्राट = __________ , __________
पथ = __________ , __________
वीर = __________ , __________
हरि = __________ , __________

3. इन शब्दों के अलग-अलग अर्थ लिखते हुए वाक्य बनायें:

(i) सुर = ________ , ________
सूर = ________ , ________
(ii) हरि = ________ , ________
हरी = ________ , ________
(iii) बाला = ________ , ________
वाला = ________ , ________
(iv) वन = ________ , ________
बन = ________ , ________
(v) पथ = ________ , ________
पंथ = ________ , ________
(vi) सिर = ________ , ________
सिरा = ________ , ________

4. इन शब्दों के लिंग परिवर्तन करें:

सुरबाला = ________
प्रेमी = ________
सम्राट = ________
देव = ________
माली = ________
वीर = ________

(ख) विचार-बोध

(1) इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(i) पुष्प की क्या-क्या इच्छा नहीं है?
(ii) पुष्प की इच्छा क्या है?
(iii) इस कविता के कवि का नाम लिखें।

(2) इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(i) इस कविता में व्यक्ति के हित की अपेक्षा देश के हित की बात कही गई है। कैसे? स्पष्ट करें।
(ii) इन काव्य पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या करें:-
मुझे तोड़ ....वीर अनेक

(3) यह छोटी-सी कविता देशप्रेमियों के लिए प्रेरणा स्रोत रही है। राष्ट्र हित व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर है। यदि आपके समक्ष कोई ऐसी परिस्थिति बन जाए तो आप किसे चुनना पसन्द करेंगे? व्यक्तिगत स्वार्थ या राष्ट्र हित और क्यों?

(4) हमें अपने देश की उन्नति के लिए क्या करना चाहिए?

पाठ-10

परोपकार

एक बार अमरीका का राष्ट्रपति (अब्राहिम लिंकन) सीनेट को जा रहा था। मार्ग में उसने एक सुअर को कीचड़ में फँसा हुआ देखा। सुअर कीचड़ से निकलने का जितना यत्न करता था, उतना ही अधिक वह गहरे कीचड़ में फँसता जाता था। राष्ट्रपति यह देखकर रह न सका। अपने सीनेट के वस्त्र पहने हुए ही वह कीचड़ में जा कूदा। उसने सुअर को कीचड़ से बाहर निकाल दिया। इसके बाद वह कीचड़ से सने वस्त्र पहन कर ही सीनेट में जा पहुँचा। राष्ट्रपति की ऐसी हालत देखकर सदस्य हक्के-बक्के रह गए। राष्ट्रपति ने सारा हाल सुनाया। सदस्य फूले न समाए। उन्होंने राष्ट्रपति की सराहना की। वे कहने लगे कि हमारे राष्ट्रपति इतने दयावान हैं कि सुअर पर भी दया करते हैं। राष्ट्रपति ने सहज भाव से कहा, मैंने सुअर पर दया नहीं की अपितु उसे कीचड़ में बुरी तरह फँसा देखकर मुझे बड़ी पीड़ा हुई। अपनी इसी पीड़ा को मिटाने के लिए मैंने सुअर को कीचड़ से बाहर किया।

इस घटना से परोपकार के तत्व उभर कर आते हैं। परोपकार से मन कोमल होता है, द्रवित होता है, दूसरों की हीन दशा देखकर पिघल जाता है। हृदय **नि:स्वार्थ** हो जाता है, दूसरों (पशु-पक्षियों) की वेदना को अपनी वेदना समझता है। वह उदार बनता है। स्वयं कष्ट उठा कर दूसरों के दु:ख दूर कर आत्मसंतोष पाता है। मन की सरलता, कोमलता, करुणा, सहानुभूति, त्याग व बलिदान की भावना का मूल स्रोत परोपकार है। इसी कारण परोपकार को सबसे बड़ा धर्म माना जाता है। 'दया धर्म का मूल है।' महर्षि वेद व्यास ने परोपकार को सबसे बड़ा पुण्य और परपीड़ा को सबसे बड़ा पाप माना है।

दूसरों का उपकार करना प्रकृति का स्वभाव है। प्रकृति का प्रत्येक पदार्थ और कार्य परहित के लिए होता है सूर्य हमें प्रकाश और ऊर्जा देता है, वर्षा होती है, नदियाँ बहती हैं, सब प्राणियों में नए जीवन का संचार होता है। वृक्ष स्वयं धूप सह कर राही को छाया देते हैं। पत्थर मारने वाले को भी फल देते हैं, वे वातावरण को शुद्ध करते हैं। प्राचीनकाल में सूर्य, अग्नि, वायु, वरुण आदि प्राकृतिक पदार्थों को दान के कारण ही देवता मानते थे, उनकी स्तुति करते थे। धरती तो माता की तरह हमारा पोषण करती है। प्रकृति की तरह हमारा जीवन, हमारी सम्पदा परहित के लिए होनी चाहिए।

कविवर रहीम के शब्दों में:-

तरुवर फल नहीं खात हैं, सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम पर काज हित, सम्पत्ति संचहि सुजान।।

परोपकारी मनुष्य के जीवन का लक्ष्य-दूसरों का उपकार करना होता है। वह उदार होता है, प्राणीमात्र को अपना परिवार समझता है, उनके दु:खों को दूर करने में अपना दु:ख दूर समझता है।

ऐसे दयालु पुरुष अमर हो जाते हैं। लोग उनकी दान वीरता को स्मरण करते हैं। महर्षि दधीचि ने देवताओं को पीड़ित करने वाले असुरों के नाश के लिए अपना शरीर त्याग दिया था। महाराजा शिवि ने कबूतरों के प्राणों की रक्षा के लिए अपना माँस सहर्ष दिया था। महाभारत के महान नायक कर्ण की दान वीरता को कौन भुला सकता है। उन्होंने अपने प्राणों का मोह छोड़कर कवच कुंडल दे दिए थे। रहीम ने कहा था कि जीना तब तक अच्छा होता है, जब तक दान में कमी न आये:-

तब की लग जीबो भलो, दीबो परै न धीम।

परोपकार की भावना में सब से बड़ी बाधा लालच है। क्या धन से कभी तृप्ति होती है? सहस्र वाला लाख चाहता है, लाख वाला करोड़, लालच बुरी बला है। इसका भयंकर परिणाम होता है। माया साथ नहीं देती, अपने पराए हो जाते हैं और जीवन नरक हो जाता है। शास्त्रों में धन की तीन गतियाँ मानी गयी हैं- दान, भोग और नाश। धन की सर्वोत्तम गति दान है। इसी कारण कोई भी यज्ञ अथवा संस्कार दान से पूर्ण माना जाता था। दानी लोग दीनों, अनाथों अपंगों और **रोग पीड़ितों** की सहायता के लिए आश्रम, स्कूल व अस्पतालों की स्थापना करते हैं।

संसार दु:खों का घर है। कई जन्म से अपंग व रोगी होते हैं, कई दुर्घटनावश मरते हैं तो उनके बच्चे अनाथ हो जाते हैं। कई बार भीषण युद्ध होते हैं, अकाल पड़ता है, भूस्खलन होता है, मूसलाधार वर्षा से बाढ़ आ जाती है। ऐसी विपत्ति में सरकार व सामाजिक संस्था ही नहीं, प्रत्येक व्यक्ति अपने ढंग से योगदान कर सकता है।

परोपकार केवल धन से ही नहीं मन, वाणी और कर्म द्वारा भी होता है। **शोकग्रस्त** प्राणी को दिलासा देना, अंधों व अपंगों को सहारा देना, पढ़ाई में पिछड़े हुए साथी को सहयोग देना, निराश साथी को उत्साहित करना परोपकार ही है। ऐसे नेक कामों का बचपन से ही अभ्यास करें, क्योंकि परोपकार से बढ़कर कोई धर्म नहीं। गोस्वामी तुलसीदास ने ठीक कहा है:-

परहित सरिस धरम नहि भाई।
परपीड़ा सम नहि अधमाई।

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

1. शब्दार्थ

सराहना	=	प्रशंसा करना
द्रवित	=	पिघलना
वेदना	=	पीड़ा
पुण्य	=	नेक काम
राही	=	मुसाफिर
स्रोत	=	झरना
ऊर्जा	=	शक्ति

प्राचीन	=	पुराने
तरुवर	=	वृक्ष
सरवर	=	तालाब
संचहि	=	इकट्ठा करना
धर्म	=	पुण्य (नेक काम)
परहित	=	परोपकार
अधमाई	=	नीचता (पाप)
धीम	=	कम
अपंग	=	अंग रहित
भूस्खलन	=	भूकंप
मूसलाधार	=	ज़ोर की वर्षा

2. इन मुहावरों और शब्दों का वाक्य प्रयोग करें:-

फूले न समाना __________ ____

हक्के-बक्के होना __________ ____

मूसलाधार __________ ____

प्राचीन __________ ____

ऊर्जा __________ ____

सहानुभूति __________ ____

महर्षि __________ ____

बलिदान __________ ____

3. विपरीत अर्थ वाले शब्द लिखें:-

उपकार = __________

परहित = __________

दयालु = __________

उदार = __________

देवता = __________

सुर = __________

उत्साह = __________

4. मन, वाणी और कर्म से परोपकार के कोई दो-दो उदाहरण लिखें:-

मन = __________ , __________

वाणी = __________ , __________

कर्म = __________ , __________

प्रयोगात्मक व्याकरण

5. (i)

पर + उपकार	=	परोपकार
अ + उ	=	ओ
सुर + ईश	=	सुरेश
अ + ई	=	ए
महा + ऋषि	=	महर्षि
आ + ऋ	=	अर्

अत: 'अ' और 'आ' स्वरों के बाद यदि ह्रस्व या दीर्घ उ, इ या ऋ स्वर आते हैं तो दोनों के स्थान पर क्रमश: ओ, ए तथा 'अर्' हो जाता है। इसे **गुण संधि** कहते हैं।

नीचे लिखे शब्दों की संधि करें :-

सर्व + उत्तम	=	___________
महा + ईश	=	___________
नर + ईश	=	___________
शुभ + इच्छा	=	___________
परम + ईश्वर	=	___________
सप्त + ऋषि	=	___________

(ii) नि: + स्वार्थ = निस्स्वार्थ

विसर्ग के बाद 'स' होने से विसर्ग को स् हो गया तथा शब्द बन गया निस्स्वार्थ। यह **विसर्ग संधि** का उदाहरण है।

6. निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह करें-

समस्त पद	विग्रह	समास का नाम
राष्ट्रपति	___________	___________
पशुपक्षी	___________	___________
रोगपीड़ित	___________	___________
शोकग्रस्त	___________	___________
शरीरत्याग	___________	___________
पाप-पुण्य	___________	___________

(ख) विचार-बोध

1. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें:-

(i) अब्राहिम लिंकन ने सुअर को कीचड़ में फँसा हुआ देखकर क्या किया?

(ii) सीनेट के सदस्यों ने लिंकन की सराहना क्यों की?

(iii) राष्ट्रपति ने अपनी प्रशंसा सुनकर क्या उत्तर दिया?

(iv) महर्षि वेद व्यास ने परोपकार का महत्व कैसे बताया है?

(v) प्राचीन काल में सूर्य, अग्नि आदि को देवता क्यों मानते थे?

(vi) परोपकारी मनुष्य का लक्ष्य क्या होता है?

(vii) प्राचीन काल के तीन महान दानियों के नाम बताइये।

(viii) धन की कौन-सी तीन गतियाँ होती हैं?

2. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें:-

(i) प्रकृति का स्वभाव दूसरों का उपकार करना है?

(ii) परोपकार में सबसे बड़ी बाधा लालच है?

(iii) 'धन से ही नहीं, प्रत्येक व्यक्ति अपने ढंग से परोपकार कर सकता है।' इस पंक्ति की अपने शब्दों में उदाहरण देकर व्याख्या करें।

(ग) भाव-बोध

(i) तब ही लग जीवो भले, दीबो परै न धीम।
महान् कवि रहीम के इस कथन से उनके जीवन (दान-महिमा/दयनीय दशा) पर प्रकाश पड़ता है- अपने शब्दों में स्पष्ट करें।

(ii) 'परहित सरिस धरम नहि भाई' इस कथन को स्पष्ट करें।

पाठ-11

मातृ-दिवस

माँ अनेक कष्ट झेल कर बच्चे को जन्म देती है। बचपन से लेकर बुढ़ापे तक वह अपने बेटे-बेटियों का हर कदम पर ध्यान रखती है। बालक हो या बालिका, उसकी थोड़ी-सी पीड़ा भी माँ के लिए जान लेवा-सी बन जाती है। यदि उसका शिशु मुस्करा देता है तो माँ का हृदय कमल खिल उठता है। अपने बच्चों की शुभ चिंतक ऐसी माँ के लिए ही किसी लोक कवि ने पंजाबी की यह कहावत गढ़ी है - "माँवाँ ठँडीआँ छावाँ।" हमारे ऋषि मुनियों ने भी माता की महिमा को पहचान कर उसे देवी का स्थान देते हुए कहा था - "मातृ देवो भव।"

माता के इसी प्रकार के महत्त्व को ध्यान में रख कर ईसाई धर्म को मानने वालों ने वर्ष में एक विशेष दिन उसके सम्मान के लिए निश्चित किया है। इसे अंग्रेज़ी में 'मदर्स डे' (Mother's Day) और हिन्दी में 'मातृ-दिवस' कहा जाता है। कहते हैं कि इसका आरंभ यूनान देश में हुआ था, जहाँ यूनानी और रोम वासियों के देवताओं की माता की उपासना किसी विशेष दिन की जाती थी। 'रेहया' इस देवी का नाम है। देवताओं की माता होने के कारण उसे 'ग्रेट मदर' (महान माता) भी पुकारा जाता था। उसके प्रति श्रद्धा और सम्मान देने के लिए मार्च महीने का दिन रखा गया था। पूजा के लिए यह दिन अलग-अलग देशों के लोगों ने अपनी-अपनी सुविधा के अनुसार नियत कर लिया था।

ईसाई धर्म का विकास होने पर यह पर्व ईसाइयों के गिरिजाघरों में भी मनाया जाने लगा। शुरू-शुरू में यह पर्व ईसा मसीह के चालीस दिन के उपवास में पड़ने वाले किसी भी रविवार को मनाने की प्रथा थी। इस प्रकार यह शुभ दिन 'ईस्टर' से महीना-सवा महीना पहले आता था। कभी अप्रैल के आरंभ में और कभी अन्त में। उन दिनों जो बच्चे घर से दूर स्कूलों में पढ़ते थे या काम काज में लगे होते थे, वे 'मदर्स डे' मनाने के लिए घर लौट आते थे। वे माता-पिता के दर्शनों के लिए आते हुए दोनों के लिए ही, विशेष रूप से माँ के लिए, कुछ-न-कुछ भेंट लेकर आते थे।

धीरे-धीरे अमेरिका के ईसाई भी इसे मनाने लगे। सुश्री अन्ना जारबिस नामक पवित्र विचारों वाली एक महिला के प्रयत्नों के कारण यह उत्सव पहली बार 'फिलाडेलफिया' नामक नगर के एक गिरिजाघर में 10 मई,1908 को मनाया गया था। विद्वानों का मत है कि यूनान में रंग-बिरंगे फूल मार्च में खिलते हैं, जबकि अमेरिका में फूलों की बहार मई महीने में नज़र आती है। इसी कारण अमेरिका वासियों ने मार्च की जगह मई महीना 'मदर्स डे' के लिए चुना था।

सन् 1914 में अमेरिका के राष्ट्रपति थे वुडरो विलसन। उन्होंने अमेरिकी कांग्रेस (संसद) से एक प्रस्ताव पारित करवाकर मई महीने के दूसरे रविवार को "मातृ-दिवस" मनाने की घोषणा कर दी। अब तो पूरे अमेरिका देश में 8 मई को यह राष्ट्रीय पर्व मनाया जाता है। यदि उस दिन ऐसा

न हो सके तो मई का दूसरा रविवार तो शुभ दिन माना ही जाता है। उस दिन सभी सार्वजनिक भवनों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है। बच्चे माताओं को सफेद, गुलाबी और लाल रंग के फूल भेंट करते हैं। सफेद फूल प्यारी माँ के हृदय की पवित्रता को प्रकट करता है। गुलाबी फूल माँ के सभी के प्रति मधुर व्यवहार को दर्शाता है। लाल रंग का फूल उसके कष्ट सहन करने का प्रतीक होता है।

अब यह त्योहार अमेरिका के अतिरिक्त इंग्लैंड, डेनमार्क, स्वीडन, मैक्सिको, चीन और भारत में भी मनाया जाने लगा है। किन्तु इसे मनाने की तिथि सभी देशों में एक-जैसी नहीं है। कहीं पर इसे मई के पहले रविवार को मनाते हैं, कहीं पर 8 मई को। कुछ देशों में मई का दूसरा रविवार इस दिन को मनाने के लिए रखा गया है और कुछेक में 12 मई की तारीख नियत की गई है। अमेरिका के कुछ स्कूलों में सभी बच्चे मिलकर 'मातृ-दिवस' मई महीने के दूसरे शुक्रवार को मना लेते हैं। फिर वे शनिवार को अपने-अपने घर पहुँच कर मई के दूसरे रविवार को अपने भाई-बहनों के साथ माँ के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए उसे फूल, केक, वस्त्र आदि भेंट करते हैं।

जिन लोगों की माँ का स्वर्गवास हो गया हो, वे अपनी दादी, नानी, मौसी, मामी, ताई, चाची या बड़ी भावज को पुष्पादि भेंट करके उसे माता की तरह आदर-सत्कार प्रदान करते हैं। माँ के जीवित रहने पर भी जो किसी कारण घर पर पहुँच कर उसके दर्शन नहीं कर पाते, वे दीवाली और नए साल के बधाई पत्रों की तरह 'मदर्स डे' के कार्ड भेज कर माँ को श्रद्धा प्रसून भेंट कर देते हैं। किसी की माँ जीवित हो या न हो, अब तो लोग-एक-दूसरे को 'मदर्स डे' के बधाई पत्र भेज कर इस दिन की महानता का स्मरण करवाते रहते हैं। कई लोग इस दिन समाचार-पत्रों में विज्ञापन देकर सारे संसार को इस पवित्र दिवस का स्मरण भी करवाने लगे हैं।

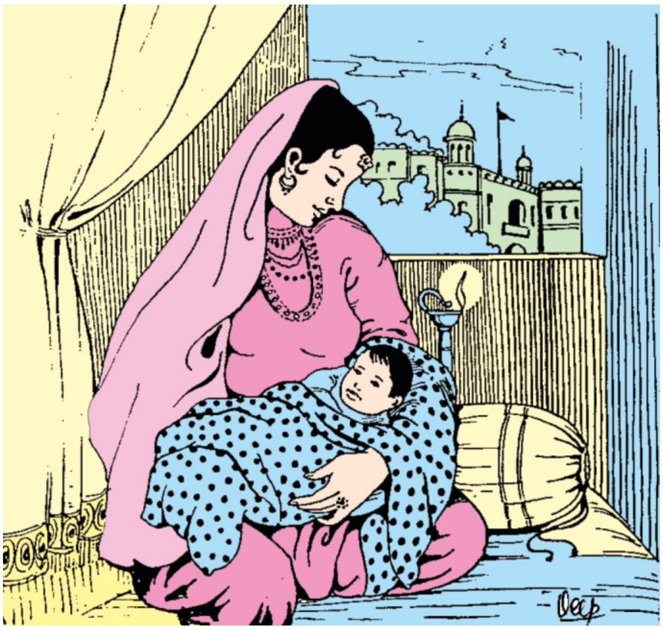

'मदर्स डे' के बधाई पत्रों में माता मेरी की गोद में बैठे बालक ईसा मसीह का चित्र बनाया जाता है। यही स्थिति समाचार-पत्र के विज्ञापन वाले पन्ने की होती है। दोनों में ही कोई वाक्य देकर माँ के प्यार का गुणगान किया जाता है। अंग्रेज़ी में छपे ऐसे मधुर वाक्यों में से एक का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत है :-

"माँ की गोद है बड़ी प्यारी
संसार के सब सुखों से न्यारी ।"

एक अंग्रेज़ी समाचार पत्र में बेटों और पुत्रवधुओं ने हिंदू होने पर भी अपनी विधवा माँ को स्मरण करते हुए विज्ञापन में लिखा था :

"भाभी जी ! आपने हमारे महान पिता श्री राम लाल जी ग्रोवर को खो देने पर भी अत्यंत साहस दिखा कर हमारा पालन-पोषण किया। हम आपके तथा पूज्य पिता जी के चरण चिह्नों पर चलने के लिए आशीर्वाद माँगते हैं।"

इस महान पर्व पर हमें सिक्ख गुरुद्वारों में गुरवाणी के मधुर रागियों के ये शब्द अपना रंग दिखाते प्रतीत होते हैं; जिसमें हर समय भगवान के भजन के साथ-साथ माँ के आशीर्वाद की महत्ता को भी दर्शाया गया है :

माता पूता की आशीष,
निमख न बिसरों तुम को
हर हर, सदा भजो जगदीश।

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

1. शब्दार्थ

मातृ देवो भव	=	माता को देवता (ईश्वर) समान समझ कर उपासना करो
सुविधा	=	सहूलियत
नियत	=	निश्चित
उपवास	=	व्रत
पारित	=	पास करा कर
ध्वज	=	झंडा
प्रतीक (प्रति + इक)	=	दूसरे की ओर झुका हुआ, चिह्न
स्वर्गवास	=	मर जाना
पुष्पादि	=	फूल आदि
प्रसून	=	फूल
स्मरण	=	याद
विज्ञापन	=	इश्तहार

आशीष	=	आशीर्वाद
निमख	=	निमष (एक पल)
बिसरो	=	भूलना
जगदीश	=	(जगत् + ईश) परमात्मा

2. निम्नलिखित शब्दों/मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग करें :–

खिल उठना	________	____
मातृ देवो भव	________	____
उपवास	________	____
जान लेवा	________	____
महिमा	________	____
ध्वज	________	____

3. रेखांकित

माँ बचपन से लेकर बुढ़ापे तक अपने बच्चों का ध्यान रखती है।

रेखांकित शब्द भाव वाचक संज्ञाएँ हैं, जो क्रमश: बच्चा और बूढ़ा (जाति वाचक संज्ञा) से बनी हैं। भाव वाचक संज्ञाएँ जातिवाचक संज्ञा की तरह सर्वनाम, विशेषण व क्रिया शब्दों से भी बनती हैं।

निम्नलिखित शब्दों से भाव वाचक संज्ञा बनाओ :-

शब्द	मूलरूप	भाववाचक संज्ञा
लड़का	जातिवाचक संज्ञा	__________
अपना	सर्वनाम	__________
भारी	विशेषण	__________
पराया	सर्वनाम	__________
मोटा	विशेषण	__________
युवा	विशेषण	__________
गिरना	क्रिया	__________
थकना	क्रिया	__________
मिलना	क्रिया	__________
सजना	क्रिया	__________

4. उसने अपनी माँ को कमल का फूल सच्चे हृदय से भेंट किया।

रेखांकित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखें –

माँ	=	________, ________, ________
कमल	=	________, ________, ________

फूल = ________, ________, ________

हृदय = ________, ________, ________

5. निम्नलिखित विग्रहों को समस्त पद में बदलें तथा समास का नाम लिखें :-

विग्रह	**समास**	**समास का नाम**
देवताओं की माता	देव माता	तत्पुरुष समास
स्वर्ग में वास	________	________
दादी और नानी	________	________
राष्ट्रपति	________	________
आदर और सत्कार	________	________
बेटा और बेटी	________	________
भाई और बहन	________	________
रोम का वासी	________	________
माता की उपासना	________	________
माता का दिवस	________	________

6. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग अलग करें :-

उपवास = ________

अनुवाद = ________

विज्ञापन = ________

अनुसार = ________

विचार = ________

प्रयत्न = ________

7. निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय अलग-अलग करके लिखें :-

गुलाबी = ________

यूनानी = ________

महानता = ________

मुस्कराहट = ________

पवित्रता = ________

8. प्रयोगात्मक व्याकरण(i) सम् + मान = सम्मान

उपर्युक्त उदाहरण में 'म्' के बाद 'म' होने के कारण उसे द्वित्व हो गया है।

अतएव व्यंजन संधि के नियमानुसार म् के बाद 'म' हो तो द्वित्व हो जाता है। अन्य उदाहरण-सम् +मति = सम्मति

(ii) सम् + सार = संसार

उपर्युक्त उदाहरण में म् के बाद स होने के कारण म् को अनुस्वार हो गया है।

अन्य उदाहरण- सम् + पूर्ण = सम्पूर्ण

सम् + योग = संयोग

सम् + लाप = संलाप

सम् + वाद = संवाद

सम् + कल्प = संकल्प

सम् + रचना = संरचना

सम् + शय = संशय

सम् + हार = संहार

अतएव म् के बाद क से भ तथा य, र, ल, व, श, ष, स, ह में से कोई व्यंजन हो तो म् को अनुस्वार हो जाता है। अपवाद = सम् + राट = सम्राट = सम्राट में अनुस्वार नहीं लगता।

(ख) विचार बोध

1. उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरें :-

(i) मदर्स डे का आरम्भ -------- में हुआ था। (यूनान, अमेरिका, स्वीडन)

(ii) अमेरिका के राष्ट्रपति वुडरो विलसन ने ------ को प्रस्ताव पास करवा कर मातृ दिवस मनाने की घोषणा की थी। (सन् 1908, 1915, 1914)

(iii) सफेद फूल प्यारी माँ के ------- को प्रकट करता है। (मधुर व्यवहार, हृदय की पवित्रता, कष्ट सहने की क्षमता)

(iv) अमेरिका में सभी बच्चे मई महीने के ------ को मातृदिवस मना लेते हैं। (इतवार को, 8 तारीख, दूसरे शुक्रवार)

(v) कई लोग ------- भेजकर माता को स्मरण करते हैं।
(समाचार पत्र में विज्ञापन, संदेश, बधाई पत्र)

2. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(i) 'माँवाँ ठंडीआँ छावाँ' कहावत किस भाषा की है?

(ii) हमारे ऋषि-मुनियों ने माता की महिमा कैसे व्यक्त की है?

(iii) 'मातृ-दिवस' का आरंभ किस देश से हुआ?

(iv) 'मदर्स-डे' के बधाई पत्रों में किसका चित्र बनाया होता है?

3. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(i) यूनान में मातृदिवस मनाने की प्रथा कब, क्यों और कैसे आरम्भ हुई?

(ii) ईसाई धर्म का प्रचार होने पर इसे कब, कहाँ और कैसे मनाया जाने लगा?

(iii) अमेरिका में मातृदिवस का श्रीगणेश किस महिला ने कहाँ और कब किया?

(iv) माताओं को किन रंगों के फूल भेंट किये जाते हैं? वे अलग-अलग रंग क्या प्रकट करते हैं?

(v) माता के जीवित न होने अथवा माँ के दूर होने पर लोग मातृदिवस कैसे मनाते हैं?

(ग) रचना-बोध

'मातृ देवो भव' – मातृ हृदय मक्खन से भी कोमल होता है, वह स्वयं कष्ट झेल कर शिशु का लालन-पालन करती है। वह वात्सल्य और करुणा की मूर्ति है। **मातृ-महत्त्व** पर अपने विचार लिखो तथा मंच पर भाषण दें।

(घ) मनन और आचरण

(i) मातृ दिवस पर आप अपनी माँ को क्या सहयोग देंगे। अपने विचार लिखें।

(ii) आज आधुनिकता की दौड़ में युवा वर्ग अपने बुजुर्गों से दूर होता जा रहा है। दूरी बढ़ने से माता-पिता घर में एकांकी जीवन जीने पर मज़बूर हैं। आप अपने माता-पिता के लिए क्या कर सकते हैं ताकि उन्हें वृद्धाश्रम का रास्ता न देखना पड़े।

पाठ-12

चन्द्रशेखर आज़ाद

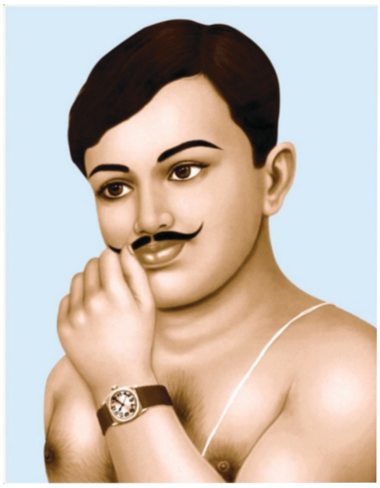

भारत देश 15 अगस्त 1947 को अंग्रेज़ों की ग़ुलामी से आज़ाद हुआ। यह आज़ादी हमें यूँ ही नहीं मिल गयी। इसके लिए न जाने कितनी स्त्रियाँ विधवा हुईं, कितने बच्चे अनाथ हुए, कितने माता-पिता ने अपने बच्चों को गँवाया। भाइयों ने बहनों को खोया तथा न जाने कितनी बहनों की राखी के लिए कलाइयाँ सूनी पड़ गयीं। जिन देशभक्तों ने देश की आज़ादी के लिए अपना बलिदान दिया, उन्हें देश भुला नहीं सकता। ऐसे अमर शहीदों की एक बहुत लंबी सूची है। इसी सूची में एक नाम है-चन्द्रशेखर आज़ाद। ये एक ऐसे क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानी हुए हैं, जिनके नाम मात्र से ही ब्रिटिश शासन काँप उठता था।

चन्द्रशेखर आज़ाद का जन्म 23 जुलाई, 1906 ई. मध्यप्रदेश के झाबुआ ज़िले में भांवरा नामक गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम पंडित सीताराम तिवारी तथा माता का नाम जगरानी देवी था। इन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में प्राप्त की और बड़े होने पर संस्कृत के अध्ययन के लिए वे बनारस चले गए। इस समय चन्द्रशेखर आज़ाद की उम्र चौदह वर्ष की थी। समाचार-पत्रों में अंग्रेज़ों द्वारा भारतीयों पर हो रहे अत्याचारों की ख़बरों को पढ़कर उनका खून खौल उठता था। मन ही मन में अंग्रेज़ों के प्रति नफरत और देश के प्रति प्यार की भावना उनमें बढ़ने लगी। जहाँ कहीं भी अंग्रेज़ों के खिलाफ आंदोलनकारी सभाएँ करते व जुलूस निकालते, आज़ाद इनमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते। इस समय वे मन ही मन देश को आज़ाद करवाने के लिए तड़पने लगे थे।

एक दिन अंग्रेज़ी शासन के पुलिसकर्मियों द्वारा आंदोलनकारियों को डंडों से पीटा जा रहा था और बड़ी ही निर्ममता से घसीटा जा रहा था। चंद्रशेखर से यह सब नहीं देखा गया और उन्होंने एक पुलिस अधिकारी के माथे पर ज़ोर से पत्थर दे मारा। पुलिस अधिकारी लहूलुहान हो गया। हालांकि चन्द्रशेखर तुरंत वहाँ से फरार हो गए किंतु एक पुलिस कर्मी ने उन्हें पहचान लिया था क्योंकि चन्द्रशेखर अपने मस्तक पर चंदन का टीका लगाते थे और पुलिस कर्मी को यह याद रह

गया कि जिसने पत्थर मारा उसने माथे पर चंदन का टीका लगा रखा था। सारे नगर की तलाशी के बाद आखिरकार पुलिस चन्द्रशेखर को ढूँढ़ती-ढूँढ़ती उनके घर तक पहुँच गयी। पुलिस ने घर पहुँचते ही उन्हें पहचान लिया और फौरन हथकड़ियाँ लगा दी। इसके बाद उन्हें थाने ले जाया गया और रात को हवालात में रखा गया।

अगले दिन उन्हें मजिस्ट्रेट के सामने ले जाया गया। मजिस्ट्रेट बहुत ही कठोर स्वभाव वाला था। मजिस्ट्रेट द्वारा पूछे जाने पर उन्होंने बड़ी ही निडरता से अपना नाम आज़ाद, पिता का नाम स्वतंत्र तथा घर का नाम जेलखाना बताया। इस बात से क्रोधित होकर मजिस्ट्रेट ने आज़ाद को पन्द्रह बेंतों का कठोर दंड दिया। जल्लाद उन्हें ज़ोर-ज़ोर से बेंत मारता जा रहा था और जेलर गिनता जा रहा था। आज़ाद की पीठ पर बड़े-बड़े घाव हो गए थे, लहू बह रहा था किन्तु उस समय भी उस वीर आज़ाद के मुँह से 'वंदे मातरम्' तथा 'भारत माता की जय' के नारे निकल रहे थे। जेल से रिहा होने के बाद लोगों ने एक सभा बुलाकर उनका स्वागत किया। इसी घटना से वे एक क्रांतिकारी नेता बन गए और चन्द्रशेखर से चन्द्रशेखर आज़ाद के रूप में जाने लगे।

चन्द्रशेखर आज़ाद वीर और साहसी तो थे ही, इसके साथ एक कुशल संगठनकर्ता भी थे। आज़ाद चाहते थे कि स्वतंत्रता आन्दोलन में अधिक से अधिक लोग उनके साथ जुड़ें ताकि जल्द से जल्द देश को गुलामी की जंज़ीरों से आज़ाद करवाया जाये। इसके लिए उन्होंने अंग्रेज़ी हकूमत के अत्याचारों के विरुद्ध गुप्त तरीके से बड़ी ही कुशलता से मंदिरों, मस्जिदों, स्कूलों, कार्यालयों आदि में परचे बाँटे। धीरे-धीरे लोग उनसे जुड़ने शुरू हो गए। क्रांतिकारियों का एक बड़ा दल तैयार हो चुका था। सभी जान हथेली पर रखकर स्वतंत्रता के महासंग्राम में कूदने को लालायित रहते। अंग्रेज़ों के पास अपार शक्ति थी। इस क्रांतिकारी दल के पास अंग्रेज़ों का सामना करने के लिए हथियारों की कमी थी। धन का अभाव हथियारों को खरीदने व अन्य क्रांतिकारी गतिविधियों में आड़े आने लगा। इसलिए क्रांतिकारियों ने धन की कमी के चलते अंग्रेज़ी सरकारी खजाने को लूटने की योजना बनायी। 9 अगस्त 1925 को एक दिन उन्होंने योजना बनाकर लखनऊ के निकट काकोरी में ट्रेन को रोककर सरकारी खज़ाना लूट लिया। आज़ाद के साथी अशफाक उल्ला, राम प्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र लाहिड़ी, रोशन सिंह को इस काँड में शामिल होने पर फाँसी चढ़ा दिया गया। राम प्रसाद बिस्मिल तो एक अच्छे शायर भी थे। जब उन्हें फाँसी हुई तो उनके मुँह से निकला-

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले
वतन पर मरने वालों का, यही बाकी निशाँ होगा।

इसके बाद चन्द्रशेखर आज़ाद झाँसी के पास ढिकनपुरा गाँव के जंगलों में ब्रह्मचारी वेश में हरिशंकर नाम से रहने लगे। पुलिस उनका पीछा करती रही किंतु वे उनके हाथ नही आए। भटकते-भटकते और मन में देश को स्वतंत्रता दिलाने का जज़्बा लिए एक दिन वे महान क्रांतिकारी वीर सावरकर से मिले। आज़ाद की ही तरह वीर सावरकर से भी पुलिस थर-थर काँपती थी। यहाँ इनकी भेंट पंजाब के वीर सपूत भगतसिंह से हुई। जहाँ एक ओर अपने साथियों को फाँसी हो जाने पर आज़ाद निराश थे वहीं इनसे मिलकर उनके जज़्बे को बल मिला। इधर जब साइमन कमीशन

के विरोध में लाला-लाजपतराय शहीद हुए तो सभी क्रांतिकारियों ने अंग्रेज़ों से इसका बदला लेने की ठान ली। फलस्वरूप आज़ाद, भगतसिंह, राजगुरु तथा जयगोपाल आदि क्रांतिकारियों ने लाहौर के पुलिस अधीक्षक स्कॉट को मारने की योजना बनायी किंतु एक दिन सहायक अधीक्षक सांडर्स को इन क्रांतिकारियों ने स्कॉट समझ कर मार गिराया जिससे अंगेज़ पुलिस एकदम बौखला उठी। इसके बाद अंग्रेज़ सरकार की गलत नीतियों के विरोध में सरदार भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने 8 अप्रैल 1929 को केंद्रीय विधानसभा में बम फेंका और 'इंकलाब ज़िंदाबाद' का नारा लगाकर अपनी गिरफ्तारी दी। इसके फलस्वरूप सरकार ने अभियोग चलाकर भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव को फाँसी दे दी तथा बटुकेश्वर दत्त को काला पानी की सज़ा दे दी गयी, किन्तु पुलिस चन्द्रशेखर आज़ाद को अभी तक गिरफ्तार न कर सकी थी। उधर चन्द्रशेखर का भी यही प्रण था कि जब तक मैं ज़िंदा हूँ, तब तक अंग्रेज़ सरकार मुझे पकड़ नहीं पाएगी।

चन्द्रशेखर आज़ाद को एक ओर जहाँ अपने वीर साथियों बिस्मिल, भगतसिंह, राजगुरु सुखदेव आदि के बिछुड़ जाने का गम था वहीं दूसरी ओर वे यह भी सोच रहे थे, कि फिर से नए दल का संगठन करके लोगों को स्वाधीनता संग्राम के साथ जोड़ा जाए।

इधर अंग्रेज़ सरकार के लिए चन्द्रशेखर आज़ाद सिरदर्द बने हुए थे, पुलिस से जब आज़ाद को सीधे तरीके से नहीं पकड़ा गया तो उन्होंने उनके एक साथी तिवारी को लालच देकर अपनी तरफ मिला लिया। एक दिन 27 फरवरी 1931 को सुबह आज़ाद तिवारी के साथ इलाहाबाद के अलफ्रेड पार्क में बैठे थे, कि अचानक उन्होंने देखा कि उन्हें अंग्रेज़ पुलिस ने चारों तरफ से घेर लिया है। दरअसल पुलिस तिवारी का पीछा करते-करते ही आज़ाद तक पहुँच चुकी थी। तिवारी ने चन्द्रशेखर के साथ विश्वासघात किया था। तिवारी आज़ाद के सामने नाटक करने लगा कि अब हम पुलिस से घिर चुके हैं, क्या करें? आज़ाद ने कहा, तुम जल्दी से यहाँ से निकल जाओ। मैं अंग्रेज़ों से निपटता हूँ। तिवारी ने तुरंत भागकर अपनी जान बचायी। अकेले चन्द्रशेखर ने बड़ी निडरता से अंग्रेज़ पुलिस का सामना किया।

इस प्रकार चन्द्रशेखर आज़ाद जब तक जिये, आज़ाद ही जिये। उनके जीते जी अंग्रेज़ पुलिस उन्हें न पकड़ सकी। उनकी अंग्रेज़ों में इतनी दहशत थी कि वे उनके शव के पास जाते हुए भी डरते थे। उन्होंने पहले शव पर गोलियाँ चलायीं और जब उन्हें यकीन हो गया कि सचमुच आज़ाद ज़िंदा नहीं है तभी वे बिल्कुल पास गए। इस प्रकार 27 फरवरी 1931 को भारत का यह वीर सपूत वीरगति को प्राप्त हुआ और उन्होंने अपने इस प्रण को पूरा किया कि उनके जीवित रहते कोई उनके शरीर को छू तक नहीं सकता। भारत देश उन्हें सदैव नमन करता रहेगा।

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

1. शब्दार्थ

संगठनकर्ता = संगठन करने वाला   अधीक्षक = प्रधान अधिकारी

अभियोग	=	मुकद्दमा	स्वाधीनता	=	आज़ादी
विश्वासघात	=	धोखा	अध्ययन	=	पढ़ाई
नफरत	=	घृणा	सदैव	=	हमेशा

2. इन शब्दों में से उपसर्ग छाँटकर लिखें :-

अनाथ = ________

अत्याचार = ________

अभियोग = ________

निर्ममता = ________

प्रहार = ________

निराशा = ________

परिवार = ________

3. इन मुहावरों को इस तरह वाक्यों में प्रयोग करें ताकि उनके अर्थ स्पष्ट हो जायें :-

खून खौल उठना ________ ________________________________

जान हथेली पर रखना ________ ________________________________

थर-थर काँपना ________ ________________________________

ठान लेना ________ ________________________________

सिरदर्द बनना ________ ________________________________

वीरगति को प्राप्त होना ________ ________________________________

4. निम्नलिखित शब्दों के प्रत्यय अलग करके लिखें :-

गुलामी = ________

आज़ादी = ________

क्रांतिकारी = ________

स्वतंत्रता = ________

भारतीय = ________

धोखेबाज़ = ________

देखकर = ________

खोया = ________

5. निर्देशानुसार शब्द भरकर वाक्य पूरे करें :

(i) चन्द्रशेखर आज़ाद .... (विशेषण) और ....(विशेषण) थे।

(ii) ....(व्यक्तिवाचक संज्ञा) 15 अगस्त 1947 को अंग्रेज़ों की .... (भाववाचक संज्ञा) से आज़ाद हुआ।

(iii) ....(सर्वनाम) अपनी प्रारंभिक शिक्षा गाँव की .... (जातिवाचक संज्ञा) से प्राप्त की।

(iv) मजिस्ट्रेट बहुत ही ....(विशेषण) स्वभाव वाला था।

(v) चन्द्रशेखर अपने .... (अधिकरण कारक) चंदन का .... (कर्म कारक) लगाते थे।

6. विपरीत शब्द लिखें :-

स्वतंत्रता	=	________	नफरत	=	________
कठोर	=	________	निडरता	=	________
सज़ा	=	________	बचाना	=	________
जीवित	=	________	सपूत	=	________
विश्वासघात	=	________			

(ख) विचार-बोध

1. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(i) चन्द्रशेखर आज़ाद का जन्म कहाँ हुआ?

(ii) चन्द्रशेखर के माता-पिता का क्या नाम था?

(iii) मजिस्ट्रेट द्वारा पूछे जाने पर उन्होंने अपना व अपने पिता का नाम तथा घर का पता क्या बताया?

(iv) मजिस्ट्रेट ने चन्द्रशेखर को क्या दंड दिया?

(v) रामप्रसाद बिस्मिल को जब फाँसी हुई तो उनके मुँह से क्या निकला?

(vi) सरदार भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने केंद्रीय विधानसभा में बम कब फेंका?

(vii) चन्द्रशेखर आज़ाद कब शहीद हुए?

2 इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(i) चन्द्रशेखर ने पुलिसकर्मी के माथे पर पत्थर क्यों मारा था?

(ii) चन्द्रशेखर को चन्द्रशेखर आज़ाद क्यों कहा जाता है?

(iii) चन्द्रशेखर एक कुशल संगठनकर्ता थे। कैसे?

(iv) भगतसिंह तथा बटुकेश्वर दत्त ने विधानसभा में बम क्यों फेंका?

(v) चन्द्रशेखर के जीवन से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

(ग) रचना-बोध

* चन्द्रशेखर आज़ाद की जीवनी पुस्तकालय से लेकर पढ़ें।
* मातृभूमि के लिए शहीद होने वाले अन्य देशभक्तों के बारे में पता करें।

पाठ-13

नमन देश के जवानों को

नमन देश के जवानों को, सपूतों को, परवानों को।
डटे हैं जो देश की सीमाओं पर,
भारी है जो दुश्मनों की सेनाओं पर,
खाक में मिलाते हैं वो शत्रुओं के अरमानों को,
नमन देश के जवानों को, सपूतों को, परवानों को।

पहाड़ हो, नदी हो, रेगिस्तान हो,
खाई हो, समुद्र हो, जंगल अनजान हो,
चुनौती ही स्वीकारते हैं वो व्यवधानों को,
नमन देश के जवानों को, सपूतों को, परवानों को।

तिरंगे के सम्मान में, हम सिर झुकाते हैं,
तिरंगे की शान में वो सैल्यूट बूट ठोक कर लगाते हैं,
सलाम उनके जोश, जज़्बों की उड़ानों को,
नमन देश के जवानों को, सपूतों को, परवानों को।

भारत के उज्ज्वल कल के लिए अपना आज मिटाते हैं,
रणभूमि में कभी पीठ नहीं दिखलाते हैं,
कैसे याद नहीं रखें, उनके अहसानों को,
नमन देश के जवानों को, सपूतों को, परवानों को।

शत्रु को पस्तकर, छठी का दूध याद दिलाते हैं
अपना सर रहे न रहे, भारत का माथा चमकाते हैं,
कैसे भूल जाएँ उनके बलिदानों को?
नमन देश के जवानों को, सपूतों को, परवानों को।

शौर्य और वीरता से फ़र्ज़ निभाते हैं,
परमवीर, महावीर, वीरचक्र पुरस्कार पाते हैं,
करते है जाबाज़ बेमिसाल कारनामों को,
नमन देश के जवानों को, सपूतों को, परवानों को।

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

1. शब्दार्थ

इच्छा	=	आकांक्षा	व्यवधान	=	रुकावटें
जज़्बा	=	जोश	रणभूमि	=	युद्ध का मैदान
अहसान	=	उपकार	कारनामे	=	कार्य

2. इन मुहावरों के अर्थ समझते हुए वाक्यों में प्रयोग करें :-

खाक में मिलाना = नष्ट करना =________________________________

सिर झुकाना = सम्मान करना/नमन करना/अधीनता स्वीकार करना

____

अपना आज मिटाना = अपने सुख-दु:ख की परवाह न करना = ________________

छठी का दूध याद आना = कठिनाई का अनुभव होना =________________________

माथा चमकाना = नाम रोशन करना =______________________________

फर्ज़ निभाना = कर्त्तव्य पूरा करना =______________________________

(ख) विचार-बोध

1. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें:-

(i) इस कविता में किन्हें नमन किया गया है?

(ii) देश के जवान सीमाओं की रक्षा कैसे करते हैं?

(iii) देश के जवान चुनौती के रूप में किन्हें स्वीकार करते हैं?

(iv) भारत के उज्ज्वल कल के लिए देश के जवान क्या करते हैं?

(v) देश के जवान को कौन-कौन से पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता है?

2. **इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें:-**

(i) चुनौती ही स्वीकारते हैं वो व्यवधानों को, इस काव्य-पंक्ति का अर्थ स्पष्ट करें।

(ii) सप्रसंग व्याख्या करें:-

भारत के उज्ज्वल ....परवानों को ।

3. **विपरीत शब्द लिखें:-**

सपूत = __________

शत्रु = __________

अनजान = __________

आज = __________

4. **इन शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखें:-**

सपूत = __________

सीमा = __________

दुश्मन = __________

अरमान = __________

व्यवधान = __________

पहाड़ = __________

रेगिस्तान = __________

समुद्र = __________

जंगल = __________

5. **प्रयोगात्मक व्याकरण**

(i) उत् + ज्वल = उज्जवल (त् को ज्)

यदि 'त्' के बाद 'ज्' हो तो 'त्' को 'ज्' हो जाता है-

अन्य उदाहरण : - सत् + जन = सज्जन

(ii) उत् + चारण = उच्चारण (त् को च्)

यदि 'त्' के बाद 'च्' हो तो 'त्' को 'च्' हो जाता है-

अन्य उदाहरण : - सत् + चरित्र = सच्चरित्र

(iii) तत् + लीन = तल्लीन (त् को ल्)

यदि 'त्' के बाद 'ल्' हो तो 'त्' को 'ल्' हो जाता है -

अन्य उदाहरण : - उत् + लेख = उल्लेख

6. 'बेमिसाल' शब्द 'बे' + 'मिसाल' से बना है, जिसका अर्थ है जिसका कोई उदाहरण न हो, इसी प्रकार 'बे' लगाकर नये शब्द बनायें और उनके अर्थ भी लिखें:-

		शब्द	अर्थ
बे + कसूर	=	____________	____________
बे + रोज़गार	=	____________	____________
बे + रोक-टोक	=	____________	____________
बे + बुनियाद	=	____________	____________

(ग) रचना-बोध

(i) वीर जवान पर काव्य-पंक्तियाँ लिखें।

या

वीर जवान पर दस वाक्य लिखें।

(ii) सीमाओं पर लगाए जाने वाले नारे लिखें।

(iii) युद्ध के अतिरिक्त अन्य कौन-सी स्थितियों में वीर जवानों की सहायता ली जाती है? लिखें।

पाठ-14

बुद्धि बल

(1)

मुगलकाल की सत्य घटना है कि एक दिन औरंगज़ेब ने अपने सेनापति दिलेर खाँ को बुलाकर कहा - ''सेनापति! सचमुच कितना सुंदर है तुम्हारा नाम-दिलेर खाँ अर्थात् वीर, बहादुर और साहसी जवान। दिलेर खाँ, मैं तुम्हें सच्चा बहादुर तब समझूँगा, जब तुम शिवाजी को जीवित पकड़कर मेरे दरबार में उपस्थित करोगे। ''

दिलेर खाँ ने सिर झुकाकर निवेदन किया-''जहाँपनाह! यदि आप हुक्म दें तो मैं पहाड़ से भी टकरा सकता हूँ। जलती आग में भी कूद सकता हूँ और जंगल के भूखे शेर से भी कुश्ती लड़ सकता हूँ। किन्तु....सच कहूँ-शिवा.....जी ....को जीवित पकड़ना ....एक टेढ़ी खीर है।''

औरंगज़ेब- जिसका नाम ही दिलेर खाँ हो, उसके मुँह से कायरता की ये बातें शोभा नहीं देतीं। यदि तुम्हारे लिए शिवाजी टेढ़ी खीर है तो किसके लिए यह सरल है?

दिलेर खाँ- राजा जयसिंह के लिए ।

औरंगज़ेब- क्या राजा जयसिंह को तुम अपने से अधिक बहादुर समझते हो?

दिलेर खाँ- वह मुझसे अधिक बहादुर हो या न हो। किन्तु उसमें एक ऐसा गुण है जो न मुझमें है; न आपके मामा शाइस्ताखाँ में है और न अफजलखाँ में था।

औरंगज़ेब-वाह! वह ऐसा कौन-सा अद्भुत गुण है जिसके कारण केवल जयसिंह ही शिवाजी को जीवित पकड़ सकता है?

दिलेर खाँ- जहाँपनाह! जयसिंह हिन्दू है और शिवाजी भी हिन्दू हैं। जैसे एक ज़हर दूसरे ज़हर को काटता है वैसे ही एक हिन्दू को दूसरा हिंदू ही काट सकता है। इसलिए यदि आप शिवाजी को जीवित पकड़वाना चाहते हैं तो हिन्दू को हिंदू से लड़वा दीजिए। शिवाजी उसकी पकड़ में अवश्य आ जायेंगे।

औरंगज़ेब- कैसे ! क्या तलवार से?

दिलेर खाँ- नहीं, छल से! यदि राजा जयसिंह शिवाजी को यह विश्वास दिला दे कि वे एक बार आगरा के दरबार में उपस्थित हो जायें तो उन्हें एक स्वतंत्र राजा मान लिया जाएगा, तो जयसिंह के एक हिन्दू होने के कारण शिवाजी उसकी बात पर अवश्य विश्वास कर लेंगे और जयसिंह के साथ आपके दरबार में उपस्थित भी हो जायेंगे।

औरंगज़ेब- बस, बस! आगे मैं समझ गया। जब एक बार जंगल का आज़ाद पंछी मेरे आँगन में दाना चुगने आ जाये तो फिर भला वह मेरे चंगुल में फँसे बिना कैसे जा सकता है। हिंदुओं में यह एक पुरानी आदत है-'घर का भेदी लंका ढाये!' दिलेर खाँ! सचमुच, तुम्हारी यह सलाह हमें

बहुत पसंद आई है। हम चाहते हैं-शिवाजी को पकड़ने के लिए राजा जयसिंह के साथ तुम भी अवश्य जाओ। एक और एक ग्यारह हो जायेंगे। बुद्धि तुम्हारी काम करेगी और जोर जयसिंह का। नाम तुम्हारा होगा और काम जयसिंह का।

दिलेर खाँ ने मुस्कराकर पूछा-''और इनाम किसका होगा, जहाँपनाह!''

औरंगज़ेब ने दिल खोलकर कहा-''हम तुम्हें मुँहमाँगा इनाम देंगे, दिलेर खाँ! लेकिन इस बार तुम खाली हाथ वापस मत लौटना!''

दिलेर खाँ- अगर मेरा नाम दिलेर खाँ है तो मैं शिवाजी को अवश्य अपने साथ लेकर आपके दरबार में उपस्थित होऊँगा!

इस प्रकार शिवाजी को चिकनी-चुपड़ी बातों से विश्वास के जाल में फँसाने के लिए ये दोनों छलिया सेनापति एक बहुत बड़ी सेना लेकर आगरा से चल पड़े।

(2)

जिस छत्रपति शिवाजी को, न अफजलखाँ का लंबा- चौड़ा शरीर जीत सका और न शाइस्ताखाँ की अनगिनत सेनाएँ हरा सकीं, वही शिवाजी राजा जयसिंह के विश्वास में आकर सचमुच औरंगज़ेब के दरबार में उपस्थित हो गए। जयसिंह ने विश्वास दिलाया था कि औरंगज़ेब शिवाजी का वैसे ही स्वागत करेगा जैसे एक राजा दूसरे राजा का करता है। किन्तु इसके विपरीत ज्योंही शिवाजी ने राजदरबार में कदम रखा, त्योंही औरंगज़ेब ने व्यंग्य का पहला तीर मारा-'क्या यही है वह पहाड़ी चूहा जो रात को चोरी-चोरी हमारे खज़ानों को कुतर डालता है? यदि इसे पिंजरे में न डाला तो वह बहुत तबाही मचायेगा।' इसलिए दिलेर खाँ, हम हुक्म देते हैं कि ''इसे बंदी बनाकर आगरा के किले में कैद कर लिया जाए। कैदी के चारों ओर सैनिकों का कड़ा पहरा बिठा दिया जाए। कैदी की निगरानी में पूरी सख्ती बरती जाए। हर दरवाज़े पर पहरेदार हो। ऊपर भी पहरेदार, नीचे भी पहरेदार। अंदर भी पहरेदार, बाहर भी पहरेदार। पहरेदार पर भी पहरेदार। पहरेदारों पर भी बड़े अफ़सर। फिर अफसरों पर भी अफसर। इस तरह पूरी एक सेना आगरे के चारों ओर तैनात कर दी जाए ताकि न अंदर से कोई बाहर जा सके, न बाहर की एक चिड़िया भी अंदर फटक सके।''

इस प्रकार शिवाजी आगरा के कैदखाने में सख्त कैद के दिन काटने लगे।

(3)

आगरा के किले में शिवाजी का शरीर बंदी था, बुद्धि नहीं। उनके हाथ-पैर एक कोठरी में बंद थे। किन्तु उनकी बुद्धि स्वतंत्र थी। उनके चारों ओर सैकड़ों पहरेदार खड़े थे, जो उन्हें अपनी कोठरी से एक कदम भी बाहर निकलने से रोक सकते थे। किन्तु उनकी बुद्धि पर उन पहरेदारों का भी कोई बस न था। वे अब भी अपने विचारों के पंखों पर उड़कर जेल की कोठरी से बाहर निकल जाते और वहाँ से भागने का रास्ता और उपाय सोचा करते थे।

शिवाजी ने अपने मन ही मन में कहा - औरंगज़ेब ! तूने मुझे छल से पकड़ा है। मैं भी तुझे

छल कर आगरा के किले से बाहर न निकल गया तो मेरा नाम नहीं। तूने मुझे धोखा दिया है। मैं भी तुझे धोखा दूँगा। तेरे सेनापतियों ने मेरे साथ विश्वासघात किया है। मैं भी तेरे इन सैकड़ों पहरेदारों की आँखों में धूल झोंककर इस बंदीघर से निकलकर दिखा दूँगा। जैसे के साथ तैसा करना चाहिए। अब तू मुझे रोक सकता है तो रोक ले।

इस प्रकार शिवाजी ने मन ही मन वहाँ से भागने का उपाय सोच लिया था।

संयोगवश वह अप्रैल का महीना था– वही महीना जिसमें शिवाजी का जन्म हुआ था। अपना जन्मदिन मनाने का बहाना करके अगले ही दिन शिवाजी ने यह घोषणा कर दी – ''10 अप्रैल को मेरा जन्मदिन है। इस उपलक्ष्य में मैं दस दिन तक लोगों को फल, फूल, मिठाइयाँ और अन्न का दान करूँगा। मुझे यह दान करने की इज़ाजत होनी चाहिए।''

पहरेदारों ने और स्वयं औरंगज़ेब ने भी सोचा– 'चलो, शाही कैदी को अपना जन्मदिन मना लेने दो। फल और मिठाइयाँ मँगवाने–भिजवाने में क्या डर है!'

बस, शिवाजी को दान–पुण्य करने की खुली इज़ाजत मिल गई। हर रोज़ फलों, फूलों, मिठाइयों और अनाजों से भरे हुए दस–दस, बीस–बीस, बड़े–बड़े टोकरे आगरा में आने लगे। शिवाजी भवानी माँ की पूजा करके उन वस्तुओं को अपने हाथ से छू–भर देते थे। फिर कुछ फल पहरेदारों में बाँट दिये जाते। उन्हें मिठाइयाँ भी भरपेट मिलने लगीं। वे अपने बीवी–बच्चों के लिए भी घर ले जाने लगे। इससे पहरेदारों की भी मौज बन गई। लाने–वालों की भी मौज, खाने वालों की भी मौज और मँगवाने वालों की मौज तब बनी जब एक दिन शिवाजी मिठाई के टोकरे में छिपकर जेल से भाग निकले।

किले से कुछ दूर एक तेज़ घोड़ा पहले से ही तैयार खड़ा था। ज्यों ही शिवाजी का टोकरा वहाँ पहुँचा त्योंही वे मिठाई के नीचे से निकलकर घोड़े पर सवार हो गये और एड़ी लगाते ही उनका घोड़ा हवा से बातें करने लगा।

पहरेदारों को जब होश आया तब उन्होंने शिवाजी की कोठरी में झाँककर देखा तो पंछी पिंजरे से उड़ चुका था।

अन्य पक्षी तो अपने पंखों से उड़ते हैं किन्तु शिवाजी अपनी बुद्धिऔर सूझबूझ के सहारे जेल की कोठरी से उड़कर अपने किले में वापस पहुँच गए।

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

1 **शब्दार्थ**

उपस्थित	=	(उप+स्थित) पास खड़े होना
कायरता	=	डर
छल	=	धोखा
स्वतंत्र	=	(स्व = अपने, तंत्र = अधीन) आज़ाद
विश्वासघात	=	विश्वास करने वाले के साथ धोखा
घोषणा	=	मुनादी (ऊँचे स्वर में सूचना)
उपलक्ष्य	=	प्रयोजन
इज़ाजत	=	मंजूरी

2. **इन मुहावरों और लोकोक्तियों का अर्थ लिखते हुए वाक्य में प्रयोग करें :-**

पहाड़ से टकराना ________ ____

आग में कूदना ________ ____

नाम होना ________ ____

चंगुल में फँसना ________ ____

चिकनी-चुपड़ी बातें ________ ____

जाल में फँसाना ________ ____

विचारों के पंखों पर उड़ना________ ____

धोखा देना ________ ____

हवा से बातें करना ________ ____

टेढ़ी खीर ________ ____

एक और एक ग्यारह होना________ ____

घर का भेदी लंका ढाए ________ ____

जैसे के साथ तैसा ________ ____

3. **लिंग बदलो :-**

टोकरा = ________

घोड़ा = ________

चूहा = ________
शेर = ________
पहाड़ = ________

4. **विपरीत शब्द लिखें:-**

सत्य = ________
जीवित = ________
उपस्थित = ________
बहादुर = ________
विश्वास = ________
स्वतंत्र = ________
पसंद = ________
इनाम = ________
जीत = ________
बंदी = ________

(ख) विचार-बोध

1. **इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें:-**

(i) दिलेर खाँ ने औरंगज़ेब से शिवाजी को जीवित पकड़ने के लिए जयसिंह के किस गुण की ओर संकेत किया ?

(ii) औरंगज़ेब ने जयसिंह के साथ दिलेर खाँ को क्यों भेजना चाहा ?

(iii) जयसिंह ने शिवाजी को क्या विश्वास दिलाया था ?

(iv) औरंगज़ेब ने शिवाजी को दरबार में देखकर क्या कहा ?

(v) जेल की कोठरी से बाहर निकलने के लिए शिवाजी ने मन में क्या सोचा ?

2. **इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें:-**

(i) दिलेर खाँ और औरंगज़ेब ने शिवाजी को जीवित पकड़ने के लिए क्या नीति अपनाई ?

(ii) शिवाजी को किस प्रकार बंदी बनाया गया ?

(iii) शिवाजी किस प्रकार जेल की कोठरी से भागे ?

(ग) रचना बोध

(i) **अभिनय :** यह एक संवादात्मक कहानी है। स्कूल के वार्षिक उत्सव पर इसे एकांकी के रूप में मंचन करें।

(ii) अपने जन्मदिन पर कुछ ऐसा करने का सोचें जिससे आपकी बुद्धि की चारों ओर प्रशंसा हो।

पाठ-15

माँ का लाल

पात्र

रमा	:	एक अधेड़ स्त्री
माधव	:	रमा का 15 वर्षीय पुत्र
सोहनलाल	:	माधव का पिता

पार्टी के सभापति, फौजी, पुलिस वाले, गाँव वाले इत्यादि।

(एक मामूली कस्बा। एक मामूली दर्ज़े की झोपड़ी में रमा, एक अधेड़ उम्र की स्त्री, रसोई में व्यस्त है। वह रसोई करती जाती है और बीच-बीच में घूम-घूम कर देखती जाती है। माधव का प्रवेश)

माधव : यह लो सौदा। पिताजी नहीं आए?

रमा : नहीं, वह तो अभी तक नहीं आए। आते ही होंगे। तू इतनी देर तक कहाँ था? सौदा क्या लाने गया, इतनी देर लगाई कि मानो पहाड़ खोद रहा हो।

माधव : **(कुछ झेंपकर)** मैं सौदा लेकर आने लगा तो उधर देखा कि बड़ी भीड़ है।

रमा : कोई बंदर नाच रहा होगा।

माधव : नहीं, माँ, बंदर नहीं नाच रहा था। सभा हो रही थी। वहाँ मैंने सुना कि गाँधीजी और सब नेता बंबई में कल, आठ अगस्त को रात को गिरफ्तार कर लिए गए।

रमा : **(आश्चर्य के भाव को दबाकर)** यह तो होता ही रहता है। कभी वह जेल में रहते हैं, कभी बाहर रहते हैं। वह महात्मा हैं, चाहे जहाँ रहें, जो करें, सब ठीक है, पर तू वहाँ क्या कर रहा था?

माधव : माँ, सिर्फ महात्मा गाँधी ही नहीं, हज़ारों और लोग भी गिरफ्तार हुए हैं। शहर में गिरफ्तारी हो रही है। **(खुश-सा होकर)** यहाँ भी होगी।

रमा : **(झुँझलाकर)** जब होगी तब होगी, हमें इन बातों से क्या? तू अपना काम कर।

(माधव एक बार माँ की तरफ देखता है। रमा खाना पकाती है। माधव के पिता सोहनलाल का प्रवेश। माधव और रमा दोनों अपना काम छोड़कर सोहनलाल के पास आते हैं। सोहनलाल पसीना-पसीना हो रहा है।)

सोहनलाल : (एक झोला रखते हुए) बड़ी मुश्किल से आ पाया। चारों तरफ अजीब- अजीब अफवाहें उड़ रही हैं। किसी ने कहा, रेल उड़ा दी जाएगी, इसलिए मैं लारी में आया।

रमा : क्यों रेल क्यों उड़ा दी जाएगी?

माधव : (जोश में) अंग्रेज़ों की जो है।

रमा : (माधव की बात को अनसुनी कर) रेलें तो सबके काम आती हैं, उनको उड़ाने में क्या तुक है?

सोहनलाल : तुक हो या न हो, इससे चारों ओर परेशानी मची हुई है। ज़िले के सारे अंग्रेज़ अफ़सर परेशान हैं कि न मालूम क्या हो।

माधव : पिताजी, अब क्या होगा?

सोहनलाल : होगा क्या, अंग्रेज़ सरकार से लड़ाई होगी। मालूम होता है कि अब की बार कुछ होकर ही रहेगा।

रमा : तब की बार भी ऐसा ही सुना था, कुछ हुआ तो नहीं।

माधव : हम किस तरफ हैं?

रमा : हम किसी तरफ नहीं है। हम छोटे आदमी हैं, हमें इन बातों से क्या मतलब?

माधव : पर पिताजी तो पार्टी के मेंबर हैं?

रमा : **(झिड़कती हुई)** जा, तू अपना काम कर। वह बाहर से आए हैं, हाथ-मुँह धोकर कुछ खाएँगे या तेरे साथ बातचीत करते रहेंगे।

(सोहनलाल एक बार लड़के को, फिर एक बार स्त्री को देखता है, फिर अंगोछा लेकर कुएँ की तरफ जाता है। रमा रसोई में लग जाती है।)

दूसरा दृश्य

(स्थान पार्टी का दफ़्तर। ऊपर तिरंगा झंडा लगा हुआ है। दफ़्तर के बाहर लोग मंडरा रहे हैं। माधव जाता है और एक भारी-भरकम नेता के सामने खड़ा हो जाता है।)

माधव : सभापति जी, मैं आपसे कुछ बात करना चाहता हूँ।

सभापति : क्या बात करना चाहते हो, बेटा? (कुछ सोचकर अनन्यमनस्क होता हुआ) पर हमें अभी फुरसत नहीं है। बहुत से काम करने हैं।

माधव : मैं काम ही के संबंध में आया था।

सभापति : (एकाएक दिलचस्पी लेता हुआ) क्या काम?

माधव : (कुछ झेंपता हुआ) कल आप सभा में कह रहे थे कि महात्मा जी 'करो या मरो' का नारा देकर जेल चले गए। मैं यह पूछने आया हूँ कि मैं भी कुछ कर सकता हूँ? (आशा के साथ सभापति की ओर देखता है)

सभापति : क्यों नहीं? यह तो ऐसा संग्राम है कि इसमें सभी कुछ न कुछ कर सकते हैं। तुम्हें यह किस्सा मालूम है न कि भगवान रामचंद्र ने लंका का जो पुल बाँधा था, उसमें गिलहरियों ने भी काम किया था।

माधव : (बहुत खुश होकर) तो कहिए, मैं कुछ कर सकता हूँ। आप मुझे कोई काम बताइए न?

सभापति : (एकाएक जैसे उसे कुछ याद आता है) मुझे जल्दी जाना है। ख़बर मिली है कि पुलिस की दौड़ आ रही है (कहकर एकाएक चलने लगता है) तुम जाकर पढ़ो-लिखो, अभी तुम्हारा यही काम है। स...म...झे?

तीसरा दृश्य

(स्थान : मैदान। कई बालक एकत्र हैं। समय रात का पहला पहर।)

माधव : गाँव के बहुत सारे नेता गिरफ्तार हो चुके हैं। जब-तब पुलिस की दौड़ आ रही है। हम लोगों के जी में भी है कि कुछ करें, पर कोई बताता ही नहीं। (निराश भाव से सिर पर हाथ मारता है)

एक बालक : यही बात तो मेरी समझ में नहीं आती है। स्कूल जाना तो छोड़ दिया। सारे स्कूल तो बंद भी हो गए।

माधव : पढ़ना तो अच्छा होता है, पर कई बार ऐसे मौके आते हैं कि पढ़ने से भी महत्वपूर्ण काम सामने आ जाते हैं। देश संकट में है, हम लोग भी कुछ करना चाहते हैं।

(एक अज्ञात व्यक्ति का अंधकार चीरकर प्रवेश)

अज्ञात व्यक्ति : तुम लोग काम करना चाहते हो? यह तो बहुत खुशी की बात है।

(सब बालक उसे घेर लेते हैं)

माधव : आप कौन है?

वह व्यक्ति : मैं चाहे कोई भी हूँ, इस समय मैं केवल एक सिपाही हूँ। मैं साम्राज्यवाद का शत्रु हूँ। मैं अंग्रेज़ों को यहाँ से निकालकर ही रहूँगा, क्योंकि देश की गरीबी तभी दूर हो सकती है, तभी भूखों को अन्न मिल सकेगा।

माधव : (एकाएक आगंतुक को पहचान कर) आप तो हमारे सभापति जी हैं।

सभापति : मैं जो भी हूँ, तुम लोगों की बात सुनकर बहुत खुश हूँ। तुम लोग देश के लिए बलिदान करने को तैयार हो, यह देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई है। अब देश स्वतंत्र होकर ही रहेगा।

माधव : (मचल जाता है) खुशी-खुशी जाने दीजिए, कोई काम बताइए। हम लोगों ने

अख़बारों में देखा, तो कुछ समझ में नहीं आया। अब आप ही कोई काम बताइए।

सभापति : काम बताता हूँ। तुम लोगों का काम है कि पुलिस वाले या फौजी इधर आएँ तो हमें उनकी खबर दो और उन्हें हमारी ख़बर लगने न दो। माधव,मैं तुम्हें लड़कों का नेता बनाता हूँ, तुम हमारे साथ चलो। तुम आकर सब ख़बर दिया करो। ये लड़के तुम्हारे अधीन काम करेंगे।

(माधव को लेकर सभापति का प्रस्थान और शेष लड़कों का तितर-बितर हो जाना।)

चौथा दृश्य

(गाँव से लगे मैदान में चारों ओर फौजी और पुलिस वाले दिखाई पड़ते हैं। एक अंग्रेज़ भी है। उसके पीछे गाँव वाले सिर नीचा किए हुए एक लाइन में बैठे हैं। उन सबके हाथ पीठ पीछे हैं, यद्यपि उनके हाथ बँधे हुए नहीं है। इनमें कुछ लडके भी हैं।)

एक फौजी : तुम लोग बताओ कि तोड़-फोड़ करने वाले कहाँ छिपे हैं? तुम लोगों को एक मिनट का समय दिया जाता है।

एक नागरिक : हुजूर, हम लोगों को तो कुछ भी मालूम नहीं है। हमारा खानदान तो हमेशा से अंग्रेज़ सरकार का नमकहलाल रहा है। गदर के जमाने में मेरे दादा ने अंग्रेज़ों की बड़ी मदद की थी। उनकी सनदें और तमगे मैं हजूर को दिखा चुका हूँ।

फौजी : उन सड़ी हुई सनदों से कुछ काम नहीं बनेगा। यह बताओ कि ये तोड़-फोड़ करने वाले खाना कहाँ से पाते हैं? सब लोगों की शरारत है। समय खत्म हो रहा है। (घड़ी देखता हुआ) समय खत्म हो गया।

(कोई कुछ नहीं बोलता।)

फौजी : (आगे बढ़कर, पहले से मुलायम स्वर में) मैं जानता हूँ कि तुम लोग दोषी नहीं हो, पर एक-दो के पाप के कारण सब लोग मारे जाओगे? इसलिए भला इसी में है कि तुम लोग उन लोगों की बात बताओ जो तोड़-फोड़ करने वालों की मदद करते हैं। नहीं तो सबकी शामत आ जाएगी। सभी को एक-एक घर जलाकर यहाँ से निकाल दिया जाएगा।

दूसरा आदमी : (खड़ा होकर) जब कोई कुछ नहीं कहता और जो लोग मदद देते हैं, उनमें इतना साहस नहीं है कि वे अपनी बात कहें, तो मैं ही बताता हूँ। (खाँसता है) यह लड़का माधव इस शरारत की जड़ है। यह गाँव वालों से खाना माँगकर उन्हें पहुँचाता है और ख़बरें देता और लेता है। इसके साथ और भी कई लड़के हैं, जिन्हें मैं नहीं जानता। **(कहकर माधव की ओर इशारा करता है)**

(फौजी माधव को निकालकर अलग कर देता है और उसकी तरफ दो फौजी आकर जगह लेते हैं।)

माधव : इन्होंने जो कुछ कहा वह ठीक है। मैं खुद ही खड़ा होने वाला था। गाँव को बचाने के लिए मैं अपनी जान आसानी से दे सकता हूँ। **मैंने जो कुछ किया, उस पर मुझे गर्व है।** मैं किसी का नाम नहीं बताऊँगा। जय भारत माता की जय !

(कहकर तेज़ी से कुछ बुकनी-सी निकालकर मुँह में डालता है और देखते ही देखते वहीं ढेर हो जाता है। सब लोग आश्चर्यचकित रह जाते हैं।)

फौजी : (संभलकर) लड़का बड़ा होशियार है। उसने जो किया, वह हमें ही करना पड़ता। खैर.. अब तुम लोग जा सकते हो।

(गाँव वाले उठकर धीरे-धीरे जाते हैं।)

पाँचवाँ दृश्य

(बहुत दिनों के बाद वही गाँव। मंच पर गाँधीजी और माधव का एक-एक चित्र रखा है)

सभापति : भाइयो, सब बोलने वालों ने यह कहा है कि माधव ने इस गाँव को बचाया, पर मैं तो यह कहता हूँ कि उसकी सेवाएँ इससे कहीं ज्यादा हैं। उसी की तरह के लोगों के कारण, फरजंदों के कारण भारत माँ की बेड़ियाँ खनखना कर गिर पड़ीं, देश स्वतंत्र हुआ। गाँव तो बच गया पर इस गाँव में जो सबसे अच्छी चीज़ थी, उसे हम खो बैठे।

(रुआँसा होकर आँखें पोंछता है। सब लोग जय बोलते हैं।)

पर्दा गिरता है।

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

1. शब्दार्थ

अधेड़	=	आधी उम्र का, ढलती उम्र का
गिरफ्तार	=	जुर्म आदि के कारण पकड़ा हुआ, फँसा हुआ, बंदी
अफवाह	=	उड़ती ख़बर
मेंबर	=	सदस्य
अंगोछा	=	देह पोंछने का कपड़ा
अनन्यमनस्क	=	जिसका मन कहीं ओर न हो, एकाग्रचित्त
पुलिस की दौड़	=	पुलिस दल
सनद	=	प्रमाण-पत्र
तमगा	=	विद्यार्थी या सिपाही आदि को पुरस्कार स्वरूप दिए जाने वाला सोने, चाँदी आदि का खंड जो सिक्के या अन्य शक्ल का होता है, पदक
तैल चित्र	=	आइॅल पेंटिंग, तेल से मिले हुए रंगों से बनाया हुआ चित्र जो अधिक स्थायी होता है
बुकनी	=	चूर्ण
फरजंदा	=	बेटा
नमकहलाल	=	स्वामी या पालक की यथोचित सेवा करने वाला

2. इन मुहावरों के अर्थ लिखते हुए वाक्यों में प्रयोग करें :-

पहाड़ खोदना ________ ____

पसीना-पसीना होना ________ ____

तितर-बितर होना ________ ____

3. दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखें :-

सौदा = ____________, ____________

जेल = ____________, ____________

आदमी = ____________, ____________

साहस = ____________, ____________

सभापति = ____________, ____________

संग्राम = ____________, ____________

ख़बर = ____________, ____________

खुद = ____________, ____________

शत्रु = ____________, ____________

संकट = ____________, ____________

बलिदान = ____________, ____________

4. प्रयोगात्मक व्याकरण

(क)	**समस्त पद**	**विग्रह**
1	महात्मा	महान है जो आत्मा
2	महात्मा	महान है आत्मा जिसकी (व्यक्ति विशेष)

उपर्युक्त पहले उदाहरण में पूर्वपद (महान) विशेषण है तथा उत्तर पद (आत्मा) विशेष्य है। यह कर्मधारय तत्पुरुष समास है। इसमें उत्तर पद की प्रधानता है तथा दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य संबंध है।

अतएव जिस समास में उत्तर पद प्रधान हो तथा पूर्वपद व उत्तर पद में विशेषण-विशेष्य संबंध हो, उसे कर्मधारय तत्पुरुष समास कहते हैं।

जबकि दूसरे उदाहरण में दोनों पद गौण हैं और प्रधान पद है व्यक्ति विशेष। इसमें समस्त पद किसी संज्ञा के लिए विशेषण का कार्य कर रहा है।

अतएव जिस समस्त पद में कोई भी पद प्रधान न होकर किसी अन्य पद की प्रधानता हो, वह बहुब्रीहि समास होता है।

अन्य उदाहरण

समस्त पद	**विग्रह**	**विशेष**	**समास का नाम**
नीलकंठ	नीला है जो कंठ	विशेषण (नीला) और कंठ (विशेष्य) सम्बन्ध (दोनों पद प्रधान)	कर्मधारय
नीलकंठ	नीला है कंठ जिसका (शिवजी)	प्रधान पद (शिवजी) (दोनों पद गौण)	बहुब्रीहि
लंबोदर	लंबा है उदर	विशेषण (लम्बा) और उदर (विशेष्य) सम्बन्ध (दोनों पद प्रधान)	कर्मधारय
	लंबा है उदर जिसका (गणेश)	प्रधान पद-गणेश (दोनों पद गौण)	बहुब्रीहि

विशेष:- कर्मधारय समास में एक पद उपमान और दूसरा उपमेय भी हो सकता है। जैसे-

समस्त पद	**विग्रह**
घनश्याम	घन के समान श्याम

उपर्युक्त उदाहरण में पूर्वपद (घन) उपमान है तथा उत्तरपद श्याम (उपमेय) है।

उपमान :- वह वस्तु या व्यक्ति जिससे समता की जाये।

उपमेय :- वह वस्तु या व्यक्ति जिसकी समता की जाये।

(ख)

	समस्त पद	**विग्रह**
1	तिरंगा	तीन रंगों का समूह
2	तिरंगा	तीन रंगों वाला अर्थात भारत का राष्ट्रध्वज

उपर्युक्त पहले उदाहरण में पूर्वपद (तीन) संख्यावाचक शब्द है और विशेषण है तथा उत्तर पद (रंग) विशेष्य है। यह द्विगु समास है।

अतएव जिस समास में पूर्व पद संख्यावाचक विशेषण हो और उत्तर पद विशेष्य हो, उसे द्विगु समास कहते हैं।

जबकि दूसरे उदाहरण में दोनों पद गौण हैं और प्रधान पद है-भारत का राष्ट्रध्वज। यह बहुब्रीहि का उदाहरण है जिसकी पहले व्याख्या की जा चुकी है।

अन्य उदाहरण

समस्त पद	**विग्रह**	**विशेष**	**समास का नाम**
पंजाब	पाँच आबों का समूह	पाँच (विशेषण) संख्यावाचक है और आब (विशेष्य) से सम्बन्धित है	द्विगु
	पाँच आबों (नदियों) वाला अर्थात पंजाब प्रदेश	प्रधान पद-पंजाब प्रदेश (दोनों पद गौण)	बहुब्रीहि

अब इन समासों का विग्रह करके समास का नाम लिखें:-

समस्त पद	**विग्रह**	**समास**
सेनापति	________	________
पढ़ो-लिखो	________	________
रसोईघर	________	________
पुलिस कर्मी	________	________
दोपहर	________	________
हाथ-मुँह	________	________

(ख) विचार-बोध

(1) इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें:-

(i) माधव ने अपनी माँ को क्या समाचार सुनाया?

(ii) माधव की माँ ने उस समाचार के प्रति क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की?

(iii) सोहनलाल को घर पहुँचने में कठिनाई क्यों हुई?

(iv) माधव ने सभापति से क्या कहा?

(v) सभापति ने माधव को क्या काम सौंपा?

(vi) 'छोटा आदमी भी बड़े काम में सहयोग दे सकता है', इसकी पुष्टि में सभापति ने कौन-सा किस्सा सुनाया?

(vii) फौजी गाँव के लोगों से क्या पूछता है?

(viii) तोड़-फोड़ करने वालों की मदद करने वालों में माधव का नाम किसने बताया?

(ix) माधव ने फौजी को क्या कहा?

(x) सभापति ने क्या कह कर माधव की प्रशंसा की?

(2) इन पंक्तियों के भाव स्पष्ट करें:-

(i) देश संकट में है, हम लोग भी कुछ करना चाहते हैं। यह किसने और क्यों कहा?

(ii) गाँव तो बच गया पर इस गाँव में जो सबसे अच्छी चीज़ थी, उसे हम खो बैठे। यह किसने और कब कहा?

(iii) माधव के चरित्र की कोई दो विशेषताएँ इस एकांकी को पढ़कर लिखें।

योग्यता विस्तार

* माधव के समान ही ऐसे कई वीर हुए हैं जिन्होंने छोटी आयु में ही अपने देश के लिए प्राण न्योछावर कर दिए। उनके नाम पता करो तथा पुस्तकालय से पुस्तकें लेकर पढ़ो।

** आज देश आज़ाद हो चुका है। हम सब स्वतंत्र भारत के नागरिक हैं। परंतु फिर भी कई आंतरिक और बाह्य शत्रु हमारे देश में सक्रिय हैं। कक्षा में चर्चा करो।

पाठ-16

हुसैनी वाला बार्डर

प्रिय वैशाली,

प्यार भरी नमस्कार। कल ही तुम्हारा पत्र मिला। जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि तुम ग्रीष्म अवकाश में शिमला भ्रमण करके लौटी हो। तुमने पूछा था कि मैं इन छुट्टियों में कहाँ गई थी-तो मेरी बहन-मैं ज्यादातर छुट्टियों में घर पर ही रही-हाँ! पिछले सप्ताह मैं फिरोज़पुर में अंकित भैया व पापा के साथ रजनी दीदी के यहाँ गई थी। वहाँ हमने फिरोज़पुर के कुछ दर्शनीय स्थान व हुसैनीवाला बार्डर की अमर शहीदों की समाधियाँ देखीं। मेरी यह छोटी-सी यात्रा बहुत ही महत्वपूर्ण रही, जिसका वर्णन मैं इस पत्र में आपसे कर रही हूँ।

फिरोज़पुर पंजाब का बहुत प्राचीन नगर है। उसके विषय में कहा जाता है कि उसे 14वीं शताब्दी में फिरोज़शाह तुगलक ने बसाया था जिसके नाम पर इसका नाम पड़ा। फिरोज़पुर पंजाब का बहुत पुराना व क्षेत्रफल में बहुत बड़ा ज़िला है। फिरोज़पुर शहर और छावनी दो भागों में है। यह नगर भारत-पाक सीमा के नज़दीक स्थित है। हुसैनीवाला बार्डर यहाँ से करीब 11 किलोमीटर है। यह सतलुज दरिया के निकट है। यह बार्डर अमर शहीद भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव के समाधि स्थल के लिए प्रसिद्ध है। इन शहीदों ने भारत माँ की गुलामी की जंज़ीरों से मुक्ति के लिए अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी। अंग्रेज़ों द्वारा भारतीय प्रजा पर किए ज़ुल्म और शोषण का बदला इन्होंने सांडर्स जैसे अभिमानी ब्रिटिश पुलिस अधिकारी की हत्या करके लिया जिसके परिणामस्वरूप ब्रिटिश सरकार द्वारा इन्हें 24 मार्च 1931 को फाँसी की सज़ा सुनाई गई । परंतु भारतीय जनता के रोष व विद्रोह का सामना करने से डरते हुए ब्रिटिश सरकार द्वारा निर्धारित समय से एक दिन पूर्व 23 मार्च 1931 को सायं फाँसी दे दी गई व इन शहीदों के शव इनके परिजनों को न सौंपकर लाहौर जेल के पिछवाड़े से सतलुज दरिया के किनारे पर ले जाकर आनन-फानन में उनका दाह संस्कार किया गया। वही स्थान आज हमारे लिए वंदनीय है।

और विशु इन समाधियों के नज़दीक दो और समाधियाँ हैं-भगतसिंह के पुराने साथी बटुकेश्वर दत्त जो उनके साथ असैंबली बम कांड में थे और भगत सिंह की माँ श्रीमती विद्यावती जिन्हें 'पंजाब माता' की उपाधि से विभूषित किया गया। बटुकेश्वर दत्त व पंजाब माता विद्यावती की इच्छा थी कि उन्हें भी भगतसिंह के नज़दीक स्थान दिया जाए इसलिए उनकी इच्छा का सम्मान करते हए उनकी समाधियाँ भी इस महान शहीद के नज़दीक ही हैं।

समाधि स्थल पर प्रणाम कर हम बार्डर की तरफ चल दिए। बार्डर पर रिट्रीट समारोह का कुछ अपना ही आकर्षण है। हमें बतलाया गया कि 1962 तक बार्डर का 1 किलोमीटर का यह क्षेत्र जहाँ अमर शहीदों के स्मारक हैं, पाकिस्तान के पास था। लेकिन 1962 में भारत सरकार ने हैड सुलेमानकी (फाज़िल्का बार्डर) के नज़दीक 12 गाँव देकर इस अमर शहादत वाली भूमि को लिया। एक बात और कि 1970 तक रिट्रीट समारोह अर्थात् दोनों देश की ध्वज उतारने की रस्म नहीं होती थी लेकिन उसके बाद इंस्पैक्टर जनरल बी.एस. अश्वनी कुमार शर्मा के प्रयास से यह रस्म शुरू हुई। रिट्रीट समारोह का दृश्य वाघा बार्डर जैसा ही होता है। पाकिस्तानी रेंजर्स और भारतीय सीमा सुरक्षा दल के जवानों की यह परेड अपने आकर्षण का केंद्र तो होती ही है साथ ही भारतीय जवानों द्वारा 'भारत माता की जय' 'वंदे मातरम्' के जयघोष से हृदय में राष्ट्रीयता का समुद्र ठाठें मारने लगता है। सीमा रेखा पर 'शाने हिन्द' जिसकी लम्बाई 42 फुट, चौड़ाई 91 फुट व ऊँचाई 56 फुट है और जो पाकिस्तान के 'फक्र ए पाक' से तीस फुट ऊँचा है- के सामने इस देश की विशालता, महानता, बड़प्पन और शक्ति का प्रतीक है।

विशु, बार्डर से वापिस आने पर अगले दिन हमने 'बर्की मैमोरियल' और 'सारागढ़ी मैमोरियल जो भारतीय सैनिकों की वीरता और कुर्बानी के अजब दास्ताँ बयान करते हैं, वे भी देखे। 'बर्की मैमोरियल' 1965 के अमर शहीदों की स्मृति में बनाया गया। इसका नींव पत्थर 11 सितम्बर 1969 को लैफ्टीनेंट जनरल हरबक्श सिंह वी.सी. ने रखा। यह स्मारक जो अब सारागढ़ी कम्पलैक्स का ही एक भाग है, के केन्द्र में एक स्तंभ, एक पैटेन टैंक, दक्षिण में एक बर्की मील पत्थर तथा उत्तर में पानी का फांऊनटेन। यह स्तंभ 27 फुट ऊँचा है और सारागढ़ी गुरुद्वारा भी ऐसी ही शहादत

की याद दिलाता है। यह 36 सिक्ख रेजीमेंट के 21 सिक्ख सैनिकों की बहादुरी की यादगार है जिन्होंने 12 सितम्बर 1897 को वर्जिस्तान के सारागढ़ी किले की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। उन शहीद सिक्ख सैनिकों की अमर स्मृति में सेना अधिकारियों द्वारा फिरोज़पुर में यह शहीदी गुरुद्वारा बनाया गया। तब से 12 सितम्बर को हर वर्ष सुबह इन शहीदों की याद में एक धार्मिक सम्मेलन होता है और सायं को भूतपूर्व सैनिकों द्वारा श्रद्धांजलि दी जाती है।

वैशाली, इन समाधि-स्थलों के दर्शन कर हमारा सिर अपने अमर शहीदों के प्रति सम्मान व श्रद्धा से झुक जाता है। आँखों के सामने अनेक दृश्य आ जाते हैं। कैसे ये वीर सैनिक अपने ही रिश्ते-घर-संबंध छोड़कर देश की आज़ादी और हमारी रक्षा के लिए अपने सीने पर गोली खाने या फाँसी के फंदों को हँसते-हँसते चूमते हैं। क्या हमें इन बलिदानों की याद है? क्या हम अपने शहीदों को भूलते नहीं जा रहे?

प्रिय बहन, आओ! प्रण लें कि हम इन शहीदों के बलिदान को व्यर्थ न जाने देंगे। हम भी अपनी भारत माँ की रक्षा के लिए, अपने देश के गौरव और सम्मान के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे, अन्याय, अनपढ़ता और भ्रष्टाचार का नामोनिशाँ मिटा देंगे।

जय भारत !

तुम्हारी बहन,
रश्मि

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

1. शब्दार्थ

आनन-फानन	=	तुरंत, अति शीघ्र
वंदनीय	=	सम्मान के योग्य
समाधि स्थल	=	वह स्थान, जहाँ किसी साधु आदि को गाड़ा जाता है
अजब	=	विचित्र, अनोखा
दास्ताँ	=	कहानी, वृतान्त
यादगार	=	स्मारक, स्मृति चिह्न

2. इन मुहावरों के अर्थ समझते हुए वाक्यों में प्रयोग करें:-

प्राणों की बाज़ी लगाना = प्राण न्योछावर करना = ______________________

ठाठें मारना = राष्ट्रीयता की भावनाएँ हृदय में जागृत होना = ______________
____

प्राण न्योछावर करना = शहीद होना = ______________________

3. इन शब्दों के विपरीत अर्थ वाले शब्द लिखें:-

हर्ष = ________

इच्छा = ________

न्याय = ________

अनपढ़ = ________

4. इन शब्दों में से मूल शब्द अलग करके लिखें:-

दर्शनीय = ________

वंदनीय = ________

आकर्षित = ________

शहीदी = ________

केंद्रीय = ________

सम्मानित = ________

विभूषित = ________

भारतीय = ________

5. इन वाक्यों में उचित विशेषण शब्द लिखकर वाक्य पूरे करें:-

(i) फिरोज़पुर पंजाब का ________ नगर है।

(ii) हुसैनीवाला में ________ भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव की समाधियाँ हैं।

(iii) यहाँ पर भगतसिंह के ________ बटुकेश्वरदत्त और ________ विद्यावती की भी समाधियाँ हैं।

(iv) 'शाने हिन्द' देश की ________, ________, ________, ________ का प्रतीक है।

(v) बर्की मैमोरियल 1965 के युद्ध में ________ सैनिकों की ________ बयान करते हैं।

(vi) सारागढ़ी गुरुद्वारा ________ सिक्ख सैनिकों की ________ की यादगार है।

(ख) विचार-बोध

1. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें:-

(i) फिरोज़पुर से हुसैनीवाला बार्डर कितनी दूर है?

(ii) हुसैनीवाला में किन-किन शहीदों के समाधि स्थल हैं?

(iii) शहीद भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को ब्रिटिश सरकार ने निर्धारित समय से पूर्व फाँसी कब और क्यों दे दी?

(iv) किस व्यक्ति के प्रयासों से इस बार्डर पर रिट्रीट समारोह आरंभ हुआ?

(v) सीमा रेखा पर 'शाने हिन्द' और 'फक्र-ए-पाक' किसका प्रतीक है?

(vi) बर्की मैमोरियल किनकी स्मृति में बनाया गया?

(vii) सारागढ़ी गुरुद्वारा किस शहादत की यादगार है?

2 **इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें:-**

(i) फिरोज़पुर के बारे में आप क्या जानते हैं?

(ii) हुसैनीवाला बार्डर के निकट कौन-कौन से तीर्थ-स्थल हैं?

(iii) शहीदों का बलिदान हमें क्या याद दिलाता है?

(iv) आज हमें अपने देश का सम्मान और गौरव बढ़ाने के लिए क्या करना चाहिए?

(ग) रचना-बोध

* अपने देश के लिए शहीद होने वाले महान पुरुषों की जीवनियाँ पढ़ो और उनके गुण आचरण में लाओ।
* जब भी किसी शहीदी स्मारक को देखने जाओ तब अपने साथ डायरी लेकर जाओ ताकि संबंधित स्मारक बारे जानकारी नोट कर सको।
* 'शहीद भगत सिंह' पर लेख लिखो।
* देश भक्ति के नारे लिखकर कक्षा में टाँगें।

पाठ 17

राखी की चुनौती

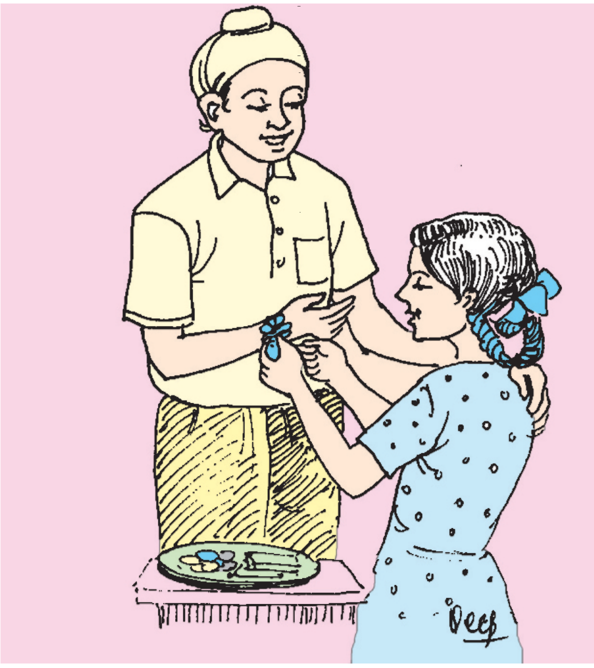

बहिन आज फूली समाती न मन में,
तड़ित आज फूली समाती न घन में।
घटा है न फूली समाती गगन में,
लता आज फूली समाती न वन में॥

कहीं राखियाँ हैं, चमक है कहीं पर,
कहीं बूँद है, पुष्प प्यारे खिले हैं।
ये आई है राखी, सुहाई है पूनी,
बधाई उन्हें जिनको भाई मिले हैं॥

मैं हूँ बहिन किंतु भाई नहीं है,
है राखी सजी पर कलाई नहीं है।
है भादों, घटा किंतु छाई नहीं है,
नहीं है खुशी पर रुलाई नहीं है॥

मेरा बन्धु माँ की पुकारों को सुनकर-
के तैयार हो जेलखाने गया है।
छीनी हुई माँ की स्वाधीनता को,
वह ज़ालिम के घर में से लाने गया है॥

मुझे गर्व है किंतु राखी है सूनी,
वह होता, खुशी तो क्या होती न दूनी।
हम मंगल मनावें, वह तपता है धूनी,
है घायल हृदय, दर्द उठता है खूनी॥

अब तो बढ़े हाथ, राखी पड़ी है,
रेशम-सी कोमल नहीं, यह कड़ी है।
अजी देखो लोहे की यह हथकड़ी है,
इसी प्रण को लेकर बहिन यह खड़ी है॥

आते हो भाई पुनः पूछती हूँ,
विषमता के बंधन की है लाज तुमको।
तो बंदी बनो देखो बंधन है कैसा
चुनौती यह राखी की है आज तुमको॥

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

1. शब्दार्थ

तड़ित	=	बिजली
घन	=	बादल
गगन	=	आकाश
पुष्प	=	फूल
आर्द्र	=	गीली
रुलाई	=	रोना (शोक)
स्वाधीनता	=	आज़ादी
ज़ालिम	=	अत्याचारी (अंग्रेज़)
गर्व	=	स्वाभिमान
दूनी	=	दोगुणा (और अधिक)
मंगल	=	खुशियाँ
पुनः	=	फिर

2. निम्नलिखित शब्दों/मुहावरों के अर्थ लिखते हुए वाक्यों में प्रयोग करें :-

फूले न समाना ________ ____________________________________

________ ____________________________________

मंगल मनाना ________ ____________________________________

________ ____________________________________

3. तड़ित आज फूली समाती न घन मे,
लता आज फूली समाती न वन में।
कहीं बूँद है पुष्प प्यारे खिले हैं,
मैं हूँ बहिन किंतु भाई नहीं है।
छीनी हुई माँ की स्वाधीनता को।
वह ज़ालिम के घर में से लाने गया है।

रेखांकित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची (समानार्थक) शब्द लिखें।

तड़ित = _________ , _________
घन = _________ , _________
लता = _________ , _________
वन = _________ , _________
पुष्प = _________ , _________
बहिन = _________ , _________
भाई = _________ , _________
स्वाधीनता= _________ , _________
ज़ालिम = _________ , _________

4. **इन भाववाचक संज्ञाओं के मूल रूप लिखें :-**

चमक = _________
सुहाई = _________
खुशी = _________
रुलाई = _________
स्वाधीनता = _________
विषमता = _________

(ख) विचार-बोध

1. **उपयुक्त शब्द भरकर वाक्य पूरा करें :-**

(i) बहिन ------- के कारण मन में अत्यंत खुश है।
(ii) बिजली ------- के कारण बादल में अत्यंत खुश है।
(iii) घटा ---------- के कारण आकाश में अत्यंत खुश है।
(iv) लता ------- के कारण वन में अत्यंत खुश है।
(v) मेरा बंधु देश को आज़ाद कराने के लिए ------- में गया।

(जेलखाने, फूल खिलने, चमकने, राखी, वर्षा)

2. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(i) राखी का त्योहार कब आता है?

(ii) बहिनें उस दिन हर्षित क्यों होती हैं?

(iii) कवयित्री का भाई कहाँ गया है?

(iv) क्या भाई के सम्मुख न होने से वह दु:खी है?

(v) उसकी 'राखी' कैसी है?

3. इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखें :-

कवयित्री राखी के पवित्र त्योहार पर देश के नवयुवकों को क्या चुनौती देती है?

(ग) भाव-बोध

(i) निम्न पद्यांशों का भाव स्पष्ट करें –

1. है भादों, घटा किंतु छाई नहीं है,
नहीं है खुशी, पर रुलाई नहीं है।

2. हम मंगल मनावें, वह तपता है धूनी,
है घायल हृदय, दर्द उठता है खूनी।

3. आते हो भाई पुन: पूछती हूँ,
विषमता के बंधन की है लाज तुमको
तो बंदी बनो देखो बंधन है कैसा?
चुनौती यह राखी की है आज तुमको॥

(घ) रचना-बोध

रक्षा-बंधन के पवित्र त्योहार पर तुम्हारे भाई ने तुम्हें उपहार दिया है, इस उपहार की उपयोगिता बताते हुए उसका धन्यवाद पत्र के द्वारा करें।

(ङ) करो

* अपने हाथ से राखी तैयार कर अपने भाई को भेजें।

पाठ-18

हिम्मती सुमेरा

यह कहानी न राजा-रानी की है न मन बहलाने वाली परियों की। यह एक मामूली से बच्चे की अद्भुत कहानी है। उस बच्चे के पास एक पुराना-सा बस्ता है जिसमें वह अपनी कॉपी-किताबें भरकर स्कूल जाता है। उसके पास ढेर सारी हिम्मत भी है जिससे मुश्किल काम भी वह आसानी से कर लेता है। उसको प्यार-दुलार करने वाली माँ अब इस दुनिया में नहीं है। केवल एक पिता है जो सारा दिन बस-अड्डे पर या इधर-उधर माल ढोता है।

बच्चे का नाम है सुमेर सिंह, पर सब उसे सुमेरा कहते हैं। रात में सुमेरा के पिता उसे अपने पास लिटाकर बहुत प्यार करते हैं। उसे दुनियाभर की बातें बताते हैं। सच्चाई और ईमानदारी की घुट्टी उन्होंने सुमेरा को बचपन से पिलाई है। सुमेरा के नन्हे मन में यह बात पत्थर की लकीर की तरह जम गई है कि चोरी, झूठ और बेईमानी से बढ़कर कोई पाप दुनिया में नहीं है। हमें सच्चाई और ईमानदारी से रहना चाहिए।

एक दिन शाम को खाना बनाकर और घर का काम करके सुमेरा पढ़ रहा था। तभी देखा, तीन-चार आदमी उसके पिता को उठाकर लिए आ रहे हैं। पता लगा, पहले बहुत ज़ोरों से सिर चकराया और फिर बेहोश हो गया था। आस-पास के लोग उसे अस्पताल ले गए। दो दिन बाद बेहोशी तो टूटी पर दोनों पैर बेकार! लकवा मार गया था। बेचारा दस बरस का सुमेरा करे तो क्या करे। आस-पास रहने वालों ने कहा, पढ़ाई छोड़कर कोई नौकरी कर ले। सुमेरा के मन में तो पढ़ाई की धुन समाई हुई थी। मगर अब पढ़े तो काम कैसे करे और काम न करे तो खाए क्या? छोटा-सा सुमेरा, बड़ी-सी मुसीबत।

सुमेरा था बड़ा हिम्मती। घबराया नहीं। पास में ही सब्ज़ी बाज़ार था। उसने तय किया, 'बारह से पाँच तक स्कूल जाएगा। सवेरे शाम बापू को देखेगा और बाकी समय में सब्ज़ी-फल कुछ भी बेचेगा।'

सुमेरा ने सोच तो लिया, पर सोचने से ही काम हो जाता है क्या? फल या सब्ज़ी खरीदने के लिए पैसा कहाँ से आए? खरीदेगा नहीं, तो बेचेगा क्या? आस-पास किसी से माँगना बेकार है। सभी इतने गरीब ! अपना ही पेट भर लें तो बड़ी बात। रातभर सुमेरा सोचता रहा। क्या करे, किससे माँगे? दूसरे दिन स्कूल गया और सीधा मास्टर साहब के सामने खड़ा हो गया। उन्हें सारी बात बताई और कहा, "मुझे काम करने के लिए कुछ रुपये उधार चाहिए।"

मास्टर साहब उसके कहने के ढंग पर ही चकित हो गए। उन्होंने उसे तीस रुपए दिए और कहा, "यह उधार नहीं है, तुम्हारे लिए इनाम है।"

"इनाम किस बात का? मैने कुछ किया भी नहीं। यह उधार है और मैं यह पैसे आपको लौटा दूँगा।"

मास्टर साहब ने प्यार से उसकी पीठ थपथपाई। सुमेरा ने मंडी जाकर तीस रुपए में संतरे की एक टोकरी खरीदी। स्वयं सिर पर उठाकर लाया। घर की एकमात्र थाली में उन्हें सजाया। पुराने कागज़ों से लिफाफे बनाए और सवेरे-सवेरे जाकर सब्ज़ीवालों के बीच में बैठ गया। गा-गाकर आवाज़ें लगाता। आखिर शाम तक उसने छत्तीस रुपए के संतरे बेच लिए। चार संतरे बचे। उन्हें वह बापू के खाने के लिए ले गया। उसने सोचा, छत्तीस रुपयों में से तीस रुपए मैं कल के लिए रखूँगा। एक रुपया उधार चुकाने का अलग रखूँगा। पाँच रुपए में आटा-दाल लाऊँगा। सोचकर सुमेरा इतना खुश, इतना खुश, मानो खज़ाना मिल गया हो।

दूसरे दिन फिर वही सिलसिला। आज वह और ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ें लगा रहा था। बिक्री भी अच्छी हो रही थी। पर शाम को एक अजीब बात हो गई। साइकिल के हैंडिल पर थैला लटकाए एक आदमी हर ठेलेवाले के पास रुकता और इशारों में कुछ बात हो जाती। वह आदमी सुमेरा के पास भी आकर खड़ा हुआ। सुमेरा तो कुछ समझा नहीं। पासवाले ने चुपके से कहा, ''दो रुपए थैले में डाल दे, चुपचाप।''

''नहीं, मैं नहीं डालूँगा दो रुपए। दो रुपए दे दूँगा, तो हम खाएँगे क्या? फिर मुफ़्त में क्यों दूँ दो रुपए?'' सुमेरा बोला।

साइकिल वाले आदमी ने घूरकर सुमेरा को देखा और चला गया। बाद में बगल वाले आदमी ने बताया, ''वह कमेटी का आदमी था। बिना लाइसेंस के यहाँ बैठकर जो लोग सामान बेचते हैं, सब दो रुपए रोज़ देते हैं। तूने नहीं दिए, अब तेरी मुसीबत आएगी।''

दो दिन बाद कमेटी की गाड़ी आई। कुछ लोग भाग गए। सुमेरा जहाँ का तहाँ बैठा रहा। चार-पाँच लोग गाड़ी से नीचे उतरे और उसका सामान उठाकर ले गए।

रातभर सुमेरा रोता रहा। सबके समझाने पर भी उसकी समझ में नहीं आया कि उसका सामान क्यों छीना गया? उसके पास लाइसेंस नहीं था तो लाइसेंस दिलवा देते। लाइसेंस के पैसे ले लेते। उसका बापू न बोल सकता था, न चल सकता था। वह करे तो क्या करे?

हिम्मत हारना तो सुमेरा ने सीखा नहीं था। याद आया, छुट्टी के दिन कभी-कभी वह भी बापू के साथ बस-अड्डे पर जाता था। रास्ते में राजनिवास पड़ता था। बापू कहते थे, यहाँ दिल्ली के राजा रहते हैं। उसने कई बार कोठी में झाँकने की कोशिश की थी पर राजा कभी दिखे नहीं। वहीं, अब राजा के पास शिकायत करने जाएगा। सारी बात बताएगा। अपना माल वापिस लेगा और उस आदमी को सज़ा दिलवाएगा।

सवेरा होते ही वह वहीं दौड़ पड़ा। पर पहरेदारों ने उसे अंदर नहीं घुसने दिया। उसने बहुत कहा, मिन्नतें कीं। उसकी एक न चली।

वह सड़क पर बैठ गया। सोचा, 'कभी तो राजा बाहर निकलेंगे, तभी अपनी बात बताऊँगा। इन पहरेदारों की शिकायत भी करूँगा।'

ग्यारह बजे के करीब बड़ी-सी मोटरगाड़ी अंदर से निकली। दोनों पहरेदारों ने सलाम

ठोंका। जब तक सुमेरा अपनी जगह से उठकर आता, तब तक 'सर्र' से गाड़ी निकल गई। अब क्या हो, राजा साहब तो चले गए। वह सोच में पड़ गया। सुमेरा सोचने लगा कि राजा साहब गए हैं तो लौटकर भी आयेंगे। मैं घर नहीं जाऊँगा। आज बापू को भी नहीं देखूँगा। जब तक राजा साहब को अपनी बात नहीं बता देता, यहाँ से हिलूँगा भी नहीं।

शाम को दूर से वह गाड़ी पहचान गया। दौड़कर बिना किसी डर के दोनों हाथ फैलाकर बीच सड़क में खड़ा हो गया। गाड़ी रोककर ड्राइवर ने उसे फटकारा। दरवाज़े से दरबान दौड़कर उसे खींचने लगे पर वह छूटकर राजा साहब की खिड़की के पास पहुँच गया।

''राजा साहब, मेरी बात सुनिए! मैं सवेरे से खड़ा हूँ। आपको मेरी बात सुननी ही पड़ेगी, मेरे साथ न्याय करना ही पड़ेगा।'' कहते-कहते वह सुबकने लगा।

पता नहीं सुमेरा के चेहरे पर कुछ था या उसके कहने के ढंग में, राजा साहब ने उसे कोठी के अन्दर आने को कहा।

राजा साहब सोफे पर बैठे हुए सुन रहे थे। सुमेरा सामने खड़ा सुना रहा था। एक-एक बात उसने बताई। कहीं झूठ नहीं, कहीं डर नहीं।

छोटे-से बच्चे की इतनी हिम्मत! ऐसा हौंसला! राजा साहब तो दंग! प्यार से सुमेरा को अपने पास बुलाया। पीठ थपथपाकर शाबाशी दी। फिर अगले दिन आने के लिए कहकर उसे विदा कर दिया। साथ में दिया दस रुपए का एक नोट जो उसकी हिम्मत के लिए इनाम था।

दूसरे दिन सुमेरा ठीक समय पर पहुँच गया। आज पहरेदारों ने उसे रोका नहीं। राजा साहब ने उसे लाइसेंस दिया। साथ में उसे सौ रुपए दिए। सुमेरा ने कहा, मेरा सामान सौ रुपए का नहीं था, वह केवल तीस रुपए का था।

''कोई बात नहीं। अब तुम सौ रुपए से अपना काम शुरू करो। एक महीने बाद आकर अपने काम की ख़बर देना।'' सुमेरा खुशी-खुशी घर लौट आया। यह कोई काल्पनिक कहानी नहीं, सचमुच की बात है। आँखों देखी, कानों सुनी। सुमेरा ने कठिन परिश्रम से अपना कारोबार आगे बढ़ाया। उसने अपने पिता का इलाज करवाकर उसे इस लायक कर दिया कि शाम को जब वह कालेज पढ़ने जाता तो उसका पिता दुकान पर बैठकर फल बेचता। कुछ वर्षों में उसने अपनी झुग्गी तुड़वाकर वहाँ दो कमरों का एक पक्का मकान बनवा लिया। दिल्ली के सब्ज़ी बाज़ार में आज भी सुमेरा की दुकान है।

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

1. शब्दार्थ

हिम्मती	=	साहसी	चकित	=	हैरान
सिलसिला	=	क्रम	मिन्नत करना	=	मनाना, विनती करना
दंग	=	हैरान			

2 **इन मुहावरों के अर्थ समझते हुए वाक्यों में प्रयोग करें:-**

घुट्टी पिलाना ________ ______________________________

पत्थर की लकीर की तरह जमना ________ ______________________________

सिर चकराना ________ ______________________________

पीठ थपथपाना ________ ______________________________

3 **पर्यायवाची शब्द लिखें:-**

पिता = ________ , ________

राजा = ________ , ________

आदमी = ________ , ________

दुनिया = ________ , ________

कहानी = ________ , ________

हिम्मत = ________ , ________

मुसीबत = ________ , ________

4. **विपरीत अर्थ वाले शब्द लिखें:-**

सवेरा = ________

गरीब = ________

उधार = ________

इनाम = ________

प्यार = ________

बेचना = ________

रोना = ________

न्याय = ________

विदा = ________

5. **इन समरूपी भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग करें:-**

(i) समान = ______________________________

सामान = ______________________________

(ii) ओर = ______________________________

और = ______________________________

(iii) दिन = ______________________________

दीन = ______________________________

(iv) उदार = ______________________

उधार = ______________________

6. इन वाक्यों में रेखांकित शब्द भाववाचक संज्ञा है या विशेषण

1 चोरी से बढ़कर कोई पाप दुनिया में नहीं है।

2 सुमेरा के नन्हे मन में यह बात बैठ गई थी।

3 सुमेरा हिम्मती बालक था।

4 ड्राइवर की फटकार का कोई असर नहीं हुआ।

5 सुमेरा की कहानी काल्पनिक नहीं है।

6 सुमेरा ने कमेटी वालों को दो रुपए नहीं दिए।

7. प्रयोगात्मक व्याकरण

1 सुमेरा ने शाम को खाना बनाया।

2 मैं यहाँ से नही हिलूँगा।

3 वह ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ें लगा रहा था।

4 उसके लिए इतना ही काफी था।

उपर्युक्त पहले वाक्य में 'शाम को' शब्द क्रिया के काल का बोध करा रहा है। दूसरे वाक्य में 'यहाँ' शब्द क्रिया के स्थान का बोध करा रहा है। तीसरे वाक्य में 'ज़ोर-ज़ोर' शब्द क्रिया होने की रीति (ढंग) का बोध करा रहा है तथा चौथे वाक्य में 'इतना' शब्द क्रिया की मात्रा का बोध करा रहा है। अत: से सभी शब्द (शाम को, यहाँ, ज़ोर-ज़ोर तथा इतना) क्रिया की विशेषता बता रहे हैं। **अतएव ये शब्द क्रिया विशेषण हैं।**

जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं।

क्रिया विशेषण के चार भेद हैं-कालवाचक क्रिया विशेषण, स्थानवाचक क्रिया विशेषण, रीतिवाचक क्रिया विशेषण, परिमाणवाचक क्रिया विशेषण

इस पाठ में क्रियाविशेषण के पहले दो भेदों के बारे में बताया जा रहा है

1 वह **सवेरे-सवेरे** जाकर सब्ज़ी वालों के बीच बैठ गया।

2 वह **शाम को** पढ़ने जाता है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'सवेरे-सवेरे' तथा 'शाम को' शब्दों से क्रिया के काल की विशेषता का पता चलता है। इसलिए ये कालवाचक क्रियाविशेषण हैं।

अतएव जिन शब्दों से क्रिया के होने के समय का पता चले, उन्हें कालवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

अन्य कालवाचक क्रिया विशेषण शब्द :- आज, कल, परसों, अब, जब, तब, तभी, पहले, बाद में, आजकल, प्रतिदिन, रात को, पाँच बजे, हर साल, नित्य, हमेशा, महीनों, वर्षों, बहुधा, हर घड़ी, सायं, प्रात:काल आदि।

1 सब्ज़ी बाज़ार पास ही था।

2 वह इधर-उधर माल ढोता है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'पास' तथा 'इधर-उधर' शब्दों से क्रिया के स्थान की विशेषता का पता चलता है। इसलिए ये स्थानवाचक क्रिया विशेषण हैं।

अतएव जिन शब्दों से क्रिया के स्थान का पता चले, उन्हें स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

अन्य स्थानवाचक क्रिया विशेषण शब्द :- जहाँ, किधर, जिधर, नीचे, ऊपर, सामने, दाहिने, बाएँ, दाएँ, उस ओर, अन्यत्र, दूर, चारों तरफ, एक तरफ, आगे, पीछे आदि।

(ख) विचार-बोध

1. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें:-

(i) सुमेरा कैसा बालक था?

(ii) उसके पिता ने बचपन से ही उसे कैसी घुट्टी पिलायी थी?

(iii) उसके पिता को कौन-सी बीमारी हो गई थी?

(iv) सुमेरा ने किससे रुपए उधार माँगे?

(v) सुमेरा से दो रुपए किसने माँगे?

(vi) राजनिवास में कौन रहते थे?

(vii) राजा साहब ने सुमेरा की हिम्मत देखकर कितने रुपए दिए?

2. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें:-

(i) सुमेरा के चरित्र की विशेषताएँ लिखें।

(ii) सुमेरा ने अपना और अपने पिता का पेट भरने के लिए क्या काम किया?

(iii) दूसरे दिन शाम को कौन-सी अज़ीब बात हो गई?

(iv) वह राजा साहब से मिलने में किस प्रकार सफल हुआ?

(v) राजा साहब ने सुमेरा की क्या सहायता की?

(vi) सुमेरा की जगह आप होते तो क्या करते?

(vii) यदि सुमेरा के पिता को लकवा न होता तो उसका जीवन कैसा होता? सोचें और लिखें।

(viii) कमेटी के लोग इसी प्रकार फड़ी-रेहड़ी वालों से मनमाना टैक्स वसूलते हैं जो कि कमेटी वालों के लिए उचित है परंतु रेहड़ी वालों के लिए अनुचित, आप ऐसे लोगों के बारे में क्या सुझाव देंगे?

(ix) अपने जीवन में घटित किसी ऐसी घटना का वर्णन करो जब आपने साहस का परिचय दिया हो।

(ग) आत्म-बोध

साहसी व्यक्तियों की कहानियाँ पढ़ो और उनके गुणों को जीवन में अपनाओ।

पाठ–19

एण्ड्रोक्लीज़ और शेर

सैकड़ों वर्ष पहले रोम में गुलामी का रिवाज़ जारी था। गुलामों को किसी तरह का कोई हक न था। मालिक उनका मालिक ही था। वह उन्हें भेड़-बकरियों की तरह बेच सकता था। अकसर उनके साथ बहुत बुरा बर्ताव किया जाता था।

एण्ड्रोक्लीज़ रोम का एक गुलाम था। उसका मालिक उसे रोम से अफ्रीका ले गया। मालिक बहुत बेरहम और सख्त-दिल आदमी था। वह दिन निकलने से बहुत रात बीतने तक एण्ड्रोक्लीज़ से काम लेता, मगर न पहनने को पूरे कपड़े देता, न पेटभर खाना। अपने मालिक के ऐसे बर्ताव से एण्ड्रोक्लीज़ तंग आ गया और सोचने लगा कि क्यों न कहीं भाग जाऊँ और मालिक के पंजे से छुटकारा पाऊँ? वह जानता था कि इस तरह भागने के बाद पकड़े जाने पर मौत की ही सज़ा मिलेगी। मगर वह मालिक के बर्ताव से इतना तंग आ गया था कि उस तरह की ज़िन्दगी से उसने मौत को बेहतर माना।

एक दिन रात को वह घर से निकल भागा और समुद्र के किनारे की तरफ चल दिया। उसका ख्याल था कि वहाँ से वह किसी-न-किसी तरह रोम चला जाएगा। सारी रात वह बहुत तेज़ी से चलता रहा। मगर रात के अँधेरे में वह रास्ता भूल गया और समुद्र के किनारे पहुँचने के बजाय एक बियाबान जंगल में जा पहुँचा। चलते-चलते वह थककर चूर हो गया था। भूखा-प्यासा तो वह था ही। भटकते-भटकते उसे एक पहाड़ की खोह दिखाई दी। वह खोह में जाकर लेट गया और कुछ ही देर में उसकी आँख लग गई।

एक दिल दहलाने वाली दहाड़ सुनकर वह जागा और हड़बड़ाकर उठा। देखता क्या है कि खोह के मुँह पर एक शेर रास्ता रोके खड़ा है। उसने समझ लिया कि अब मौत आ गई। उसने अपने अब तक के जीवन पर एक निगाह डाली और सोचा-गुलामी से मौत क्या बुरी है?

शेर खड़ा-खड़ा अपना एक पंजा बार-बार चाट रहा था। एण्ड्रोक्लीज़ ने सोचा-हो न हो, शेर के पंजे में कोई तकलीफ है। वह हिम्मत करके आगे बढ़ा और उसने शेर का पंजा देखा। पंजे से खून बह रहा था, और उसमें एक बड़ा काँटा चुभा हुआ था। एण्ड्रोक्लीज़ ने काँटा निकाला और ज़ख्म को थोड़ी देर अपने हाथ से दबाये रखा। इससे खून बहना बन्द हो गया।

शेर लँगड़ाता-लँगड़ाता वहाँ से चला गया और कुछ ही देर में उसने एण्ड्रोक्लीज़ के पास एक मरा हुआ खरगोश लाकर डाल दिया। एण्ड्रोक्लीज़ ने खरगोश भूना। शेर खड़ा-खड़ा देखता रहा। जब एण्ड्रोक्लीज़ ने भूना हुआ खरगोश खा लिया तो शेर ने गौर से उसकी तरफ देखा और वह आगे-आगे चलने लगा। एण्ड्रोक्लीज़ उसके पीछे हो लिया। शेर उसे एक झरने पर ले गया। एण्ड्रोक्लीज़ ने वहाँ पानी पीया। फिर वे दोनों वापस उसी खोह में आ गए। दोनों दोस्त बन गए और वहाँ साथ-साथ रहने लगे।

एण्ड्रोक्लीज़ रोज़ जंगल में जाता और अपने लिए कोई शिकार मार लाता। जिस दिन उसे शिकार न मिलता, शेर उसके लिए कोई जानवर ले आता। इस तरह एण्ड्रोक्लीज़ को वहाँ कई महीने बीत गए। वह जंगल की इस ज़िन्दगी से उकता गया। एक दिन वह वहाँ से चल दिया।

एण्ड्रोक्लीज़ के मालिक ने उसके भाग जाने की सूचना सरकार को दे दी थी। इधर-उधर भटकते गुलामों को सिपाही पकड़ लिया करते थे। कुछ दिनों बाद एण्ड्रोक्लीज़ उन सिपाहियों के हत्थे चढ़ गया। वे उसे रोम ले गए। वहाँ उसे कानून के अनुसार मौत की सज़ा सुना दी गई।

उन दिनों मौत की सज़ा बड़े अजीब ढंग से दी जाती थी। इस काम के लिए बड़ा भारी दंगल बना रहता था। उस दंगल के चारों तरफ बादशाह, उसके बड़े-बड़े हाकिम और शहर के लोग बैठ जाते थे। चार-पाँच दिन का भूखा शेर एक पिंजरे में बंद करके लाया जाता था और उस दंगल के मैदान में छोड़ दिया जाता था। मौत की सज़ा पाया हुआ आदमी भी उस मैदान में छोड़ा जाता था और अपने बचाव के लिए उसे एक भाला दिया जाता था। इस आदमी को देखते ही भूखा शेर दहाड़ मारता हुआ उस पर टूट पड़ता था। बेचारा आदमी भाले से शेर का सामना क्या करता? बात की बात में शेर उसे चीर-फाड़कर खा जाता था।

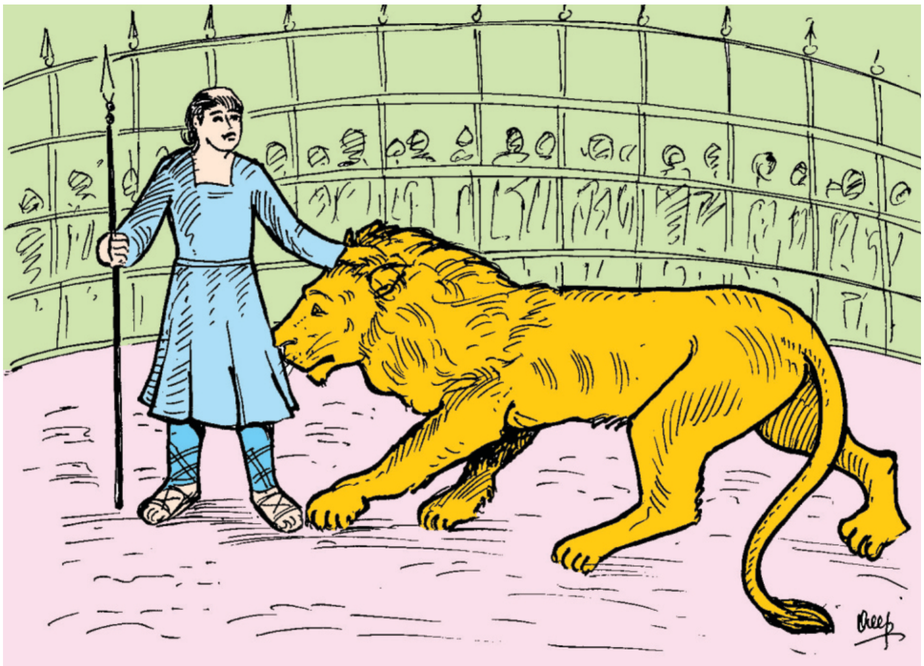

एण्ड्रोक्लीज़ को दंगल में लाया गया और एक भूखा शेर वहाँ छोड़ दिया गया। शेर बुरी तरह दहाड़ता हुआ आगे बढ़ा। वह एण्ड्रोक्लीज़ पर झपटने को ही था कि यकायक रुक गया और उसके सामने पालतू कुत्ते की तरह दुम हिलाने लगा। सब लोग दंग रह गए। पल भर के लिए सन्नाटा छा गया। एण्ड्रोक्लीज़ ने देखा तो मालूम हुआ कि शेर उसका पुराना दोस्त था, जिसके साथ वह खोह में रहा था। उसने शेर की पीठ थपथपाई और उसे पुचकारा। शेर ने अपना सिर उसके पैरों में रख दिया।

यह देख बादशाह ने एण्ड्रोक्लीज़ को अपने पास बुलाया और पूछा-बात क्या है? एण्ड्रोक्लीज़ ने शुरू से आख़िर तक सारा किस्सा सुनाया। बादशाह सुनकर दंग रह गया। उसने सोचा, ओह! पशु भी अपने ऊपर किए गए उपकार को नहीं भूलते। वे भी मित्रता का निर्वाह करना जानते हैं। उसने एण्ड्रोक्लीज़ की जान बख्श दी और उसे आज़ाद कर दिया। शेर भी उसी को सौंप दिया। दोनों दोस्त आज़ाद हो गए। शेर एण्ड्रोक्लीज़ के साथ पालतू कुत्ते की तरह रहता रहा।

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

1 **शब्दार्थ**

बियाबान	=	निर्जन, सुनसान
सन्नाटा	=	नीरवता, वह अवस्था जिसमें कोई आवाज़ न हो
निर्वाह	=	निबाह, किसी बात का जारी रहना
खोह	=	गुफा

2 **निम्न शब्दों/मुहावरों का अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग करें :-**

पीठ थपथपाना	________	________________________________
टूट पड़ना	________	________________________________
बात की बात में	________	________________________________
हड़बड़ा कर	________	________________________________
आँख लगना	________	________________________________
दुम हिलाना	________	________________________________
सिर पैरों में रखना	________	________________________________
दंग रह जाना	________	________________________________

3 **विपरीत शब्द लिखें:-**

बादशाह	=	________
बेरहम	=	________
कृतज्ञ	=	________
गुलाम	=	________
उपकार	=	________

4 कई बार एक ही शब्द को दो बार प्रयोग किया जाता है। ऐसे शब्दों को पुनरुक्त शब्द कहते हैं। इस पाठ में कुछ ऐसे शब्द प्रयुक्त हुए हैं जैसे:- भटकते-भटकते इसी प्रकार अन्य शब्द ढूँढ़ें और लिखें।

5 ‘बेरहम’ शब्द में ‘बे’ उपसर्ग लगा है। इसी प्रकार ‘बे’ उपसर्ग से नए शब्द बनायें :-

बे + कार = __________

बे + चैन = __________

बे + शक = __________

बे + रोक = __________

बे + जान = __________

6. प्रयोगात्मक व्याकरण

1. एक दिन रात को वह घर से निकल भागा <u>और</u> समुद्र के किनारे की तरफ चल दिया।
2. मालिक एण्ड्रोक्लीज़ से बहुत रात बीतने तक काम लेता <u>मगर</u> न पहनने को कपड़े देता, न पेट भर खाना।
3. उसे भूख लगी थी <u>इसलिए</u> शेर ने उसके पास एक मरा हुआ खरगोश लाकर डाल दिया।
4. ऐसा लगा <u>मानो</u> उसके पंजे में कोई तकलीफ है।
5. एण्ड्रोक्लीज़ मालिक के कब्ज़े से भाग गया था <u>इस कारण</u> उसे मौत की सज़ा दी गयी।
6. उसने समझ लिया <u>कि</u> अब मौत आ गयी।
7. वह थक हार कर खोह में लेट गया <u>ताकि</u> आराम कर सके।
8. <u>चाहे</u> वह अपराधी था <u>फिर भी</u> बादशाह ने उसे छोड़ दिया।

उपर्युक्त वाक्यों में और , ‘मगर’, ‘इसलिए’, ‘मानो’, ‘इस कारण’ ‘कि’, ‘ताकि’, चाहे...फिर भी शब्द दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ रहे हैं। इन शब्दों को योजक या समुच्चयबोधक शब्द कहते हैं।

अतएव दो शब्दों, वाक्यों के अंशों और वाक्यों को जोड़ने वाले शब्दों को योजक या समुच्चयबोधक कहते हैं।

अन्य योजक शब्द–एवं, तथा, अथवा, या, नहीं तो, अत:,यद्यपि...तथापि, चूँकि, क्योंकि, जिससे कि, यदि तो आदि।

(ख) विचार-बोध

(1) उपयुक्त शब्द भरकर वाक्य पूरे करें :-

(i) एण्ड्रोक्लीज़ __________ का एक गुलाम था।

(ii) मालिक गुलाम को __________ बेच सकता था।

(iii) उसका मालिक उसे __________ ले गया।

(iv) वह रास्ता भूल गया __________ जंगल में जा पहुँचा।

(v) शेर बुरी तरह __________ हुआ आगे बढ़ा।

(दहाड़ता, भेड़-बकरियों की तरह, और, बियाबान, अफ्रीकी, रोम)

2. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें:-

(i) गुलामी प्रथा से क्या भाव है?

(ii) एण्ड्रोक्लीज़ भाग कर कहाँ पहुँचा?

(iii) एण्ड्रोक्लीज़ को मौत की सज़ा क्यों दी गई?

(iv) उन दिनों मौत की सज़ा कैसे दी जाती थी?

(v) इस कहानी का मुख्य उद्देश्य क्या है?

3. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(i) एण्ड्रोक्लीज़ अपने मालिक के पास किस रूप में आया था और वहाँ से क्यों भाग गया?

(ii) एण्ड्रोक्लीज़ की शेर के साथ दोस्ती किस प्रकार हुई और उसके पश्चात दोनों किस प्रकार रहे?

(iii) मौत के कटघरे में एण्ड्रोक्लीज़ और शेर के व्यवहार का वर्णन करें।

(ग) भाव-बोध

इन पंक्तियों का भाव स्पष्ट करें:-

1. गुलामी से मौत बेहतर है।
2. पशु भी कृतज्ञ और सच्चे मित्र होते हैं।

योग्यता विस्तार

1. 'मानव स्वतंत्रता और गुलामी प्रथा' विषय पर अपनी कक्षा में भाषण प्रतियोगिता रखो।
2. वन्य जंतुओं के आचरण और व्यवहार से संबंधित पुस्तकें पढ़ो।
3. किसी भारतीय अभ्यारण्य में जाकर जंतुओं का निरीक्षण करो।

पाठ–20

श्री गुरु अर्जुन देव जी

गुरु अर्जुन देव जी का जन्म 15 अप्रैल, सन् 1563 को गोइंदवाल में हुआ था। आपके पूज्य पिता श्री राम दास जी चौथे सिक्ख गुरु थे। गुरु अर्जुन देव जी की माता का नाम बीबी भानी जी था, जो कि तीसरे सिक्ख गुरु अमर दास जी की सुपुत्री थी। इस संबंध के कारण गुरु अमर दास जी आपके नाना जी थे। गुरु अर्जुन देव जी अपने माता-पिता की तीसरी संतान थे।

सोलह वर्ष की अवस्था में गुरु अर्जुन देव जी का विवाह मउ नामक गाँव के श्री कृष्ण चंद जी की बेटी गंगा जी के साथ हुआ था। गुरु राम दास जी के परलोकवास के बाद आपको पहली सितंबर, सन् 1581 में गुरु-गद्दी प्रदान की गई। इस प्रकार आप 'पंचम पातिशाह जी' के नाम से सिक्ख गुरु परंपरा में विख्यात हुए।

आपने सिक्ख धर्म के प्रचार और दीन-हीन की सहायता के लिए 'दसवंध-मर्यादा' का आरंभ किया। इसके अनुसार प्रत्येक श्रद्धालु को ईमानदारी से कमाए हुए अपने धन में से दसवाँ भाग गुरुद्वारों में भेंट करने का नियम बनाया गया। 'दशमाँश' संस्कृत भाषा का शब्द है। इसी से पंजाबी में 'दसवंध' शब्द बना है और हमारी बोली में 'दसवाँ - दसौंध' शब्द इसी से आया है।

गुरु अर्जुन देव जी बड़े उदार विचारों के थे। उन्होंने अपने समय के प्रसिद्ध मुस्लिम फ़कीर साईं मियाँ मीर को आमंत्रित करके श्री हरिमंदिर साहिब की नींव रखवाई थी। दरबार साहिब के नाम से भी विख्यात यह गुरुद्वारा साहिब सिक्ख धर्म का महान तीर्थ स्थान माना जाता है। यह अमृतसर नगर में विद्यमान है।

धीरे-धीरे हरिमंदिर साहिब की महिमा संसार भर में फैल गई। पंजाबी के प्रसिद्ध कवि प्रो. पूर्ण सिंह का कथन है कि मुग़ल सम्राट अकबर भी इस पावन स्थल की भवन-निर्माण कला देखने अमृतसर पहुँचा। उसने गुरु अर्जुन देव जी से अनेक धार्मिक प्रश्न पूछ कर अपनी शंकाओं का निवारण किया। वह गुरु साहिब के अनमोल वचनों और दरबार साहिब की शोभा से प्रभावित हुआ। उसने इच्छा प्रकट की कि वह गुरुद्वारा साहिब के प्रबंध के लिए कुछ धन राशि भेंट करना चाहता है। किंतु 'पंचम पातिशाह' जी ने बड़े नम्र शब्दों में उत्तर दिया - ''हरिमंदिर साहिब की सेवा-संभाल की जिम्मेदारी सिक्ख-संगत को ही सौंपी गई है। यदि तुम्हारी इस पवित्र स्थान के प्रति श्रद्धा है तो तुम आस-पास के गाँवों का लगान माफ़ कर दो।''

वास्तव में यह गुरु साहिब की दया का प्रमाण था, क्योंकि उस वर्ष सूखा पड़ने के कारण ग़रीब किसान सरकारी मालिया भरने में कठिनाई महसूस कर रहे थे।

गुरु अर्जुन देव जी की महानता की अनेक कहानियाँ सिक्ख इतिहास में मिलती हैं। काबुल-कंधार तक से लोग उनके तथा हरिमंदिर साहिब के दर्शनों के लिए पधारने लगे थे। रसोई में सादा

भोजन तैयार होता और गुरु अर्जुन देव जी काला कंबल ओढ़ कर अपनी धर्म पत्नी गंगा देवी जी के साथ रोटियाँ तथा सब्जियाँ उठा कर अमृतसर से बाहर जा कर खड़े हो जाते। वे बड़ी मधुर वाणी में पद गाते हुए श्रद्धालुओं को भोजन से तृप्त करते। ''प्रसाद छक कर'' सिक्ख-संगत आनंद-विभोर होकर पुकार उठती - ''धन्य हो गुरु नानक, धन्य हो गुरु अर्जुन देव और धन्य हो उनके सिक्ख।''

रात्रि में गुरु साहिब थके-माँदे वृद्ध श्रद्धालुओं का शरीर दबाते। माता गंगा देवी जी भी उन वृद्ध पुरुषों के साथ आने वाली बूढ़ी स्त्रियों का शरीर दबा कर सारी थकान दूर कर देती थीं। सिक्ख धर्म में सबसे ऊँची पदवी पर पहुँचे गुरु साहिब के परिवार की सेवा-भक्ति आज भी एक महान आदर्श मानी जाती है।

गुरु अर्जुन देव जी की संसार को सबसे बड़ी देन है - ''श्री गुरु-ग्रंथ साहिब''। सिक्ख गुरुओं की पवित्र वाणी और अनेक संतों के पावन वचन इसमें संकलित हैं। इसका पहला संग्रह गुरु अर्जुन देव जी ने करवाया था। तदनंतर 'गुरु ग्रंथ साहिब' का प्रकाश श्री हरिमंदर साहिब में करवा कर उन्होंने बाबा बुड्ढा जी को इस महान रचना के पाठ का अधिकार दिया था। इस प्रकार उन्होंने बाबा बुड्ढा जी को दरबार साहिब के ग्रंथी के पद पर सुशोभित करके 'ग्रंथी-परंपरा' का शुभ आरंभ किया था। गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ (पोथी) भाई गुरदास जी ने लिखी। इसमें गुरु अर्जुन देव जी के लगभग बाइस सौ 'सलोक' तथा 'सबद' मिलते हैं, जो कि 'महला 5' शीर्षक के अधीन संकलित हैं।

गुरु ग्रंथ साहिब की महानता के कारण गुरु अर्जुन देव जी की बढ़ती हुई ख्याति बहुत-से द्वेषियों को फूटी आँखों न भायी। उनके अपने सगे-संबंधी भी उनकी जान के दुश्मन बन गए। मुग़ल दरबार का एक कर्मचारी चंदू शाह अपनी पुत्री का विवाह गुरु अर्जुन देव जी के बड़े बेटे श्री हरिगोविंद जी के साथ करना चाहता था, किन्तु सिक्ख-संगत इस संबंध को पसंद नहीं करती थी और गुरु साहिब भी चंदू शाह से समधियाना जोड़ने के पक्ष में न थे।

बादशाह अकबर का देहांत हो चुका था। उसका बेटा जहाँगीर मुग़ल शासक बना हुआ था। गुरु अर्जुन देव जी के प्रियजनों तथा चंदू शाह ने उनके विरुद्ध अनेक तरह के लाँछन लगाकर मुग़ल बादशाह के कान भरे। गुरु साहिब बड़े दयालु थे। उन्होंने जहाँगीर के बेटे शहज़ादा खुसरो की मुसीबत के समय सहायता की थी। पिता से बिगड़े पुत्र खुसरो की मदद के इस मामले को भी गुरु साहिब के विरोधियों ने खूब उछाला।

ऐसे षड्यंत्रों में फँस कर बादशाह जहाँगीर ने गुरु अर्जुन देव जी को लाहौर बुलवा कर नौ लाख रुपए दंड भरने का आदेश दे दिया। किन्तु गुरु साहिब ने बड़ी दृढ़ता से इसका विरोध करते हुए कहा - ''बादशाह ! हमने कोई अपराध नहीं किया। हमारे गुरुद्वारों में जो धन आता है, वह उन सिक्ख श्रद्धालुओं का है जो अपनी नेक कमाई से 'दसवंध' (दसवाँ भाग = दशमाँश) निकालते हैं। यह सारा धन सिक्ख-संगत का है। मेरा तो कानी कौड़ी से भी वास्ता नहीं।''

गुरु साहिब की दो टूक बात सुनकर जहाँगीर तिलमिलाया और उसने उन्हें दीवान चंदू शाह

को सौंप दिया। चंदू शाह अपने अपमान का बदला चुकाना चाहता था, क्योंकि गुरु साहिब ने अपने बेटे के लिए उसकी बेटी का संबंध स्वीकार नहीं किया था। इसलिए उसने गुरु साहिब को कैद में रखकर अनेक प्रकार की यातनाएँ पहुँचाईं। अंततः आप लाहौर में रावी नदी के तट पर ज्योति-जोत समा गए। यह स्थान लाहौर के शाही किले के समीप है। आजकल यह गुरुद्वारा डेहरा साहिब के नाम से प्रसिद्ध है।

गुरु अर्जुन देव जी 30 मई, सन् 1606 को परलोक सिधारे थे। इसी की स्मृति में हर साल गुरु अर्जुन देव जी का शहीदी दिवस संसार-भर में मनाया जाता है। शहीदी गुरुपर्व के सिलसिले में प्रभात फेरियाँ और नगर कीर्तन निकलते हैं। गर्मी का मौसम होने के कारण ठंडे मीठे शीतल जल की छबीलें लगाकर शाँतिप्रिय गुरुदेव का स्मरण किया जाता है। इसी उपलक्ष्य में सिक्ख गुरुद्वारों में दीवान भी सजाते हैं।

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

1. शब्दार्थ

पावन-स्थल	=	पवित्र स्थान	अनमोल	=	कीमती
लाँछन	=	दोष (कलंक)	स्मृति	=	याद
निर्माण	=	बनाना	तृप्त	=	भूख मिटने पर
दृढ़ता	=	मज़बूती	शीतल	=	ठण्डे
अत्यंत	=	अधिक	वृद्ध	=	बूढ़े
यातनाएँ	=	कष्ट	कौड़ी	=	सबसे छोटा पैसा

2 **वाक्यों में प्रयोग करें :-**

दसवंध ________ ____________________________________

षड्यंत्र ________ ____________________________________

निवारण ________ ____________________________________

3 **विपरीत शब्द लिखें :-**

मान = ________

अपराध = ________

एक = ________

ईमानदारी = ________

इच्छा = ________

तृप्त = ________

विरोध = ________

4 **नए शब्द बनायें :-**

सु + पुत्री = **सुपुत्री**

दशम + अंश = ________

श्रद्धा + आलु = ________

गुरु + द्वारा = ________

महान + ता = ________

उप + लक्ष्य = ________

5. **इन मुहावरों को इस तरह वाक्यों में प्रयोग करें कि अर्थ स्पष्ट हो जायें :-**

जान का दुश्मन ________ ____________________________________

फूटी आँख न भाना ________ ____________________________________

कान भरना ________ ____________________________________

ज्योति-जोत समाना ________ ____________________________________

परलोक सिधारना ________ ____________________________________

दो टूक कहना ________ ____________________________________

मामले को उछालना ________ ____________________________________

प्रयोगात्मक व्याकरण

6. **निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग अलग करके लिखें:-**

प्रदान = ____________ आमंत्रित = ____________

निवारण = ____________ अनमोल = ____________

प्रभावित	=	____________	प्रबंध	=	____________
आनंद	=	____________	विभोर	=	____________
संकलित	=	____________	संग्रह	=	____________
सुशोभित	=	____________			

7. निम्नलिखित समास शब्दों का विग्रह करें :-

समस्त पद	**विग्रह**
गुरुद्वारा	____________
परलोकवास	____________
गुरु-गद्दी	____________
गुरु-परम्परा	____________
ग्रंथी-परम्परा	____________

8. (क) (i) ने + अन = नयन

ए + अ = अय

(ii) गै + अक = गायक

ऐ + अ = आय

अतएव जब 'ए', 'ऐ' के बाद यदि कोई दूसरा स्वर आ जाए तब इनके स्थान पर क्रमश: 'अय' 'आय' हो जाता है। **यह स्वर संधि की अयादि संधि है।** अन्य उदाहरण:- नै + अक = नायक, नै + इका = नायिका

(ख) (i) पो + अन = पवन

ओ + अ = अव

(ii) पौ + अन = पावन

औ + अ = आव

अतएव जब 'ओ' 'औ' के बाद दूसरा स्वर आ जाए तो इनके स्थान पर क्रमश: 'अव', 'आव' हो जाता है। **यह स्वर संधि की अयादि संधि है।**

अन्य उदाहरण

भो + अन = भवन

नौ + इक = नाविक

भौ + उक = भावुक

9. रेखांकित पदों के कारक बतायें :-

(i) गुरु जी ने सिक्ख धर्म के प्रचार और दीन हीन की सहायता के लिए 'दसवंध मर्यादा' का आरम्भ किया।

(ii) यह अमृतसर नगर में विद्यमान है।

(iii) गुरु जी अपने माता-पिता की तीसरी संतान थे।

(iv) चंदू शाह अपने अपमान का बदला चुकाना चाहता था।

(v) हर साल गुरु अर्जुन देव जी का शहीदी दिवस संसार भर में मनाया जाता है।

(ख) विचार-बोध

1. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें:-

(i) दसवंध मर्यादा से क्या भाव है?

(ii) गुरु अर्जुन देव जी ने सम्राट अकबर से क्या माँगा?

(iii) श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में किन की वाणी संकलित है?

(iv) चन्दू शाह गुरु अर्जुन देव जी का दुश्मन क्यों बना?

(v) गुरु अर्जुन देव जी को गुरु-गद्दी कब प्रदान की गई?

2. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें:-

(i) गुरु अर्जुन देव जी के चरित्र की दो विशेषताओं को स्पष्ट करें।
संकेत (उदारता, दया, सेवाभाव, भक्ति, दृढ़ता, कष्ट सहिष्णुता, निर्भयता)

(ii) जहाँगीर ने गुरु अर्जुन देव जी को क्यों दंडित किया?

(iii) गुरु अर्जुन देव जी का शहीदी दिवस कब और कैसे मनाया जाता है?

(ग) रचनाबोध-अपनी सहेली को पत्र में अमृतसर के दर्शनीय स्थलों का विवरण दें।

(घ) सिक्ख धर्म के पावन ग्रंथ 'गुरु ग्रंथ साहिब' में से किसी श्लोक को याद करें और उसके अर्थ जानें।

(ङ) दस गुरुओं के क्रमशः नाम लिखें।

पाठ–21

ज़िंदगी-एक रिक्शा

ज़िंदगी एक रिक्शा है
जिसे
हर कोई चलाता रहता है
कोई घसीट कर
कोई दौड़ा कर
कोई अकेले
कोई कई को लादकर।

रिक्शे की हालत
है निर्भर
चलाने वाले पर
चाहे तो
खटारा बना दे
चाहे रखे टिप-टाप
सवारियाँ उतनी
वहन कर पाए जितनी।
पहुँचा सके
उन्हें मंज़िल तक
बिना रुके
बिना थके।

चाह में
अधिकाधिक कमाने की
कहीं खो न दे
वह अपना संतुलन
और
बिखर जाए
उसका तन-मन
गृहस्थी की इस गाड़ी में।
गिर पड़े वह

निराशा की गंदी नाली में
पेट रह जाए भूखा
और
कुछ न बचा हो
भोजन की सूनी थाली में।

इसलिए है ज़रूरत
कि वह
एक-एक पुर्जा
रिक्शे का ठीक रखे,
ब्रेक कसवा कर
टायरों को थामे
सीट पर हो सवार
ले उतनी ज़िम्मेदारी
जिससे
वह अपनी
और सवारियों की
स्थिति मज़बूत रखे।

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

1. **शब्दार्थ**

वहन	=	खींचकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाना
चाह	=	इच्छा
संतुलन	=	बराबर होना
स्थिति	=	हालत
गृहस्थी	=	परिवार

2. **वचन बदलें :-**

सवारियाँ	=	________
भूखा	=	________
थाली	=	________
वह	=	________
गाड़ी	=	________
नाली	=	________

3. विपरीत शब्द लिखें :-

निराशा = __________

संतुलन = __________

ज़िंदगी = __________

खोना = __________

4. भाववाचक संज्ञा बनायें :-

भूखा = __________

अकेला = __________

कमाना = __________

अपना = __________

बिखरना = __________

मज़बूत = __________

(ख) विचार-बोध

1. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें:-

(i) प्रस्तुत कविता में कवि ने ज़िंदगी को किसके साथ जोड़ा है?

(ii) रिक्शे की हालत किस पर निर्भर करती है?

(iii) कवि के अनुसार अधिक कमाने की चाह में चालक का क्या नुकसान हो सकता है?

(iv) रिक्शा चालक अपनी स्थिति किस प्रकार मज़बूत कर सकता है?

(v) प्रस्तुत कविता में कवि ने हमें क्या संदेश दिया है?

(ग) भाव-बोध

1. निम्न पंक्तियों का प्रसंग सहित व्याख्या करें:-

चाह में
अधिकाधिक कमाने की
कहीं खो न दे
वह अपना संतुलन
और बिखर जाए
उसका तन-मन
गृहस्थी की इस गाड़ी में।

(घ) रचना-बोध :

'छोटा परिवार सुखी परिवार' विषय पर एक संक्षिप्त निबंध लिखें।

पाठ-22

हार की जीत

(1)

माँ को अपने बेटे, साहूकार को अपने देनदार और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद प्राप्त होता है, वही आनंद, बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। भगवद्भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता। यह घोड़ा बहुत सुंदर था और बड़ा बलवान। इसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था। बाबा भारती उसे सुलतान कहकर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख-देख कर प्रसन्न होते। उन्होंने अपना सब कुछ छोड़ दिया था- रुपया, मान, असबाब, ज़मीन। गाँव से बाहर छोटे से मंदिर में रहते और भगवान का भजन करते, परन्तु सुलतान से बिछुड़ने की वेदना उनके लिए असह्य थी। वे इसकी चाल पर लट्टू थे। कहते, ऐसा चलता है जैसे मोर घनघटा देखकर नाच रहा हो। जब तक संध्या समय सुलतान पर चढ़कर आठ-दस मील का चक्कर न लगा लेते, तब तक उन्हें चैन न आता।

खड्गसिंह उस इलाके का कुख्यात डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। होते-होते सुलतान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया।

बाबा भारती ने पूछा -''खड्गसिंह, क्या हाल है?''

खड्गसिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया - ''आपकी दया है।''

''कहो, इधर कैसे आ गये?''

''सुलतान की चाह खींच लायी।''

''विचित्र जानवर है, देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।''

''मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।''

''उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।''

''कहते हैं, देखने में बहुत सुंदर है।''

''क्या कहना। जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।''

''बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो गया हूँ।''

बाबा और खड्गसिंह दोनों अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड्गसिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से। उसने सहस्र घोड़े देखे थे, परन्तु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुजरा था। सोचने लगा, भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड्गसिह के पास होना चाहिए था। इस साधु को ऐसी चीज़ों से क्या मतलब? कुछ देर तक आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रहा। इसके पश्चात्

हृदय में हलचल होने लगी, बालकों की तरह अधीरता से बोला – ''परंतु बाबा जी, इसकी चाल न देखी तो क्या देखा।''

(2)

बाबा जी मनुष्य ही थे। अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय भी अधीर हो गया। घोड़े को खोलकर बाहर लाये और उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगे। एकाएक उचक कर सवार हो गये। घोड़ा वायु वेग से उड़ने लगा। उसकी चाल देखकर खड्गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाये, उस पर वह अपना अधिकार समझता था। उसके पास बाहुबल था, रुपया था और आदमी भी थे। जाते-जाते बोला– ''बाबा जी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।''

बाबा भारती डर गये। अब उन्हें रात में नींद न आती थी। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रतिक्षण खड्गसिंह का भय लगा रहता। परन्तु कई मास बीत गये और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ लापरवाह हो गये और इस भय को स्वप्न के भय की भाँति मिथ्या समझने लगे।

संध्या का समय था। बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसंनता थी, कभी घोड़े के शरीर को देखते, कभी रंग को और मन में फूले न समाते थे।

सहसा एक ओर से आवाज़ आई – ''ओ बाबा ! इस कंगले की बात भी सुनते जाना।''

आवाज़ में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को थाम लिया, देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में कराह रहा था। बोले – ''तुम्हें क्या कष्ट है?''

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा – ''बाबा, मैं दु:खी हूँ, मुझ पर रहम करो। रामावाला यहाँ

से तीन मील है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा तुम्हारा भला करेगा।''

''वहाँ तुम्हारा कौन है?''

''दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा। मैं उनका सौतेला भाई हूँ।''

बाबा भारती ने घोड़े से उतर कर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़ कर धीरे-धीरे चलने लगे।

सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम हाथ से छूट गयी। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा, अपाहिज घोड़े की पीठ पर तनकर बैठा है और घोड़े को दौड़ाये लिये जा रहा है। उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गयी। यह अपाहिज खड्गसिंह डाकू था।

बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और उसके पश्चात् कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्ला कर बोले - ''ज़रा ठहर जाओ।''

''बाबा जी, यह घोड़ा अब न दूँगा।''

''परन्तु एक बात सुनते जाओ खड्गसिंह। एक प्रार्थना करता हूँ, उसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जायेगा।''

''बाबा जी, आज्ञा कीजिये। मैं आपका दास हूँ, केवल यह घोड़ा न दूँगा।''

''अब घोड़े का नाम न लो। मैं तुमको इसके विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।''

खड्गसिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसका विचार था कि उसे इस घोड़े को लेकर वहाँ से भागना पड़ेगा परन्तु बाबा भारती ने स्वयं उससे कहा कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना। इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है?

खड्गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परन्तु कुछ समझ न सका। हार कर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के मुख पर गाड़ दी और पूछा-''इसमें आपको क्या डर है?''

बाबा भारती ने उत्तर दिया- ''लोगों को यदि इस घटना का पता लग गया, तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे'' और यह कहते-कहते उन्होंने सुलतान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया जैसे उनका उससे कोई संबंध ही न रहा हो।

बाबा भारती चले गये, परंतु उनके शब्द खड्गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था, कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव है। उन्हें इस घोड़े से प्रेम था, इसे देख कर उनका मुख फूल की भाँति खिल जाता था। कहते थे, ''इसके बिना मैं रह न सकूँगा।'' इसकी रखवाली में वे कई रात सोए नहीं। भजन-भक्ति न कर रखवाली करते रहे। परंतु आज उनके मुख पर दुःख की रेखा तक न दिखाई पड़ती थी। उन्हें केवल यह ख्याल था कि कहीं लोग गरीब पर विश्वास करना न छोड़ दें। ऐसा मनुष्य नहीं, देवता है।

रात्रि के अंधकार में खड्गसिंह बाबा भारती के मंदिर में पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूरी पर गाँवों के कुत्ते भौंक रहे थे। मंदिर के अंदर कोई शब्द सुनाई न देता था। खड्गसिंह सुलतान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक खुला पड़ा था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे। परंतु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था। खड्गसिंह ने आगे बढ़कर सुलतान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकल कर सावधानी से फाटक बंद कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे।

रात्रि का तीसरा पहरा बीत चुका था। चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल कर ठंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात् इस प्रकार जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो। उनके पाँव अस्तबल की ओर बढ़े, परंतु फाटक पर पहुँच कर उनको अपनी भूल महसूस हुई। साथ ही घोर निराशा ने पाँवों को मन-मन भर का भारी बना दिया। वे वहीं रुक गये।

घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवों की सुपरिचित चाप पहचान ली और ज़ोर से हिनहिनाया।

अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसंनता से दौड़ते हुए अंदर घुसे और अपने प्यारे घोड़े के गले से लिपट कर इस प्रकार रोने लगे मानो कोई पिता कुछ दिन से बिछुड़े हुए पुत्र से मिल रहा हो। बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते।

फिर वे संतोष से बोले, "अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह न मोड़ेगा।"

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

1. शब्दार्थ

वेदना	=	पीड़ा
खरहरा करना	=	पशुओं के लिए बने ब्रुश से खुजलाना व रगड़ना
अधीरता	=	व्याकुलता
अपाहिज	=	लंगड़ा, लूला (अंगहीन)
पश्चाताप	=	पछतावा
अभिलाषा	=	इच्छा
मिथ्या	=	झूठ
विस्मय	=	आश्चर्य
असह्य	=	न सहने योग्य (बहुत अधिक)
छवि	=	शोभा
कीर्ति	=	यश
सुपरिचित	=	जाने पहचाने हुए

2. **इन मुहावरों का इस प्रकार वाक्य में प्रयोग करें कि उनके अर्थ स्पष्ट हो जायें :-**

लट्टू होना ________ ______________________________________

अधीर हो उठना ________ ______________________________________

पीठ पर हाथ फेरना ________ ______________________________________

हृदय पर साँप लोटना ________ ______________________________________

आँखों में चमक होना ________ ______________________________________

फूले न समाना ________ ______________________________________

दिल टूट जाना ________ ______________________________________

खिल जाना ________ ______________________________________

3. चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल कर ठंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात् इस प्रकार जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर बढ़े।

उपरोक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द किस प्रकार के क्रिया विशेषण हैं?

(संकेत-समय, स्थान, रीति, दिशा)

4. **इन शब्दों के विशेषण बनायें :-**

अंक = __________

हृदय = __________

विस्मय = __________

भय = __________

निश्चय = __________

5. **विपरीतार्थक शब्द लिखें :-**

उपस्थित = __________

धीर = __________

स्वीकार = __________

प्रकट = __________

प्रसन्न = __________

सह्य = __________

आज्ञा = __________

ग़रीब = __________

मिथ्या = __________

प्रशंसा = __________

निराशा = __________

भय = ____________

निश्चय = ____________

भाग्य = ____________

6. **अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द लिखें:-**

जिसे सहन न किया जा सके = ____________

घोड़े बाँधने का स्थान = ____________

7. **विराम चिह्न लगायें :-**

बाबा जी आज्ञा कीजिए मैं आपका दास हूँ

यह घोड़ा न दूँगा

वहाँ तुम्हारा कौन है

ओ बाबा इस कंगले का बात भी सुनते जाना

8. शब्द के पहले 'सु' तथा 'अ' उपसर्ग का प्रयोग कर वाक्य बनाना सीखें:–

(क)	(ख)
परिचित–सुपरिचित	भाव–अभाव
विदित–सुविदित	सह्य–असहाय
पुत्र–सुपुत्र	टूट–अटूट (गहरा, पक्का)
लक्षणा–सुलक्षणा (अच्छे गुणों वाली)	धीर–अधीर
कर्म–सुकर्म (पुण्य–अच्छे व नेक काम)	बोध–अबोध (नादान)
जन–सुजन	धर्म–अधर्म
गम–सुगम (आसान)	छूत–अछूत
शिक्षित–सुशिक्षित	ज्ञान–अज्ञान
गति–सुगति	व्यय–अव्यय
	गम–अगम

10. **प्रयोगात्मक व्याकरण**

भगवत् + भजन = भगवद्भजन (त् को द्)

त् के बाद पवर्ग का तीसरा अक्षर 'भ' होने से 'त्' को 'द्' हो गया।

अन्य उदाहरण:-

सत् + भावना	=	सद्भावना	(त् को द्)
भगवत् + भक्ति	=	भगवद्भक्ति	(त् को द्)
सत् + भाव	=	सद्भाव	(त् को द्)
जगत् + ईश	=	जगदीश	(त् को द् + ई = दी)

सत् + उपयोग = सदुपयोग (त् को द् + उ = दु)

अतएव 'त्' के बाद 'ग्', 'ध्', 'द्' 'ब्', 'भ्' (कवर्ग, तवर्ग, पवर्ग का तीसरा व चौथा व्यंजन) या य, र ल, व या कोई स्वर हो तो उसके स्थान पर द् हो जाता है।

(ख) विचार-बोध

1. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें:-

(i) बाबा भारती के घोड़े का क्या नाम था?

(ii) खड्गसिंह कौन था?

(iii) खड्गसिंह बाबा भारती से क्या चाहता था?

(iv) अपाहिज कौन था?

(v) बाबा भारती ने खड्गसिंह से क्या प्रार्थना की?

(vi) इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना, बाबा भारती ने ऐसा क्यों कहा?

(vii) जब खड्गसिंह घोड़े को लौटा गया तो बाबा भारती ने क्या कहा?

2. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें:-

(i) सुलतान को पाने के लिए खड्गसिंह ने कौन-सी चाल चली?

(ii) कैसे पता चलता है कि बाबा भारती अपने घोड़े को बहुत प्यार करते थे?

(iii) खड्गसिंह ने घोड़े व उसकी चाल को देखकर मन में क्या सोचा?

(iv) ''इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।'' बाबा भारती ने खड्ग सिंह से ऐसा क्यों कहा?

(v) बाबा भारती का ऐसा कौन-सा वाक्य था जिसमें खड्गसिंह को घोड़ा वापिस देने पर मज़बूर कर दिया?

(vi) बाबा हारकर भी जीत गए और खड्गसिंह जीतकर भी हार गया, कैसे?

3. यह वाक्य किसने, किससे कहा:-

(i) यह घोड़ा आपके पास नहीं रहने दूँगा।

(ii) क्यों, तुम्हें क्या कष्ट है?

(iii) इस कंगले की बात भी सुनते जाना।

(iv) इसकी चाल न देखी तो क्या देखा?

(v) विचित्र जानवर है, देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।

(ग) रचना-बोध:-

* कहानी का सार अपने शब्दों में दें।
* आपके पड़ोस में चोरी हो गयी है, इस घटना की प्राथमिक सूचना अपने स्थानीय पुलिस चौकी में पत्र के माध्यम से लिखें।

पाठ 23

बहू की विदा

(विनोद रस्तोगी सफल एकांकीकार हैं। 'एकांकी' को नाटक का ही एक प्रकार कहा जा सकता है। प्रस्तुत एकांकी 'बहू की विदा' दहेज की समस्या को लेकर लिखी गयी है। इसके अन्त में दहेज की समस्या का समाधान भी प्रस्तुत करके लेखक ने सराहनीय कार्य किया है।)

पात्र-परिचय

जीवन लाल : एक धनी व्यापारी, अवस्था पचास वर्ष।
राजेश्वरी : जीवनलाल की पत्नी, अवस्था छियालिस वर्ष।
रमेश : जीवनलाल का पुत्र, अवस्था बाईस वर्ष।
कमला : रमेश की पत्नी, अवस्था उन्नीस वर्ष।
प्रमोद : कमला का भाई, अवस्था तेईस वर्ष।

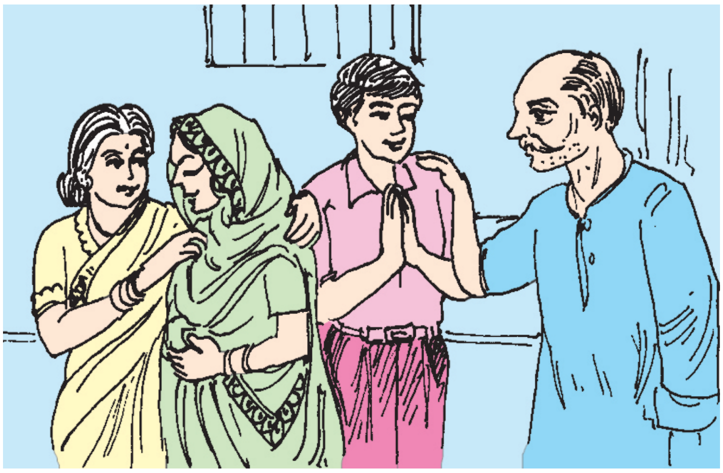

(कमरा आधुनिक ढंग से सजा है। सामने की ओर बायें कोने में रेडियो और दायें कोने में पुस्तकों का रैक है। कमरे के बीच में सोफा-सेट है। छोटी गोल मेज़ पर सुंदर फूलदान रखा है। कमरे में दो द्वार हैं। सामने वाला द्वार अंदर जाने के लिए है और बायीं ओर का द्वार बाहरी बरामदे में खुलता है। दोनों द्वारों पर पर्दे पड़े हैं। दायीं ओर खिड़की, जो खुली हुई है।

पर्दा उठने पर जीवनलाल खिड़की के समीप खड़े हुए दिखायी पड़ते हैं। वे बाहर की ओर देख रहे हैं। भरे चेहरे पर बड़ी-बड़ी मूँछें हैं। सिर गंजा है। धोती-कुर्त्ता पहने हैं। मुख पर गंभीरता और समृद्धि के चिह्न हैं।

उनसे कुछ दूर हटकर ही प्रमोद विनम्र भाव से खड़ा है। वह पैंट और बुशर्ट पहने है। चेहरे पर निराशाजन्य करुण भाव है।)

प्रमोद : (आगे बढ़कर धीमे स्वर में) क्या निर्णय किया आपने?

जीवनलाल : विदा नहीं होगी।

प्रमोद : लेकिन ज़रा सोचिये तो। यदि आपने विदा नहीं की तो बहन की क्या दशा होगी?

जीवनलाल : मैंने उसकी दशा का ठेका नहीं लिया है?

प्रमोद : हर लड़की पहला सावन अपनी सखी-सहेलियों के साथ हँस-खेलकर बिताने का सपना देखती है।

जीवनलाल : जानता हूँ।

(जीवनलाल सोफे पर बैठकर जम्हाई लेते हैं, मानो प्रमोद की बातों से ऊब रहे हों।)

प्रमोद : यह जानकर भी ....।

जीवनलाल : अपना निर्णय सुना चुका हूँ। विदा नहीं होगी।

प्रमोद : यदि मैं कमला को बिना लिये ही गया,तो माँ का हृदय टूट जायेगा।

जीवनलाल : मैं मज़बूर हूँ। अगर माँ-बहिन का इतना ही ख़्याल था तो दहेज पूरा क्यों नहीं दिया?

प्रमोद : (दीन स्वर में) अपनी सामर्थ्य के अनुसार जितना भी हो सका हमने दे दिया। फिर भी अगर .... ।

जीवनलाल : (कड़े स्वर में) अगर तुम्हारी सामर्थ्य कम थी तो अपनी बराबरी का घर देखते। झोंपड़ी में रहकर महल से नाता क्यों जोड़ा?

प्रमोद : (हाथ जोड़कर) जी ....।

जीवनलाल : (उठकर आवेश से टहलते हुए) देना तो दूर, बारात की ख़ातिर भी ठीक से नहीं की गयी। मेरे नाम पर जो धब्बा लगा, मेरी शान को जो ठेस पहुँची, भरी बिरादरी में जो हँसी हुई उस करारी चोट का घाव आज भी हरा है। जाओ, कह देना अपनी माँ से कि अगर बेटी विदा कराना चाहती है, तो पहले उस घाव के लिए मरहम भेजें।

प्रमोद : जी............. आप इस समय तो विदा कर दें। हम गौने में आपकी हर माँग पूरी करने की चेष्टा करेंगे।

जीवनलाल : मैंने दुनिया देखी है प्रमोद ! ये बाल धूप में सफेद नहीं हुए हैं और तुम ....। (उत्तेजित स्वर में) कल के छोकरे मुझे बेवकूफ बनाना चाहते हो।

प्रमोद : यह आप क्या कह रहे हैं?

जीवनलाल : ठीक कह रहा हूँ। मेरा फैसला आख़िरी है। विदा तभी होगी जब पाँच हज़ार नकद (दायाँ हाथ फैलाकर) इस हाथ पर रख दोगे।

प्रमोद : (आवेश में) यह तो सरासर अन्याय है। शिकायत आपको हमसे है। उस भोली-भाली लड़की ने आपका क्या बिगाड़ा है जो विदा न करके आप उससे बदला ले रहे हैं?

अगर रमेश बाबू होते ....।

जीवनलाल : तो वह क्या कर लेता? मेरे सामने मुँह खोलने की हिम्मत नहीं है उसमें। वह मेरा बेटा है। तुम्हारी तरह बड़ों के मुँह लगने की बदतमीजी करने वाला कोई आवारा छोकरा नहीं।

प्रमोद : (अपमान से तिलमिलाकर) बाबू जी! बेटीवाला समझकर ही आप मेरा अपमान कर रहे हैं, किन्तु............ यह न भूलिये कि आप भी बेटी वाले हैं।

जीवनलाल : हाँ, हम भी बेटीवाले हैं। लेकिन तुम्हारी तरह नहीं। पिछले महीने हमने भी अपनी गौरी की शादी की है। वह ख़ातिरदारी की कि बारातवाले दंग रह गये। इतना दहेज दिया कि देखने वालों ने दाँतों तले उँगली दबा ली। (दर्द-मिश्रित आवेश) तुम मेरी बराबरी करोगे? हुँ........ बेटीवाले.......! बेटीवाले होकर भी हमारी मूँछ ऊँची है, समझे!

प्रमोद : जी .... ।

जीवनलाल : रमेश गया है गौरी को विदा कराने (कलाई पर बँधी घड़ी देखकर) कुछ देर में उसे लेकर आता ही होगा। मेरी बेटी पहला सावन यहाँ बितायेगी। तुम्हारी बहिन के सपने कभी पूरे नहीं होंगे और उसके सपनों के खून का दाग तुम्हारे हाथों और तुम्हारी माँ के आँचल पर होगा। समझे!

प्रमोद : (व्यंग्य से) जो हमारी बहिन है क्या वह आपकी कोई नहीं है?

जीवनलाल : (तेज़ी से) बेटी और बहू को एक तराजू में तौलना चाहते हो? बेटी बेटी है और बहू बहू।

प्रमोद : ठीक है। जब आप अपनी जिद्द पर अड़े हैं तो विनती करना व्यर्थ है (रुककर धीमे स्वर में) क्या जाने से पहले एक बार बहिन से मिल सकता हूँ?

जीवनलाल : ज़रूर! और हाँ, उसे यह भी बताते जाना कि अगली बार मेरे लिए मरहम लेकर विदा कराने कब आओगे? (ऊँचे स्वर में) अरे, सुनती हो गौरी की माँ ! ज़रा बहू को भेज दो। अपने भाई से मिल ले आकर! (सहज स्वर में) मैं तब तक देखूँ कि माली के बच्चे ने झूला डाला या नहीं। (द्वार की ओर बढ़ते हैं। द्वार का पर्दा हटाकर मुड़ते हुए) गौरी के लिए झूला डाल रहा हूँ लॉन में।

(जीवन का प्रस्थान। प्रमोद थका-सा सोफे पर बैठ जाता है। अंदर से कमला आती है। चाँद - से सुंदर मुखड़े पर उदासी की घटा है। हाथों में लाल चूड़ियाँ हैं। रेशमी साड़ी-ब्लाउज पहने है। प्रमोद के पास जाकर खड़ी हो जाती है। सिर नीचा किये।)

प्रमोद : (भारी स्वर में) बैठ जाओ कमला।

(कमला पास ही बैठ जाती है।)

प्रमोद : अच्छी तरह तो हो?

(कमला सिसकने लगती है।)

प्रमोद : (आर्द्र स्वर में) पागल न बनो कमला। रोओ मत! इन मोतियों का मूल्य समझने वाला यहाँ कोई नहीं है। पानी में पत्थर नहीं पिघल सकता।

कमला : (सिसकती हुई) भैया! क्या ....।

प्रमोद : घबराओ मत! मैं जल्दी ही फिर आऊँगा और उस बार विदा अवश्य होगी; क्योंकि मैं चोट का मरहम लेकर आऊँगा।

कमला : (न समझने के ढंग से) मरहम .... ?

प्रमोद : हाँ कमला! हमारे व्यवहार से बाबूजी के कलेजे में घाव हो गया है। उन्हें मरहम चाहिये और उस मरहम की कीमत है पाँच हज़ार रुपये!

(कमला चौंककर भाई की ओर देखती है)

प्रमोद : तुम चिंता न करो, कमला! मरहम का प्रबंध हो जायेगा। इस गिरे हाल में भी मकान सात-आठ हज़ार में बिक ही जायेगा।

कमला : (व्याकुलतापूर्ण आग्रह से) मेरी विदा के लिए घर न बेचना, भैया! आपको मेरे सुख सुहाग की सौगंध।

प्रमोद : यह क्या कह रही हो तुम ! क्या तुम नहीं चाहती कि पहला सावन सखी-सहेलियों के साथ माँ के घर बिताओ?

कमला : किस लड़की की यह कामना नहीं होगी, भैया! लेकिन .... उस कामना की पूर्ति के लिए इतनी बड़ी कीमत चुकाना कहाँ तक ठीक है। साल-दो-साल में विमला का ब्याह भी आपको करना है। आवेश में आकर .....।

प्रमोद : (बीच में ही) लेकिन तुम .... ।

कमला : मेरी चिंता आप न करें। सच, विदा न होने से मुझे ज़रा भी दु:ख न होगा।

प्रमोद : कमला .... ।

कमला : गौरी आ रही है। बहुत अच्छा स्वभाव है उसका, हर समय हँसती-हँसाती रहती है। उसके साथ रहकर मुझे सहेलियों की कमी बिल्कुल नहीं अखरेगी। आप विश्वास करें, भैया !

प्रमोद : लेकिन आज नहीं तो कल रुपया तो देना ही पड़ेगा, कमला! कागज़ के टुकड़ों पर अपना स्नेह और प्यार बेचने वालों के बीच तुम इस तरह कब तक रह सकोगी?

कमला : धीरे-धीरे सब ठीक हो जायेगा भैया! माँजी तो ममता की मूर्ति हैं ही, बाबूजी ज़रा जिद्दी स्वभाव के हैं। समय के साथ वे भी सब भूल जायेंगे।

प्रमोद : मुझे तो ऐसा लगता है कि सब एक ही धातु के बने हैं। हो सकता है माँजी की ममता सिर्फ दिखावा हो।

(अंदर से राजेश्वरी का प्रवेश। गौरा रंग, स्वस्थ शरीर, सफ़ेद साड़ी और ब्लाउज पहने है।)

राजेश्वरी : कैसा दिखावा, भैया ?

(प्रमोद चौंक पड़ता है। कमला और प्रमोद उठने का उपक्रम करते हैं।)

राजेश्वरी : (दूसरे कोच पर बैठती हुई) बैठे रहो तुम लोग! (हँसकर) क्या बातें हो रही थीं भाई-बहन में?

प्रमोद : बस, कुशल-क्षेम पूछ रहा था।

राजेश्वरी : हाँ, विदा के लिए क्या कहा उन्होंने? (प्रमोद मौन रहता है। कमला दृष्टि नीची कर लेती है।)

राजेश्वरी : समझ गयी, अपनी जिद्द के सामने तो वे किसी की सुनते ही नहीं। जब तुम्हारी चिट्ठी आयी थी तभी मना कर रहे थे। मैं तो समझाते-समझाते हार गयी। क्या कहा उन्होंने ?

(प्रमोद अब भी मौन है।)

राजेश्वरी : मुझसे शर्म कैसी? मेरे लिए जैसा रमेश वैसे ही तुम। बोलो, कितना रुपया चाहते हैं वे ?

प्रमोद : जी........... जी रुपये की तो कोई बात नहीं, वे तो ......।

राजेश्वरी : (प्रमोद की ओर गूढ़ दृष्टि से देखती हुई) बोलो, कितना रुपया लेकर वे विदा करने को तैयार हैं? चुप क्यों हो? बताओ।

प्रमोद : (धीमे और उदास स्वर में) पाँच हज़ार।

राजेश्वरी : बस! मैं देती हूँ तुम्हें रुपये। उनके मुँह पर मारकर कहना कि यह लो कागज़ के रंग-बिरंगे टुकड़े, जिन्हें तुम आदमी से ज्यादा प्यार करते हो (उठकर सामने वाले द्वार की ओर बढ़ती हुई) मैं अभी लाती हूँ।

प्रमोद : (उठकर) ठहरिये, माँजी। (राजेश्वरी) रुक जाती है और मुड़कर प्रमोद की ओर देखती है।

प्रमोद : मुझे रुपये नहीं चाहिये। मैं बिना विदा कराये ही जा रहा हूँ। (कमला उसी प्रकार मूर्तिवत् बैठी है।)

राजेश्वरी : (लौटती हुई) यह क्या कह रहे हो बेटा? मेरे रहते विदा न हो, यह कभी नहीं हो सकता। मैं माँ हूँ, माँ के दिल को समझती हूँ (भारी स्वर में) जिस तरह उतावली होकर मैं गौरी की राह देख रही हूँ उसी तरह तुम्हारी माँ भी कमला की राह देख रही होगी। नहीं, विदा ज़रूर होगी। तुम अकेले नहीं जाओगे।

(कमर से चाबियों का गुच्छा निकालकर कमला की ओर बढ़ाती हुई) जा बेटी तिज़ोरी से रुपये निकाल ला।)

(कमला गुच्छा लेने के लिए हाथ आगे नहीं बढ़ाती) प्रमोद खिड़की की ओर मंद गति से बढ़ता है।

राजेश्वरी : जाती क्यों नहीं? (गुच्छा कमला के हाथ में थमाती हुई) जल्दी कर।

(कमला उठकर माँजी कहती है और फिर सिसकने लगती है। राजेश्वरी 'मेरी बेटी' कह कर उसे हृदय से लगा लेती है।)

जीवनलाल : (बाहर से) अरे सुनती हो। गौरी के आने का समय हो गया है। तुमने स्वागत की कोई तैयारी नहीं की।

राजेश्वरी : (कमला से) जा, बेटी तू अंदर जा।

(कमला अंदर जाती है। प्रमोद मुड़कर बाहर वाले द्वार की ओर देखता है जिधर से जीवनलाल आते हैं।)

जीवनलाल : अरे, तुम यहाँ खड़ी हो? ज़रा तैयारी करो स्वागत की, ज़रा यह भी तो देख ले कि नाकवाले अपनी बेटी का स्वागत कैसे करते हैं।

राजेश्वरी : (चिढ़कर)गालियों के अलावा कभी सीधी बात नहीं निकलती मुँह से? जब देखो तब बेढंगी बातें!

जीवनलाल : यह लो! इसमें कौन-सी गाली दे दी मैंने?

राजेश्वरी : तुम समझते हो कि दुनिया में एक तुम्हीं नाकवाले हो और सब नकटे हैं।

जीवनलाल : तुम्हें तो मेरी हर बात में बुराई ही बुराई दिखायी देती है। प्रमोद, तुम्हीं बताओ, मैंने कोई बुरी बात कही है?

प्रमोद : (धीरे-धीरे आगे बढ़ता हुआ) ठीक ही कहा है आपने, आज के युग में पैसा ही नाक और मूँछ है, जिसके पास पैसा नहीं वह नाक और मूँछ होते हुए भी नकटा है, मूँछकटा है।

(नेपथ्य से हार्न का स्वर)

जीवनलाल : (प्रसंन स्वर में) आ गई मेरी गौरी। (राजेश्वरी से) अरे, खड़ी-खड़ी मेरा मुँह क्या देख रही हो? अंदर से मिठाई का थाल लाओ।

(राजेश्वरी उसी प्रकार खड़ी रहती है। उसकी दृष्टि बाहर वाले द्वार की ओर है। प्रमोद भी उसी ओर देख रहा है। अन्दर वाले द्वार के पर्दे की ओट में कमला खड़ी है। बाहर से उसका हाथ दिखायी पड़ रहा है। जीवनलाल बड़े उत्साह से द्वार की ओर बढ़ते हैं। तभी बाहर से रमेश आता है। इकहरे बदन का सुन्दर नवयुवक है वह। पैंट और कमीज पहने है। हाथ में बरसाती कोट है। चेहरे पर उदासी के चिह्न हैं। बरसाती कोट कोच पर रखकर चुपचाप खड़ा हो जाता है।)

जीवनलाल : (बाहर वाले द्‌वार का पर्दा हटाकर बाहर झाँकने के बाद घबराये हुए स्वर में) गौरी कहाँ है?

रमेश : (धीमे स्वर में) वह नहीं आयी।

जीवनलाल : नहीं आयी। क्यों तबीयत तो ठीक है उसकी?

रमेश : जी हाँ।

जीवनलाल : फिर?

रमेश : उन्होंने विदा नहीं की।

(राजेश्वरी हतप्रभ-सी कोच पर बैठ जाती है। कमला के हाथ में कंपन होता है, जिससे पर्दा हिलता जाता है। प्रमोद बड़े ध्यान से जीवनलाल की ओर देख रहा है।)

जीवनलाल : (जैसे किसी की छाती पर घूँसा मार दिया हो) विदा नहीं की? क्यों नहीं की विदा?

रमेश : कह रहे थे दहेज पूरा नहीं दिया गया।

जीवनलाल : (बिगड़कर) हमने तो जीवनभर की कमाई दे दी और उनकी नज़र में दहेज पूरा नहीं दिया गया। लोभी कहीं के।

राजेश्वरी : (उठकर) उन्हें क्यों भला-बुरा कह रहे हो? बेटीवाले चाहे अपना घर-द्‌वार बेचकर दे दें पर बेटेवालों की नाक-भौंह सिकुड़ी ही रहती है।

जीवनलाल : मगर शराफत और इंसानियत .... ।

राजेश्वरी : (बीच में ही) अब शराफत और इंसानियत की दुहाई देते हो। कुछ देर पहले तो .... ।

जीवनलाल : चुप रहो तुम।

राजेश्वरी : बहुत चुप रही। अब नहीं रहूँगी। आख़िर क्या कमी है बहू के दहेज में? मगर तुम हो कि ....

जीवनलाल : (अनसुनी करके) मेरी बेटी को विदा न करके उन्होंने मेरा अपमान किया है। मैं .... मैं .... ।

राजेश्वरी : तुम भी तो किसी की बेटी को विदा न करके अपमान कर रहे हो किसी का।

जीवनलाल : (चीखकर) गौरी की माँ!

राजेश्वरी : अब भी आँखें नहीं खुलीं? जो व्यवहार अपनी बेटी के लिए तुम दूसरों से चाहते हो, वही दूसरे की बेटी को भी दो। जब तक बहू और बेटी को एक-सा नहीं समझोगे न तुम्हें सुख मिलेगा और न शांति।

(जीवनलाल बेचैनी से इधर-उधर टहलते हैं। वे हाथ मल रहे हैं। सिर नीचे झुका है। प्रमोद रमेश के पास जाकर खड़ा हो जाता है।)

जीवनलाल : बहू और बेटी! बेटी और बहू! अजीब उलझनें हैं। कुछ समझ में नहीं आता।

राजेश्वरी : अगर बेटेवाला यह याद रखे कि वह बेटीवाला भी है तो सब उलझनें सुलझ जायें।

जीवनलाल : (रुककर पत्नी की ओर देखते हुए) ...... शायद तुम ठीक कहती हो।

प्रमोद : (आगे बढ़कर धीमे स्वर में) अब मुझे आज्ञा दीजिये, बाबूजी।

जीवनलाल : (चौंककर) ऐं........... ।

प्रमोद : मेरी गाड़ी का समय हो रहा है। मैं जा रहा हूँ (द्वार तक आता है फिर घूमकर) मैं जल्दी ही फिर आऊँगा। विश्वास रखें, इस बार आपकी चोट के लिए मरहम .... लाना न भूलूँगा।

जीवनलाल : (दु:खी स्वर में) ठहरो प्रमोद! मुझे लज्जित न करो बेटा। मेरी चोट का इलाज बेटी के ससुराल वालों ने दूसरी चोट से कर दिया है।

प्रमोद : (लौटता हुआ आश्चर्य से) बाबूजी............ ।

जीवनलाल : (नि:श्वास छोड़कर) कभी-कभी चोट भी मरहम का काम कर जाती है बेटा।

(राजेश्वरी की ओर मुड़कर) अरे, खड़ी-खड़ी हमारा मुँह क्या ताक रही हो? अंदर जाकर तैयारी क्यों नहीं करती? बहू को विदा नहीं करना है क्या?

(कमला का हाथ पर्दे की ओट में हो जाता है। वह हर्ष के आँसू पोंछती हुई शीघ्रता से अंदर आती है। रमेश और प्रमोद मुस्कराकर एक-दूसरे की ओर देखते हैं। जीवनलाल मंद गति से खिड़की की ओर बढ़ते हैं)

(धीरे-धीरे यवनिका गिरती है)

अभ्यास

(क) भाषा बोध :

1. शब्दार्थ :

समृद्धि	=	धन-धान्य से पूर्णता
विनम्र	=	झुका हुआ
निराशाजन्य	=	निराशा उत्पन्न करने वाला
सामर्थ्य	=	शक्ति
सरासर	=	बिल्कुल
अन्याय	=	अनुचित, गलत
उत्तेजित	=	उतावला, क्रुद्ध
बदतमीजी	=	अशिष्टता, अभद्रता
आर्द्र	=	भीगा, गीला
सुख-सुहाग	=	पति के जीवन से मिलने वाला सुख

सौगंध	=	कसम
आवेश	=	जोश
कामना	=	इच्छा
मूर्तिवत्	=	मूर्ति के समान
उपक्रम	=	प्रयास, प्रयत्न
हतप्रभ	=	उत्साह ठंडा पड़ जाना, हतोत्साहित
नाक वाला	=	प्रतिष्ठित
घूँसा	=	मुक्का
शराफ़त	=	भला मानसी, भद्रता
इंसानियत	=	मनुष्यता
यवनिका	=	पर्दा

2. निम्नलिखित मुहावरों/लोकोक्ति को अपने वाक्यों में प्रयोग करें :-

हृदय टूटना ________ ____________________________________

झोंपड़ी में रहकर महल ________ ____________________________________

से नाता जोड़ना ________ ____________________________________

धूप में बाल सफ़ेद होना ________ ____________________________________

दाँतों तले अँगुली दबाना ________ ____________________________________

पानी से पत्थर नहीं पिघलता________ ____________________________________

नाक भौंह सिकोड़ना ________ ____________________________________

कलेजे में घाव होना ________ ____________________________________

मुँह ताकना ________ ____________________________________

धब्बा लगना ________ ____________________________________

सपनों का खून होना ________ ____________________________________

तराजू में तौलना ________ ____________________________________

नाक होना ________ ____________________________________

मुँह से सीधी बात न निकलना________ ____________________________________

हाथ मलना ________ ____________________________________

3. लिंग बदलो :-

माँ	=	– – –	पति	=	– – –
पुत्र	=	– – –	भाई	=	– – –
सास	=	– – –	देवर	=	– – –
जेठ	=	– – –	ननद	=	– – –
बहन	=	– – –	समधि	=	– – –
बाबू	=	– – –	मालिक	=	– – –

4. भाववाचक संज्ञा बनाओ :-

अपना	=	अपनापन	मुस्कराना	=	मुस्कराहट
बच्चा	=	– – –	घबराना	=	– – –
पराया	=	– – –	सजाना	=	– – –
भारी	=	– – –	लिखना	=	– – –

5. विराम चिह्न लगाएँ :-

(i) तो वह क्या कर लेता

(ii) बहू और बेटी, बेटी और बहू अजीब उलझनें हैं कुछ समझ में नहीं आता

(iii) बहुत अच्छा स्वभाव है उसका हर समय हँसती-हँसाती रहती है

(iv) सच विदा न होने से मुझे ज़रा भी दु:ख न होगा

(v) हाँ विदा के लिए क्या कहा उन्होंने

6. इन वाक्यों को शुद्ध करें :-

(i) मैं आपको केवल पाँच सौ रुपये मात्र ही दे सकता हूँ।

(ii) उसने अपनी बात सप्रमाण सहित कही।

(iii) हम सब यहाँ सकुशलतापूर्वक हैं।

(iv) मकान लगभग कोई सात-आठ हज़ार में बिक जायेगा।

7. प्रयोगात्मक व्याकरण

(i) जीवनलाल खिड़की के समीप खड़े हुए दिखाई दिये।

(ii) कमरे के बीच में सोफा सेट है।

(iii) हर लड़की पहला सावन अपनी सखी-सहेलियों के साथ हँस-खेलकर बिताने का सपना देखती है।

(iv) मेरे सामने मुँह खोलने की हिम्मत किसी में नहीं है।

(v) हम अपनी बेटी के लिए आए हैं।

(vi) हमने अपने सामर्थ्य के अनुसार तो दे दिया।

(vii) क्या गालियों के अलावा कभी सीधी बात नहीं निकलती मुँह से।

(viii) वह प्रमोद के पास जाकर खड़ी हो जाती है।

उपर्युक्त वाक्यों में के समीप, के बीच, के साथ, सामने, के लिए, के अनुसार, के अलावा, के पास शब्द संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों के साथ आकर उनका संबंध वाक्य में दूसरे शब्दों के साथ बता रहे हैं। अत: ये संबंध बोधक हैं।

अतएव जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ जुड़कर उनका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों से बताते हैं, उन्हें संबंध बोधक कहते हैं।

यदि इन संबंध बोधक अविकारी शब्दों को वाक्य में से निकाल दिया जाए तो वाक्य का कोई अर्थ नहीं रह जाता।

अन्य संबंध बोधक शब्द- पहले, बाद, आगे, पीछे, बाहर, भीतर, ऊपर, नीचे, अनुसार, तरह, बिना, समान, निकट, बगैर, रहित, सिवाय, अतिरिक्त, तक, भर, संग आदि।

संबंधबोधक का प्रयोग दो प्रकार से होता है:-

(i) विभक्तियों के साथ

(ii) विभक्तियों के बिना

(i) विभक्तियों के साथ संबंधबोधक का प्रयोग-

* वह माँ के साथ बाज़ार गया है।

** वह प्रमोद के पास जाकर खड़ी हो गयी।

(ii) विभक्तियों के बिना संबंधबोधक का प्रयोग-

* मैं बिना विदा कराए ही जा रहा हूँ।

** ज्ञान बिना जीवन बेकार है।

*** हमने जीवन भर की कमाई दे दी।

8. उपयुक्त योजक भरकर वाक्य पूरे करें :-

1 जीवन लाल सोफे पर बैठकर जम्हाई लेते हैं ________ प्रमोद की बातों से ऊब रहे हों (मानो, अत:)।

2 ________ माँ-बहन का इतना ही ख्याल था ________ दहेज पूरा क्यों नहीं दिया? (चाहे, फिर भी, अगर, तो)

3 उन्होंने इतना दहेज दिया ________ देखने वालों ने दाँतों तले उँगली दबा ली। (कि, और)

4 ________ बेटी वाले अपना घर-द्वार बेचकर दे दें ________ बेटे वालों की नाक-भौंह सिकुड़ी ही रहती है (यद्यपि, तथापि, चाहे, फिर भी)

5 मुझे तो ऐसा लगता है ________ सब एक ही धातु के बने हैं। (या, कि)

6 मेरे लिए ________ रमेश ________ ही तुम। (जैसा, वैसे, यदि...तो)

7 ________ मैं उतावली होकर गौरी की राह देख रही हूँ ________ तुम्हारी माँ भी कमला की राह देख रही होगी । (जिस तरह, उसी तरह, यदि, नहीं तो)

(ख) विचार-बोध :-

1. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(i) जीवन लाल अपनी बहू कमला की विदाई क्यों नहीं कर रहे थे?

(ii) प्रमोद को जीवनलाल ने किस बात पर बदतमीज और आवारा छोकरा कहा?

(iii) प्रमोद अपनी बहन कमला को लेने क्यों आया?

(iv) जीवन लाल कितने रुपये लेकर बहू को विदा करने को तैयार थे?

(v) जीवन लाल की बेटी क्यों नहीं आई?

(vi) इस एकांकी में किस प्रमुख सामाजिक समस्या को उठाया गया है?

(vii) दहेज की समस्या का समाधान लेखक ने राजेश्वरी के शब्दों में प्रस्तुत किया है। उस वाक्य को ढूँढ़कर लिखें।

(viii) इन मोतियों का मूल्य समझने वाला यहाँ कोई नहीं है। इस वाक्य को स्पष्ट करें।

2. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(i) 'आज के युग में पैसा ही नाक और मूँछ है।' इस वाक्य से जीवन लाल के चरित्र पर प्रकाश डालें।

(ii) प्रमोद और कमला में हुई बातचीत को अपने शब्दों में लिखें।

(iii) 'जो व्यवहार अपनी बेटी के लिए तुम दूसरों से चाहते हो वही दूसरे की बेटी को भी दो।' राजेश्वरी के इस कथन से माँ की ममता किस प्रकार झलकती है?

(iv) 'मेरी चोट का इलाज बेटी के ससुराल वालों ने दूसरी चोट से कर दिया है।' इस कथन का क्या आशय है?

(ग) रचना-बोध

(i) 'दहेज की समस्या स्त्रियों के लिए अभिशाप है और समाज के लिए कलंक' विषय पर निबंध लिखने के लिए कहें।

(ii) इस एकांकी का स्कूल के वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह पर अभिनय करें।

पाठ 24

'माँ तुलसी मेरे आँगन की'

शशि : (गाती हुई, गुनगुनाती हुई ....) 'माँ तुलसी मेरे आँगन की, माँ तुलसी मेरे आँगन की, माँ तुलसी ....'

सिंपी – अरे बहन जी, क्या बात, मैं कितनी देर से आवाज़ पर आवाज़ दिये जा रही हूँ, आप सुन ही नहीं रही हैं, गाये ही जा रही हैं। मैं तो घर का सब काम निपटा कर आयी हूँ कि दो घड़ी शशि जी से बातें ही कर लूँ और आप हैं कि "माँ तुलसी मेरे आगँन की" ही तान अलापे जा रही हैं, क्या आपने हाल ही में 'मैं तुलसी तेरी आँगन की' फिल्म देख ली है।

शशि : नहीं सिंपी जी, नहीं। स्नान के पश्चात् तुलसी माता को जल चढ़ाने से मुझे ऐसी शीतलता, ऐसी शांति और ऐसी पावनता का अनुभव हो रहा है जैसे माँ के आँचल की छाया हो, इसीलिए मेरे मुँह से बार-बार निकल रहा है 'माँ तुलसी मेरे आँगन की !' 'माँ तुलसी मेरे आँगन की !!'

सिंपी – तुलसी माता की तारीफ़ तो बहुत सुनी है, इसमें बहुत सारे गुण हैं, सभी कहते हैं, मैं भी सोच रही थी कि तुलसी माँ का पौधा हमारे घर के आँगन में हो। मँगवा लूँगी इनसे !!

शशि : मँगवाने की क्या ज़रूरत है, हमारे तुलसी वाले चबूतरे में बहुत से नन्हे-नन्हे पौधे खड़े हैं, ले जाओ अपने यहाँ और लगा लो। तुलसी को हमारे यहाँ कोई सामान्य पौधा नहीं माना गया है। इसके अमृत जैसे गुणों के कारण ही इसे देवी का रूप माना गया। इसीलिए भारतवर्ष के किसी भी कोने में चले जाइये —उत्तर, दक्षिण, पूर्व,पश्चिम, हर प्रदेश में किसी भी हिन्दू घर में इसका पौधा ज़रूर मिलता है। कहीं गमलों में, तो कहीं घर के आँगन में तुलसी-चौरा (तुलसी चबूतरा) स्थापित है। गृहणियाँ घर-परिवार की मंगल-

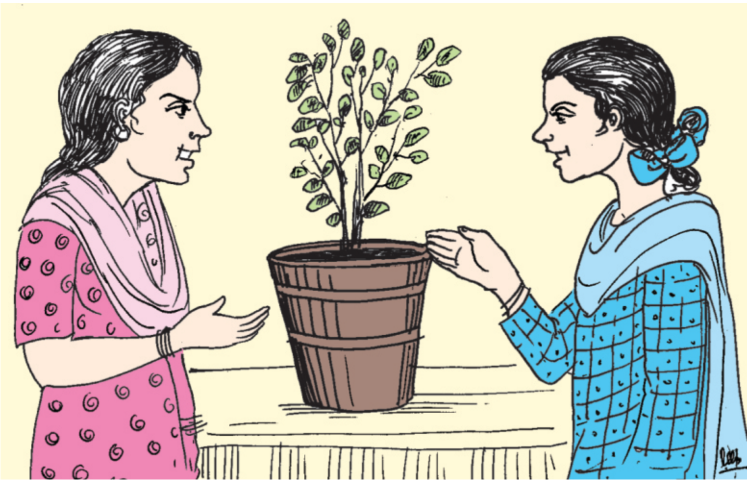

कामना के लिए प्रातः कालीन स्नान आदि से निपट कर जल चढ़ा कर इसकी पूजा करती हैं, संध्या समय सबसे पहले इसमें दीप जला कर 'तुलसी महारानी नमो नमः' आरती गीतों से इसकी पूजा-अर्चना करती हैं।

सिंपी - कहते हैं इसका एक नाम 'वृंदा' भी है !

शशि : हाँ ! हमारे पुराणों में तुलसी की मान्यता एक देवी के रूप में ही है, कहीं उसे हर-शिव- की पत्नी 'वृंदा' तथा कहीं जलंधर की पत्नी 'वृंदा' के रूप में मान्यता प्राप्त है। 'वृंदावन' में भी कभी तुलसी-दलों की अधिकता रही होगी।

सिंपी - उस दिन हमारे यहाँ एक वैद्यराज जी आये थे, वे बता रहे थे कि तुलसी का आयुर्वेद में बहुत ही महत्त्व है। आयुर्वेद में इसे 'औषधि' ही नहीं 'महौषधि' बताया गया है। मौसम बदलते समय फैलने वाले अनेक रोगों -सामान्य बुखार, जुकाम, खाँसी, मलेरिया, खून के अनेक दोष-विकार आदि न जाने कितने रोग इससे सहज ही में दूर हो जाते हैं।

शशि : रोग दूर ही नहीं होते सिंपी, तुलसी के प्रयोग से ये रोग पास भी नहीं आते - इसमें रोगों को रोकने की बड़ी भारी शक्ति है। शीत काल के अनेक रोग तो इसके पास फटक ही नहीं पाते हैं, इसका लगातार प्रयोग हमें रोगों से रक्षा की शक्ति प्रदान करता है।

सिंपी - तभी तो शायद भगवान के हर प्रसाद में, चरणामृत में भी तुलसी-पत्र रखने का विधान है।

शशि : सिंपी जी, हमारा देश और इसकी परंपरा बड़ी महान् है। हमने जिस चीज़ को, प्रकृति के तत्त्व को, मनुष्य के लिए उपयोगी पाया, उसे ही धर्म के विधान से जोड़ कर सामान्य जनता के उपयोग की वस्तु बना दिया। भक्ति की, धर्म की, चीज़ बन कर प्रकृति की वह वस्तु सबके लिए उपयोगी हो उठी। तुलसी-पत्रों को भी इसीलिए भगवान के प्रसाद में स्थान दिया गया और वास्तव में यह तुलसी यह तुलसी माता, मनुष्य के लिए अमृत के समान एक सुखकारी वरदान है।

सिंपी - मुझे तो इसकी सुगंधि भी बहुत ही प्यारी लगती है, इसीलिए मैं इसका चाय में प्रयोग करने की सोचती हूँ।

शशि : बहुत से लोग इसकी ही चाय नित्य एक-दो बार अवश्य पीते हैं और तुम जो इसकी सुगंधि की बात कर रही हो, उसका भी बड़ा महत्त्व है। तुलसी के पत्तों में तो सुगंधि है ही। इसके पौधे, हरे-भरे पौधों के कई-कई झुंड, एक विशेष प्रकार की सुगंधि वातावरण में फैलाते हैं जिससे रोग उत्पन्न करने वाले मच्छर और अन्य कीटाणु दूर भाग जाते हैं। इससे चारों ओर एक अच्छा वातावरण घर को मिल जाता है। इसीलिए हर घर के भीतर ही नहीं बाहर भी तुलसी का पौधा रखने का विधान पाया जाता है। बहुत से घरों में प्रवेश-द्वार के नज़दीक ही तुलसी का पौधा होता है।

सिंपी - मैंने तो यह भी सुना है कि साँप जैसा ज़हरीला कीड़ा भी इसकी गंध नहीं ले सकता, दूर भाग जाता है।

शशि : बिल्कुल ठीक बात है। अब तो वैज्ञानिक दृष्टि से तुलसी के पौधे पर देश विदेश में खूब खोज हुई है और प्रयोगों के आधार पर यह पुष्ट हो गया है कि आयुर्वेद में तुलसी की जिन गुणों के लिए प्रशंसा की गयी है, वे सब गुण इसमें प्राप्त होते हैं।

सिंपी - अच्छा दीदी, एक बात और बताओ, मैंने बहुत से घरों में देखा है कि तुलसी का विवाह किया जाता है, यह क्यों किया जाता है?

शशि : मैंने तुम्हें बताया न, हमारे यहाँ हर अच्छी चीज़ और बात को समझने के लिए धर्म, धार्मिक रीति-रिवाज़ से जोड़ दिया गया है। जब बहुत अधिक पाला पड़ता है, शीत-ऋतु में सभी कोमल वनस्पतियाँ पाले के कारण मर जाती हैं या बिल्कुल ठूँठ हो जाती हैं, उस समय तुलसी जैसे पौधे का जो मनुष्य के लिए अमृत के समान गुणकारी है, बचाया जाना बहुत ज़रूरी है। इसलिए भयंकर शीत आने से पहले ही कार्तिक में उसका विवाह कर उसे चूनर (या कोई भी सवा गज़ का कपड़ा) ओढ़ा देने का विधान किया गया।

सिंपी - वाह दीदी ! सचमुच आज तो समय बहुत ही अच्छा बीता, हमने पास-पड़ोस की, गली-मुहल्ले की बेकार की बातें न कर आज बहुत ही अच्छी बातें की ! बस एक ओर बात बता दो, मैंने किसी के यहाँ तुलसी कुछ कम चौड़े पत्तों वाली और कुछ काले से पत्तों वाली देखी है तो कुछ के यहाँ हरे-हरे खूब चौड़े-से पत्ते होते हैं। यह क्या बात है?

शशि : हाँ, तुलसी की चार-पाँच किस्में पूरे देश में पायी जाती हैं, पर इनमें दो ही ज्यादातर देखने को मिलती हैं - सामान्य तुलसी और श्यामा तुलसी या काली तुलसी। श्यामा तुलसी के पत्ते कुछ थोड़े छोटे होते हैं, सामान्य तुलसी के कुछ थोड़े बड़े, सामान्य तुलसी के पत्तों का रंग हरा होता है तो कृष्ण-तुलसी या श्यामा का रंग कुछ श्याम। दोनों का रंग भले ही अलग-अलग हो, गुण लगभग एक जैसे हैं, आयुर्वेद में काली तुलसी का महत्त्व थोड़ा ज्यादा बताया गया है क्योंकि खाँसी को रोकने में यह ज्यादा गुणकारी है। सौ बातों की एक बात यह कि जो भी मिल जाये, तुलसी का वही पौधा घर में लगा लें। बस, तुलसी महारानी घर में अवश्य होनी चाहिए।

सिंपी - सच बात है बहन, तुलसी तो वास्तव में हमारी माता के समान है।

शशि : तभी तो मैं गा रही थी 'माँ तुलसी मेरे आँगन की'

(सिंपी भी उसी के स्वर में स्वर मिला कर गा उठती है) ''माँ तुलसी मेरे आँगन की।''

अभ्यास

(क) भाषा बोध

1. शब्दार्थ

अलापना = ऊँचे स्वर में गाना

पश्चात्	=	बाद में
शीतलता	=	ठंडक
पावनता	=	पवित्रता
हर	=	शिव
पटरानी	=	मुख्य पत्नी
सहज	=	आसानी से
पाला	=	सर्दी
भयंकर	=	डरावनी (तेज़)
शीत	=	सर्दी
श्यामा	=	काली
अर्चना	=	पूजा करना
रक्षा	=	बचाव
प्रकृति	=	कुदरत
कीटाणु	=	जरम

2. निम्नलिखित शब्दों/मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :–

पश्चात् ____

शीतलता ____

पावनता ____

अमृत ____

पाला पड़ना ____

ठूँठ हो जाना ____

स्थापित ____

3. पावनता एक भाव वाचक संज्ञा है – जिसका मूल शब्द है – पावन
नीचे लिखे शब्दों की भाववाचक संज्ञाएँ लिखें :–

शीतल	=	________	प्रभु	=	________
माता	=	________	व्यक्ति	=	________
बुरा	=	________	भला	=	________

4. वैज्ञानिक एक विशेषण शब्द है जिसका मूल शब्द है – विज्ञान
नीचे लिखे शब्दों के विशेषण बनायें :–

श्याम	=	________	रंग	=	________
देश	=	________	धर्म	=	________
प्रकृति	=	________	प्रात:काल	=	________

5. **साँप का स्त्रीलिंग साँपिन है**

नीचे लिखे शब्दों के स्त्रीलिंग रूप लिखें :–

माली	=	________	तेली	=	________
नाग	=	________	बूढ़ा	=	________
बेटा	=	________	मोर	=	________
नौकर	=	________			

6. **नीचे लिखे शब्दों को अलग-अलग करें (संधि विच्छेद) :–**

चरणामृत	=	________	महौषधि	=	________
नीरोग	=	________	महेन्द्र	=	________
हिमालय	=	________			

7. **प्रयोगात्मक व्याकरण**

(क) (i) महा+ औषध = महौषध

आ + औ = औ

(ii) वन + ओषधि = वनौषधि

अ + ओ = औ

अतएव अ, आ के बाद 'ओ' या 'औ' आ जाये जो दोनों के स्थान पर 'औ' हो जाता है। **यह वृद्धि संधि का उदाहरण है।**

अन्य उदाहरण :- महा + ओजस्वी = महौजस्वी

परम + औदार्य = परमौदार्य

(ख) (i) एक + एक = एकैक

अ + ए = ऐ

(ii) सदा + एव = सदैव

आ + ए = ऐ

(iii) मत + ऐक्य = मतैक्य

अ + ऐ = ऐ

अतएव अ, आ के बाद ए/ऐ आ जायें तो दोनों के स्थान पर 'ऐ' हो जाता है। **यह वृद्धि संधि का उदाहरण है।**

(ख) विचार बोध

1. **रिक्त स्थानों में उपयुक्त शब्द भरें :–**

(i) सिंपी की आवाज़ शशि को सुनाई नहीं दी क्योंकि वह ---- थी। (काम में लीन, पढ़ रही, गुनगुना रही)

(ii) तुलसी को जल चढ़ाने से -------- मिलती है। (तृप्ति, संतुष्टि, शांति)

(iii) तुलसी को देवी का रूप माना गया क्योंकि वह ------ है। (शिव की पत्नी, पूजा जाती, उत्तम, हरा-भरा पौधा, अमृत जैसे गुणों वाली)

(iv) तुलसी मनुष्य के लिए अमृत के समान ------ है। (सुखकारी वरदान, औषधि, गुणकारी)

(v) तुलसी का विवाह ------ मास में होता है। (वैशाख, कार्तिक माघ)

2. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :–

(i) शशि 'माँ तुलसी मेरे आँगन की' क्यों गुनगुना रही थी?

(ii) तुलसी को देवी का रूप क्यों माना गया है?

(iii) तुलसी की पूजा कैसे करते हैं ?

(iv) तुलसी मुख्यतया कितने प्रकार की होती है?

(v) तुलसी का एक नाम वृन्दा क्यों है?

3. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :–

(i) आयुर्वेद में तुलसी का क्या महत्त्व है?

(ii) चरणामृत और प्रसाद में तुलसी पत्र क्यों डालते हैं?

(iii) तुलसी की सुगंधि के क्या लाभ हैं?

(iv) 'तुलसी का विवाह' का वास्तविक तात्पर्य क्या है?

(v) 'श्यामा तुलसी' और 'सामान्य तुलसी' का अंतर स्पष्ट करें।

(vi) क्या 'माँ तुलसी, मेरे आँगन की' शीर्षक उपयुक्त है?

(vii) तुलसी के गुण लिखें।

(viii) तुलसी का पौधा प्रवेश द्वार के निकट क्यों रखा जाता है?

(ग) रचना-बोध

'तुलसी के महत्त्व' पर मंच पर भाषण दें।

संकेत :– धार्मिक, आयुर्वेदीय, पर्यावरण।

करो:-

तुलसी का पौधा गमले में लगायें और उसकी देखभाल करें।

पाठ-25

हम पंछी उन्मुक्त गगन के

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पायेंगे,
कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जायेंगे।

हम बहता जल पीने वाले
मर जायेंगे भूखे-प्यासे,
कहीं भली है कटुक निबौरी
कनक-कटौरी की मैदा से।

स्वर्ण-शृंखला के बंधन में
अपनी गति उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले।

ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नीले नभ की सीमा पाने,
लाल किरण-सी चोंच खोल
चुगते तारक-अनार के दाने।

होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा-होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी।

नीड़ न दो, चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,
लेकिन पंख दिए हैं तो
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

1 **शब्दार्थ**

पिंजरबद्ध	=	पिंजरे में बंद	उन्मुक्त	=	बंधन रहित, आज़ाद
कनक-तीलियाँ	=	सोने की तारें	पुलकित	=	प्रसन्न, हृष्ट
कटुक निबौरी	=	कड़वी नीम			
फुनगी	=	शाखा के अंत की कोमल पत्तियाँ			
क्षितिज	=	वह स्थान जहाँ धरती और आसमान मिले हुए दिखाई देते हैं			
होड़ा-होड़ी	=	प्रतिस्पर्धा, दूसरे से आगे बढ़ जाने की चाह			

2 **पर्यायवाची शब्द लिखें:-**

पंछी = __________ , __________

गगन = __________ , __________

कनक = __________ , __________

पंख = __________ , __________

तरु = __________ , __________

नीड़ = __________ , __________

3. **स्वर्ण-शृंखला, कनक-कटोरी, लाल किरण-सी में स्वर्ण, कनक और लाल शब्द गुणवाचक विशेषण हैं। इसी प्रकार तीन उदाहरण ढूँढ़ कर लिखें।**

__________ __________ __________

4. **भूखे-प्यासे में द्वंद्व समास है। इन दो शब्दों के बीच लगे चिह्न को संयोजक चिह्न- कहते हैं। इसी चिह्न से 'और' का संकेत मिलता है। इसी प्रकार के तीन उदाहरण और लिखें।**

__________ __________ __________

5. **संधिविच्छेद करें :-**

उन्मुक्त = __________

उन्नायक = __________

(ख) विचार-बोध

1. **इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें:-**

(i) इस कविता में पक्षी क्या चाहते हैं?

(ii) पक्षी अपनी क्या-क्या इच्छाएँ पूरी करना चाहते हैं?

(iii) पक्षी कौन-कौन सी सुख-सुविधाएँ पाकर भी पिंजरे में नहीं रहना चाहते?

(iv) पक्षियों के लिए पंखों की सार्थकता किस बात में है?

2. **इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें:-**

(i) सप्रसंग व्याख्या करें:-
नीड़ न दो............विघ्न न डालो।

(ii) इस कविता में पक्षियों की कौन-कौन सी स्वभावगत विशेषताएँ बताई गई हैं?

(iii) पक्षियों को पिंजरे में बंद करने से उनकी आज़ादी का हनन होता है। क्या आपको भी आज़ादी पसंद है? किस-किस क्षेत्र में आप आज़ाद होकर जीना चाहेंगे? अपने विचार लिखें।

(iv) यदि वातावरण में पक्षी न हों तो आपको कैसा लगेगा? इस विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन करें।

पाठ 26

महाराज अग्रसेन – समाज प्रवर्तक

भारतवर्ष पुरातन संस्कृतियों और परंपराओं की अमूल्य धरोहर है। यहाँ राजवंश, समाजवाद और लोकतंत्र का एक अनूठा समन्वय है। मानव का प्रकृति, प्रकृति के हर जीव के प्रति दायित्व एवं संबंध का भाव भारत की संस्कृतियों की विशालता का परिचय है। यही इसे समस्त विश्व की सभ्यताओं में आगे रखता है।

ऐसी ही संस्कृतियों के निर्माताओं में अग्रोहा के महाराजा अग्रसेन का नाम अग्रणी है। ये अहिंसा, समाजवाद, मूल्यों पर आधारित जीवन – शैली, साहस, उद्‌यम, परोपकार इत्यादि के रूप में प्रख्यात थे। उनके सिद्‌धांतों का पालन करके आज भी उनके वंशज अग्रवाल समाज के रूप में पूरे विश्व में आदर और विश्वास के साथ प्रतिष्ठित हैं।

महाराज अग्रसेन का जन्म प्रतापपुर के सूर्यवंशी राजा वल्लभसेन और महारानी वैदर्भी के घर 3155 वर्ष ईसा पूर्व हुआ। उनके छोटे भाई का नाम शौर्यसेन था। युवावस्था से ही वे पराक्रमी और युद्‌ध–कौशल में निपुण थे। महाभारत युद्‌ध में अपने पिता के साथ युवा अग्रसेन ने पाण्डवों के पक्ष में युद्‌ध किया। समरांगण में अपने पिता को खोने के पश्चात भी कुमार अग्रसेन का युद्‌ध कौशल बधाई और प्रशंसा का पात्र बना रहा।

उनका विवाह मणिपुर के नागराज महिधर जी की राजकुमारी माधवी से हुआ। राजकुमारी माधवी सत्यव्रत में तत्पर, धर्मपूर्ण आचरण करने वाली, पुण्य पथगामिनी थीं। जब राजकुमारी के पिता ने उनका स्वयंवर रचा, राजकुमारी ने महाराज अग्रसेन का पति–रूप में वरण किया।

महाराज अग्रसेन ने आग्रेय के रूप में एक वैभवशाली और समृद्‌ध राज्य स्थापित किया। आज हम उसे हिसार (हरियाणा) के समीप अग्रोहा नाम से जानते हैं। महाराज अग्रसेन के राज्य में सभी वर्णों के नर–नारियों , बालकों और पालकों का बराबर सम्मान था। सभी को समान अधिकार प्राप्त थे। वहाँ रहने वाले सदाचार परायण, स्वावलंबी, बुद्‌धिमान, युद्‌ध कला में प्रवीण, शूरवीर, दान–धर्मादि में समर्थ और साधन–संपन्न थे।

आग्रेय में खेत–खलियान अधिकाधिक अन्न उत्पन्न करते थे। पशु हृष्ट–पुष्ट थे और अधिक मात्रा में दूध देते थे। उनके राज्य में सभी सुख और आनंद से जीवन व्यतीत करते थे। महाराज प्रजा परायण, कर्तव्यनिष्ठ और पुरुषार्थ करने के मतावलंबी थे। जब एक बार एक वर्ष वहाँ बादल नहीं बरसे तो उन्होंने विचार किया कि केवल वर्षा पर निर्भर रहकर राज्य खुशहाल नहीं रह सकता। उन्होंने महारानी माधवी के सुझाव पर पूरे राज्य में नदीं, नहर आदि का यथोचित प्रबंध किया, जिसके फलस्वरूप वहाँ जल की कोई कमी न रही।

एक बार महर्षि गर्ग ने वंशकर नामक यज्ञ करने के लिए 18 गणाधिपतियों के साथ 18 यज्ञ करने के लिए इन्हें प्रेरित किया। वंशकर यज्ञ को जिन ऋषियों ने करवाया, उन्हीं के नाम पर उनके वंशज 18 गोत्रों से जाने जाते हैं। उन गोत्रों के नाम हैं – गर्ग, गोयल, कुच्छल, मंगल, जिंदल, बिंदल, धारण, सिंघल, मित्तल, गोयल, ऐरण, तिंगल, नाँगल, बंसल, कँसल, तायल, मधुकल और भंदल। उस समय यज्ञ में बलि की प्रथा थी। यज्ञ मे पशुबलि ने उन्हें व्याकुल कर दिया। महाराज ने यज्ञ में पशुबलि की परंपरा पर रोक लगाई तथा अहिंसा का मार्ग प्रशस्त किया। अंतिम यज्ञ पशुबलि न होने से अधूरा रहने के कारण अग्रवाल समाज मे साढ़े सत्रह गोत्र प्रचलित हैं। अत: इन्होनें अहिंसा के पथ पर चलने के लिए वर्ण–व्यवसाय और प्राचीन धार्मिक मान्यताओं को भी परिवर्तित किया।

महाराजा अग्रसेन ने यज्ञ मे बलि प्रथा का विरोध कर क्षत्रिय वर्ण का त्यागकर वैश्य वर्ण को स्वीकार किया। महाराज का वैश्य वर्ण को स्वीकार करना बहुत से राजाओं को स्वीकार नहीं हुआ। महाराज के बढ़ते हुए वैभव ने उनकी कुंठा को और भी बढ़ा दिया। उन्होंने एकत्रित होकर उनके राज्य पर हमला कर दिया। उनके पुत्र विभुसेन ने समरांगण मे सबको पराजित करके बंदी बना लिया। महाराज बड़े उदार और क्षमावान थे। सभा में जब राजाओं को महाराज ने लज्जित होते देखा, तब उन्होंने सब का क्षमा और अभय प्रदान कर सम्मान सहित स्वतंत्र कर दिया।

एक बार जब महाराज अपने राज्य की व्यवस्था और प्रजा की कुशलता जानने के लिए कारागार पहुँचे। वहाँ एक ब्राह्मण को देखकर स्तब्ध रह गए। वह ब्राह्मण चोरी के अपराध में पकड़ा गया था। पूछने पर उसने बताया कि गृहस्थी का दायित्व न निभा पाने के कारण उसे यह पाप कर्म करना पड़ा। महाराज का मन करुणा से भर गया। उनके मन को समाज का एक ऐसा रूप दिखा, जहाँ विवशता में इंसान जघन्य और हीन कर्म करने पर विवश हो सकता है आत्म सम्मान में व्यक्ति की गुहार नहीं लगा पाता है और अपराध की राह पर चल देता है ।

अग्रसेन समता और समाजवाद के पथ–प्रदर्शक थे। उदारता,दूरदर्शिता और मानवता के अग्रसेन पर्याय थे। उन्होंने अपने राज्य मे एक ईंट और सिक्के का सिद्धांत परंपरा के रूप में स्थापित किया। उन्होंने घोषणा करवाई कि उनके राज्य में आकर बसने वालों को समाज का हर व्यक्ति एक सिक्का और एक ईंट उपहार देगा। इस तरह लेने वाले का स्वाभिमान बना रहेगा और देने वाले को देने का अभिमान भी नहीं होगा। यहाँ पर उन्होंने समाजवाद को एक नयी दिशा दी।

जहाँ अग्रसेन रूढ़ियों के विरोधी थे, वहीं उनका सनातन परंपराओं से भी अटूट विश्वास था। महालक्ष्मी की आराधना करके उन्होंने अपने राज्य में महालक्ष्मी के वास का वरदान प्राप्त किया।

महाराज के सम्मान में भारत एवं सभी राज्यों ने समय–समय राज्य और नगर मार्गों एवं चौराहों का नाम उनके नाम पर रखा है। उनके नाम पर देश – विदेश में डाक–टिकट जारी हुए हैं। वर्ष 1994 में भारत सरकार द्वारा दक्षिण कोरिया से ख़रीदे गए विशेष तेल वाहक पोत का नाम एवं वर्ष 221 में हरियाणा सरकार

ने हिसार के एयरपोर्ट का नाम भी महाराजा अग्रसेन के नाम रखा। इससे उनके विराट व्यक्तित्व का स्वत: ही बोध होता है।

महाराजा अग्रसेन के जीवन से हमें सत्य, धैर्य, मनोनिग्रह, पवित्रता, दया, मधुर वाणी, अहिंसा, पुरुषार्थ और मैत्री इत्यादि के गुणों की सीख एवं प्रेरणा मिलती है।

अभ्यास

(क) भाषा बोध :-

1. शब्दार्थ

धरोहर	=	अमानत	**अनूठा**	=	अद्भुत, विलक्षण
दायित्व	=	ज़िम्मेवारी	**समन्वय**	=	संयोग, मेल
प्रतिष्ठित	=	सम्मानित, स्थापित	**मतावलंबी**	=	मत का अनुयायी
पुरुषार्थ	=	पौरूष, मनुष्योचित बल	**स्वावलंबी**	=	आत्मनिर्भर
परायण	=	निष्ठा, अति आसक्त	**कुंठा**	=	निराशाजन्य अतृप्त भावना
प्रशस्त	=	प्रशंसा योग्य	**जघन्य**	=	अति निंदनीय व बुरा
स्तब्ध	=	हैरान	**मनोनिग्रह**	=	मन को वश में रखना

(ख) विचार बोध :-

1. रिक्त स्थान भरो :-

(i) महाराज अग्रसेन .... वंशी थे।

(ii) .... महाराज के छोटे भाई थे।

(iii) अपना राज्य में निरंतर जल धारा के समाधान हेतु, महाराज अग्रसेन ने .... का प्रबंध किया।

(iv) महाराज अग्रसेन का जन्म .... वर्ष ईसा पूर्व हुआ।

(v) महाराज .... और महारानी .... के घर राजकुमार अग्रसेन का जन्म हुआ।

(vi) महर्षि गर्ग के कहने पर महाराज ने .... यज्ञ किया।

2. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें:

(i) महाराज अग्रसेन ने किस राज्य की स्थापना की? आज हम उसे किस नाम से जानते हैं ?

(ii) अग्रवाल समाज किनके वंशज हैं ?

(iii) विश्व के प्रथम समाजवाद की स्थापना किस सिद्धांत के माध्यम से की गई ?

(iv) महारानी माधवी किस नगर की राजकुमारी थी ?

(v) राजकुमार अग्रसेन ने महाभारत के युद्ध में किस पक्ष का साथ दिया ?

(vi) महाराज अग्रसेन को नहरों के निर्माण का किसने सुझाव दिया ?

(vii) किसके कहने पर महाराज अग्रसेन ने वंशकर यज्ञ किया ?

(viii) अग्रवाल समाज के गोत्र किनके नाम पर रखे गए ?

3. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :

(i) महाराज अग्रसेन ने एक ईंट और एक सिक्के का आरंभ क्यों किया ?

(ii) आग्रेय राज्य का अपने शब्दों में वर्णन करो।

(iii) महाराज अग्रसेन ने वैश्य वर्ण क्यों स्वीकार किया ?

(iv) महाराज अग्रसेन समत्व और समाजवाद के पथ–प्रदर्शक थे। उदाहरण देकर समझाएँ।

(v) किस घटना से महाराज अग्रसेन के क्षमाशील होने का पता चलता है ?

(vi) महाराज अग्रसेन ने नहरों का निर्माण क्यों करवाया ?

(vii) महाराज अग्रसेन जी की आज के युग में प्रासंगिकता पर प्रकाश डालें।

(ग) आत्म बोध

महाराज अग्रसेन जी के जीवन को और अधिक जानने के लिए स्कूल/ज़िले के पुस्तकालय से उनमें संबंन्धित पुस्तक लेकर पढ़ें।